Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री विजयदेवसूर संघ ज्ञान भंडार. पायधुनी मुंबई नं. ३.

वीरसं० २४७० सने १९४४

विक्रमसं० २००० प्रत १५००

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अर्हम् ॥

श्रीमद्गणधरवरसुधर्मस्वामिप्रणीता ।

॥ व्याख्याप्रज्ञप्तिः ॥

॥ श्रीभगवतीसूत्रं भाग-४. ॥

(मूल सूत्र अनें तेना गुजराती भाषान्तर सहित)

(शतक ९.) उद्देशक ६.

(त्रीजा भागनुं अनुसंधान चालु)

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरूहेइ दुरूहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सकोरंटजाव धरिज्जमाणेणं महया भडचडगर-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जावपरिक्खित्ते जेणेव खत्तियकुंडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ तुरए निगिण्हित्ता रहं ठवेइ रहं ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेत्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्मताओ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, सेवि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं जाया! कयत्थेसि णं तुमं जाया! कयपुन्नेसि णं तुमं जाया! कयलक्खणेसि णं तुमं जाया! जन्नं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते सेवि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए,

ज्यारे श्रमण भगवंत महावीरे जमालिने ए प्रमाणे कह्यु त्यारे ते प्रसन्न अने संतुष्ट थइ श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत् नमस्कार करीने चारघंटावाळा अश्वरथ उपर चढे छे, चढीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने बहुशालक चैत्यथी नीकळे छे. नीकळीने माथे धराता यावत् कोरंटपुष्पनी मालावाळा छत्रसहित, मोटा सुभोभटोना समूहथी वींटायलो ते जमालि ज्यां क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगर छे त्यां आवे छे. आवीने क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरनी मध्यभागमां थइने जे स्थळे पोतानुं घर छे अने ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने घोडाओने रोकीने रथने उभो राखे छे. उभो राखीने रथथी नीचे उतरे छे. उतरीने ज्यां अंदरनी उपस्थानशाला छे, ज्यां माता-पिता (बेठा) छे त्यां आवे छे, आवीने माता-पिताने जय अने विज-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यथी वधावे छे. वधावीने ते जमालिए आ प्रमाणे कह्युं–हे माता पिता! ए प्रमाणे में श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्म सांभळ्यो छे, ते धर्म मने इष्ट छे, अत्यन्त इष्ट छे, अने तेमां मारी अभिरुचि थइ छे. त्यारपछी ते जमालि कुमारने तेना माता पिताए आ प्रमाणे कह्युं–'हे पुत्र! तुं धन्य छे, हे पुत्र! तुं कृतार्थ छे, हे पुत्र! तुं कृतपुण्य छे अने हे पुत्र! तुं कृतलक्षण छे के जे ते श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळ्यो छे, अने ते धर्म तने प्रिय छे, अत्यन्त प्रिय छे अने तेमां तारी अभिरुचि थई छे.'

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्चंपि एवं वयासी–एवं खलु मए अम्मताओ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते जाव अभिरुइए, तए णं अहं अम्मताओ! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मजरामरणाणं तं इच्छामि णं अम्मताओ! तुज्झेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए।

पछी ते जामलि क्षत्रियकुमारे बीजीवार पण पोताना माता–पिताने आ प्रमाणे कह्युं के–'हे माता–पिता! ए प्रमाणे में श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्म सांभळ्यो छे, यावत् तेमां मारी अभिरुचि थइ छे. तेथी हे माता–पिता! हुं संसारना भयथी उद्विग्न थयो छुं, जन्म जरा अने मरणथी भय पम्यो छुं, तेथी हे माता–पिता! तमारी आज्ञाथी हुं श्रमण भगवंत महावीरनी पासे दीक्षा लेइने, गृहवासनो त्याग करी, अनगारिकपणाने ग्रहण करवा इच्छुं छुं.

तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुन्नं अमणामं असुयपुव्वं गिरं सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलंतविलीणगत्ता सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया दीणविमणवयणा

For Private and Personal Use Only

करयलमलियव्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायन्नसुन्ननिच्छाया गयसिरीया पसिढिलभूसणपडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा मुच्छावसणट्ठचेतगुरुई सुकुमालविकिन्नकेसहत्था परसुणियत्तव्व चंपगलया निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वंगेहिं संनिवडिया, तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससंभमोयत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलविमलजलधारापरिसिंचमाणनिव्ववियगायलट्ठी उक्खेवयतालियंटवीयणगजणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी–तुमंसि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविये हिययानंदिजणणे उंबरपुप्फमिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए?, तं नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पओगं, तं अच्छाहि ताव जाया! जाव ताव अम्हे जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवये वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जंमि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि।

त्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारनी माता अनिष्ट, अकांत, अप्रिय, अमनोज्ञ, मनने न गमे तेवी अने पूर्वे नहीं सांभळेली एवी वाणीने सांभळी अने अवधारीने रोमकूपथी झरता परसेवाथी भीना शरीरवाळी थइ, शोकना भारथी तेनां अंगो अंग कंपवा लाग्यां, ते निस्तेज थई, तेनुं मुख दीन अने शोकातुर थयुं, करतलवडे चोळायेली कमलमालानी पेठे तेनुं शरीर तत्काळ ग्लान अने दुर्बल

थयुं. ते लावण्यशून्य, प्रभारहित अने शोभाविनानि थइ गइ. तेना आभूषणो ढीलां थइ गयां, अने तेथी तेना निर्मल वलयो पडी गयां अने भांगीने चूर्ण थइ गया. तेनुं उत्तरीय वस्त्र शरीर उपरथी सरी गयुं, अने मूर्छावडे तेनुं चैतन्य नष्ट थयुं होवाथी ते भारे शरीरवाळी थइ गई. तेनो सुकुमाल केशपाश विखराइ गयो. कुहाडीना घाथी छेदाएली चंपकलतानी पेठे अने उत्सव पूरो थता इन्द्रध्वजदंडनी जेम तेनां संधिबंधनो शिथिल थइ गयां, अने ते फरसबंधी उपर सर्व अंगोवडे 'धस्' दइने नीचे पडी गइ. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माताना शरीरने (दासीवडे) व्याकुलचित्ते त्वराथी ढळाता सोनाना कलशनामुखथीनीकळेली शीतल अने निर्मल जलधाराना सिंचनवडे स्वस्थ कर्युं, अने ते उत्क्षेपक (वांसना बनेला). तालवृंत (ताडना पांदडाना बनेला) पंखा अने वींजणाना जलबिन्दुसहित पवनवडे अंतःपुरना माणसोथी आश्वासनने प्राप्त थइ. रोती, आक्रंदन करती, शोक करती अने विलाप करती ते जमालि क्षत्रियकुमरनी माता एप्रमाणे कहेवा लागी–'हे जात! तुं अमारे इष्ट, कांत, प्रिय, मनोज्ञ, मन गमतो. आधारभूत, विश्वासपात्र, संमत, बहुमत, अनुमत, आभरणनी पेटी जेवो, रत्नस्वरूप, रत्नना जेवो, जीवितना उत्सव समान अने हृदयने आनंदजनक एमज पुत्र छो. वळी उंबरानापुष्पनी पेठे तारा नामनुं श्रवण पण दुर्लभ छे, तो तारुं दर्शन दुर्लभ होय एमां शुं कहेवुं? माटे हे पुत्र! खरेखर अमे तारो एक क्षण पण वियोग इच्छता नथी. तेथी हे पुत्र! ज्यां सुधी अमे जीवीए छीए त्यांसुधी तुं रहे. अने अमे कालगत थया पछी वृद्धावस्थामां कुलवंशतन्तुनी वृद्धि करीने निरपेक्ष एवो तुं श्रमण भगवंत महावीरनी पासे दीक्षा ग्रहण करी गृहवासनो त्याग करी अनगारिकपणाने स्वीकारजे.'

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी–तहावि णं तं अम्मताओ! जण्णं तुज्झे मम

एवं वदह तुमंसि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते तं चेव जाव पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सए भवे अणेगजाइजरामरणरोगसारीरमाणसपकामदुक्खवेयणवसणसतोवद्दवाभिभूए अधुए अणितिए असासए संझब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे सुविणगदंसणोवमे विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडणपडणविद्धंसणधम्मे पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ अम्मताओ! के पुव्विं गमणयाए?, के पच्छा गमणयाए?, तं इच्छामि णं अम्मताओ! तुज्झेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए।

त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कह्युं के-"हे माता-पिता! हमणां मने जे तमे ए प्रमाणे कह्युं के-हे पुत्र! तुं अमारे इष्ट तथा कांत एक पुत्र छो-इत्यादि यावत् अमारा कालगत थया पछी तुं प्रव्रज्या लेजे." पण हे माता-पिता! ए प्रमाणे खरेखर आ मनुष्यभव अनेक जन्म, जरा, मरण अने रोगरूप शारीर अने मानसिक दुःखोनी अत्यन्त वेदनाथी अने सेंकडो व्यसनोथी पीडित, अध्रुव, अनित्य, अने अशाश्वत छे, तेम संध्याना रंग जेवो, पाणीना परपोटा जेवो, डाभनी अणी उपर रहेला जलबिन्दु जेवो, स्वप्नदर्शनना समान, विजळीनी पेठे चंचळ अने अनित्य छे. सडवुं पडवुं अने नाश पामवो ए तेनो धर्म छे. पहेलां के पछी तेनो अवश्य त्याग करवानो छे; हे माता-पिता! ते कोण जाणे छे के-कोण पूर्वे जशे, अने कोण पछी जशे? माटे हे माता-पिता! हुं तमारी अनुमतिथी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवाने इच्छुं छुं.

तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-इमं च ते जाया! सरीरगं पविसिट्ठरू-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वलक्खणवंजणगुणोववेयं उत्तमबलवीरियसत्तजुत्तं विण्णाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमुस्सियं अभिजायमहक्खमं विविहवाहिरोगरहियं निरुवहयउदत्तलट्ठं पंचिंदियपडुपढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं तं अणुहोहि ताव जाव जाया! नियगसरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूयनियगसरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवये वड्डियकुलवंसतंतुकज्जंमि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि,तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-तहावि णं तं अम्मताओ! जन्नं तुज्झे ममं एवं वदह-इमं च णं ते जाया! सरीरगं तं चेव जाव पव्वइहिसि. एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं विविहवाहिसयसंनिकेतं अट्ठियकट्ठुट्ठियं छिराण्हारुजालओणद्धसंपिणद्धं मट्टियभंडं व दुब्बलं असुइसंकिलिट्ठं अणिट्ठवियसव्वकालसंठप्पियं जराकुणिमजज्जरघरं व सडणपडणविद्धंसणधम्मं पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वं भविस्सइ, से केस णं जाणति? अम्मताओ! के पुव्विं तं चेव जाव पव्वइत्तए।

त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता पिताए आ प्रमाणे कह्युं के-"हे पुत्र! आ तारुं शरीर उत्तम रूप, लक्षण, व्यंजन (मस, तल वगेरे) अने गुणोथी युक्त छे, उत्तम बल, वीर्य अने सत्त्वसहित छे, विज्ञानमां विचक्षण छे, सौभाग्य गुणथी उन्नत छे, कुलीन छे, अत्यन्त समर्थ छे, अनेक प्रकारना व्याधि अने रोगथी रहित छे, निरुपहत. उदात्त, अने मनोहर छे, पटु (चतुर) एवी पांच इन्द्रियोथी युक्त अने उगती युवावस्थाने प्राप्त थयेलुं छे, अने ए शिवाय बीजा अनेक उत्तम गुणोथी भरपूर छे. माटे हे पुत्र!

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्यां सुधी तारा पोताना शरीरमां रूप, सौभाग्य तथा यौवनादि गुणो छे त्यांसुधी तेनो तुं अनुभव कर, अने अनुभव करी अमो कालगत थया पछी वृद्धावस्थामां कुलवंशरूप तन्तुनी वृद्धि करीने निरपेक्ष थइो तुं श्रमण भगवान् महावीर पासे दीक्षा लइने गृहवासनो त्याग करी अनगारिकपणाने स्वीकारजे. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने ए प्रमणे कह्युं के-'हे माता-पिता! ते बरोबर छे, पण जे तमे मने ए प्रमाणे कह्युं के-'हे पुत्र! आ तरुं शरीर (उत्तमरूप, लक्षण व्यंजन अने गुणोथी युक्त छे) इत्यादि यावत् (अमारा कालगत थया पछी) तुं दीक्षा लेजे.' पण ए रीते तो हे माता-पिता! खरेखर आ मनुष्यनुं शरीर दुःखनुं घर छे, अनेक प्रकारना सेंकडो व्याधिओनुं स्थान छे, अस्थिरूप लाकडानुं बनेलुं छे, नाडीओ अने स्नायुना समूहथी अत्यन्त विंटाएल छे, माटीना वासणनी पेठे दूर्बल छे, अशुचिथी भरपूर छे, जेनुं शुश्रूषा कार्य हमेशां चालु छे. जीर्ण मृतक अने जीर्ण घरनी पेठे संडवुं, पडवुं अने नाश पामवो-ए तेनो सहज धर्मो छे. वळी ए शरीर पहेलां के पछी अवश्य छोडवानुं छे. तो हे माता-पिता! ते कोण जाणे छे के कोण पहेलां (जशे अने कोण पछी जशे. ?) इत्यादि.

तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-इमाओ य ते जाया! विपुलकुलबालियाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाओ सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणिएल्लियाओ कलाकुसलसव्वकाललालियसुहोचियाओ मद्दवगुणजुत्तनिउणविणओवयारपंडियवियक्खणाओ मंजुलमियमहुरभणियविहसियविप्पेक्खियगतिविसालचिट्ठियविसारदाओ अविकलकुलसीलसालिणीओ विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धणप्पग (ब्भु) ब्भवप्पभाविणीओ मणाणुकूलहियइच्छियाओ अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ निच्चं भावाणुत्त-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसव्वंगसुंदरीओ भारियाओ, तं भुंजाहि ताव जाया! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसयविगयवोच्छिन्नकोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं जाव पव्वइहिसि।

त्यारपछी तेना माता-पिताए ते जमालि क्षत्रियकुमरने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे पुत्र! आ तारे आठ स्त्रीओ छे, ते विशाल कुलमां उत्पन्न थयेली अने बाळाओ छे, ते समान त्वचावाळी, समान उमरवाळी, समान लावण्य, रूप अने यौवनगुणथी युक्त छे; वळी ते समान कुलथी आणेली, कलामां कुशल, सर्वकाल लालित अने सुखने योग्य छे; ते मार्दवगुणथी युक्त, निपुण, विनयोपचारमां पंडित अने विचक्षण छे; सुंदर मित, अने मधुर बोलवामां, तेमज हास्य, विप्रेक्षित, (कटाक्ष दृष्टि), गति, विलास अने स्थितिमां विशारद छे; उत्तम कुल अने शीलथी सुशोभित छे; विशुद्ध कुलरूप वंशतंतुनी वृद्धि करवामां समर्थ यौवनवाळी छे; मनने अनुकूल अने हृदयने इष्ट छे; वळी गुणो वडे प्रिय अने उत्तम छे, तेमज हमेशां भावमां अनुरक्त अने सर्व अंगमां सुंदर छे. माटे हे पुत्र! तुं ए स्त्रीओ साथे मनुष्यसंबन्धी विशाल कामभोगोने भोगव अने त्यारपछी भुक्तभोगी थइ विषयनी उत्सुकता दूर थाय त्यारे अमारा कालगत थया पछी यावत् तुं दीक्षा लेजे.

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी- तहावि णं तं अम्मताओ! जन्नं तुज्झे मम एवं वयह-इमाओ ते जाया विपुलकुलजावपव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सय कामभोगा असुई असासया वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा उच्चारपासवणखेलसिंघाणगवंतपित्तपूयसुक्कसोणियसमुब्भवा अमणुन्नदुरूवमुत्तपूइयपुरीसपुन्ना मयगंधुस्सासअसुभनिस्सासा उव्वेयणगा बीभत्था अप्पकालिया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लहूसगा कलमलाहिया सदुक्खबहुजणसाहारणा परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा अबुहजणणिसेविया सदा साहु-गरहणिज्जा अणंतसंसारवद्धणा कडुगफलविवागा चुडलिव्व अमुच्चमाणदुक्खाणुबंधिणो सिद्धिगमणविग्घा, से केस णं जाणति अम्मताओ! के पुव्विं गमणयाए?, के पच्छा गमणयाए?, तं इच्छामि णं अम्मताओ! जाव पव्वइत्तए।

त्यारपछी ते जमालि नामे क्षत्रियकुमारे पोताना माता पिताने आ प्रमाणे कह्युं के–'हे माता–पिता! हमणा तमे जे मने कह्युं के–हे पुत्र! तारे विशाल कुलमां (उत्पन्न थयेली आ आठ स्त्रीओ छे)–इत्यादि यावत् तुं दीक्षा लेजे, ते ठीक छे. पण हे माता–पिता! ए प्रमाणे खरेखर मनुष्यसंबन्धी कामभोगो अशुची अने अशाश्वत छे; वात, पित्त, श्लेष्म, वीर्य अने लोहीने झरवावाळा छे; विष्ठा, मूत्र, श्लेष्म, नासिकानो मेल, वमन, पित्त, परु, शुक्र अने शोणितथी उत्पन्न थयेलां छे; वळी ते अमनोज्ञ, खराब मूत्र अने दुर्गन्धी विष्ठाथी भरपुर छे; मृतकना जेवी गंधवाळा उच्छ्वासथी अने अशुभ निःश्वासथी उद्वेगने उत्पन्न करे छे, बीभत्स, अल्पकाळस्थायी, हलका, अने कलमल–(शरीरमां रहेल एक प्रकारना अशुभ द्रव्य)ना स्थानरूप होवाथी दुःखरूप अने सर्व मनुष्योने साधारण छे; शारीरिक अने मानसिक अत्यंत दुःखवडे साध्य छे; अज्ञान जनथी सेवाएला छे; साधु पुरुषोथी हमेशां निंदनीय छे; अनंत संसारनी वृद्धि करनारा छे, परिणामे कडुकफळवाळा छे, बळता घासना पूळानी पेठे न मुकी शकाय तेवा दुःखानुबंधी अने मोक्षमार्गमां विघ्नरूप छे. वळी हे माता–पिता! ते कोण जाणे छे के कोण पहेलां जशे अने कोण पछी जशे? माटे हे माता–पिता! हुं यावद् दीक्षा लेवाने इच्छुं छुं.'

तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य ते जाया! अज्जयपज्जयपिउपज्जयागएसु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहु हिरन्ने य सुवन्ने य कंसे य दूसे य विउलधणकणगजाव संतसारसावएज्ज अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं तं अणुहोहि ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्डिसक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे वड्डियकुलतंतु जाव पव्वइहिसि। तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-तहावि णं तं अम्मताओ! जन्नं तुज्झे ममं एवं वदह-इमं च ते जाया! अज्जगपज्जगजावपव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! हिरन्ने य सुवन्ने य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए मच्चुसाहिए दायसाहिए एवं अग्गिसामन्ने जाव दाइयसामन्ने अधुवे अणितिए असासए पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ तं चेव जाव पव्वइत्तए।

त्यारपछी ते जमालि नामे क्षत्रियकुमारने तेना माता-पिताए आ प्रमाणे कह्युं के 'हे पुत्र! आ अर्या (पितामह), पर्या (प्रपितामह) अने पिताना पर्या-(प्रपितामह-) थकी आवेलुं घणुं हिरण्य, सुवर्ण, कांस्य, वस्त्र, विपुल धन, कनक यावत् सारभूत द्रव्य विद्यमान छे, अने ते तारे सात पेढी सुधी पुष्कळ दान देवा भोगववाने अने वहेंचवा माटे पूरतुं छे. माटे हे पुत्र! मनुष्यसंबन्धी विपुल ऋद्धि अने सन्मानने भोगव, अने त्यारपछी सुखनो अनुभव करी, अने कुलवंशने वधारी यावत् तुं दीक्षा लेजे.' त्यारबाद जमालि नामे क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कह्युं के—'हे माता-पिता! तमे जे ए प्रमाणे कह्युं के, 'हे पुत्र! आ हिरण्यादि द्रव्य तारा पितामाह अने प्रपितामहथी यावत् आवेलुं छे, इत्यादि यावत् तुं दीक्षा लेजे. ए ठीक छे, पण हे माता-पिता! ए प्रमाणे खरेखर ते हिरण्य, सुवर्ण, यावत् सर्व सारभूत द्रव्य अग्निने साधारण छे, चोरने साधारण छे, राजाने साधारण छे, मृत्युने साधारण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे, दायाद (भायात) ने साधारण छे, अग्निने सामान्य छे, यावद् दायादने सामान्य छे, वळी ते अध्रुव, अनित्य, अने अशाश्वत छे. पहेलां के पछी ते अवश्य छोडवानुं छे, तो कोण जाणे छे के पहेलां कोण जशे अने पछी कोण जशे? इत्यादि यावत् हुं प्रव्रज्या लेवाने इच्छुं छुं.'

तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मताओ जाहे नो संचाएन्ति विसयाणुलोमाहिं बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवेत्तए वा पन्नवेत्तए वा सन्नवेत्तए वा विन्नवेत्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभयुव्वेयणकराहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणा एवं वयासी–एवं खलु जाया! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले जहा आवस्सए जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति अहीव एगंतदिट्ठीए खुरो इव एगंतधाराए लोहमया जवा चावेयव्वा वालुयाकवले इव निस्साए गंगा वा महानदी पडिसोयगमणयाए महासमुद्दे वा भुयाहिं दुत्तरो तिक्खं कमियव्वं गरुयं लंबेयव्वं असिधारगं वतं चरियव्वं, नो खलु कप्पइ जाया! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिएत्ति वा उद्देसिएइ वा मिस्सजाएइ वा अज्झोयरएइ वा पूइएइ वा कीएइ वा पामिच्चेइ वा अच्छेज्जेइ वा अणिसट्ठेइ वा अभिहडेइ वा कंतारभत्तेइ वा दुब्भिक्खभत्तेइ वा गिलाणभत्तेइ वा वद्दलियाभत्तेइ वा पाहुणगभत्तेइ वा सेज्जायरपिंडेइ वा रायपिंडेइ वा मूलभोयणेइ वा कंदभोयणेइ वा फलभोयणेइ वा बीयभोयणेइ वा हरियभोयणेइ वा भुत्तए वा पायए वा, तुमं च णं जाया! सुहसमुचिए, णो चेव णं दुहसमुचिते, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहा नालं पिपासा नालं चोरा नालं वाला नालं दंसा नालं मसगा नालं वाइयपित्तियसेंभियसन्नि-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाइए विविहे रोगायंके परिसहोवसग्गे उदिन्ने अहियासेत्तए, तं नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पओगं, तं अच्छाहि ताव जाया! जाव ताव अम्हे जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि।

ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता पिता विषयने अनुकूल एवी घणी उक्तिओ, प्रज्ञप्तिओ, संज्ञप्तिओ अने विज्ञप्तिओथी कहेवाने, जणाववाने, समजाववाने, विनववाने समर्थ न थया त्यारे तेओए विषयने प्रतिकूल, अने संयमने विषे भय अने उद्वेग करनारी एवी उक्तिओथी समजावता आ प्रमाणे कह्युं के 'हे पुत्र! ए प्रमाणे खरेखर निर्ग्रंथ प्रवचन सत्य, अनुत्तर अने अद्वितीय छे. इत्यादि आवश्यक सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् ते सर्व दुःखोनो नाश करनारु छे. परन्तु ते सर्पनी पेठे एकांत–निश्चितदृष्टिवाळुं, अस्त्रानी पेठे एकांत धारवाळुं, लोढाना जवने चाववानी पेठे दुष्कर, अने वेळुना कोळीयानी पेठे निःस्वाद छे, वळी ते गंगा नदीना सामे प्रवाहे जवानी पेठे, अने बे हाथथी समुद्र तरवाना जेवुं ते प्रवचननुं अनुपालन मुश्केल छे. तीक्ष्ण खड्गादि उपर चालवाना जेवुं [दुष्कर] छे, मोटी शिलाने उचकवा बरोबर छे अने तरवारनी धारा समान व्रतनुं आचरण करवानुं छे. हे पुत्र! श्रमण निर्गंथोने १ आधाकर्मिक, २ औद्देशिक, ३ मिश्रजात, ४ अध्यवपूरक, ५ पूतिकृत, ६ क्रीत, ७ प्रामित्य, ८ अच्छेद्य, ९ अनिःसृष्ट, १० अभ्याहृत, ११ कांतारभक्त, १२ दुर्भिक्षभक्त, १३ ग्लानभक्त, १४ वार्दलिकाभक्त, १५ प्राघूर्णकभक्त, १६ शय्यातरपिंड अने १७ राजपिंड, तेमज मूलनुं भोजन, कंदनुं भोजन, फलनुं भोजन, बीजनुं भोजन अने हरित–(लीलीवनस्पति) नुं भोजन खावुं के पीवुं कल्पतुं नथी. वळी हे पुत्र! तुं सुखने योग्य छो पण दुःखने योग्य नथी. तेमज टाढ, तडका, भूख, तरश, चोर श्वापद, डांस अने मच्छरना उपद्रवोने, तथा वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक अने संनिपातजन्य विविध प्रकारना रोगो अने तेना दुःखोने, तेमज परिषह अने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपसर्गोने सहवाने तुं समर्थ नथी. माटे हे पुत्र ! अमे तारो वियोग एक क्षण पण इच्छता नथी; तेथी ज्यांसुधी अमे जीविए त्यांसुधी तुं रहे अने अमारा कालगत थया पछी यावत् तुं दीक्षा लेजे'.

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहावि णं तं अम्मताओ ! जन्नं तुज्झे ममं एवं वयह–एवं खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले तं चेव जाव पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगपरंमुहाणं विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थं किंचिवि दुक्करं करणयाए, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुज्झेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए। तए णं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहि य आघवणाहि य पन्नवणाहि य ४ आघवेत्तए वा जाव विन्नवेत्तए वा ताहे अकामए चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमणं अणुमन्नित्था ॥ (सूत्रं ३८४) ॥

त्यारपछी ते जमालि नामे क्षत्रियकुमारे पोताना माता–पिताने आ प्रमाणे कह्युं के—'हे माता-पिता ! तमे मने जे ए प्रमाणे कह्युं के—हे पुत्र ! निर्ग्रंथप्रवचन सत्य, अनुत्तर अने अद्वीतीय छे–इत्यादि यावत् अमारा कालगत थया पछी तुं दीक्षा लेजे. ते ठीक छे, पण हे माता–पिता ! ए प्रमाणे खरेखर निर्ग्रन्थ प्रवचन क्लीब–मन्दशक्तिवाळा, कायर अने हलका पुरुषोने, तथा आ लोकमां आसक्त, परलोकथी पराङ्मुख एवा विषयनी तृष्णावाळा सामान्य पुरुषोने (तेनुं अनुपालन) दुष्कर छे; पण धीर, निश्चित अने प्रय-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्नवान् पुरुषने तेनुं अनुपालन जरा पण दुष्कर नथी. माटे हे माता-पिता! हुं तमारी अनुमतिथी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावद् दीक्षा लेवाने इच्छुं छुं. ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता--पिता विषयने अनुकूल तथा विषयने प्रतिकूल एवी घणी उक्तिओ, प्रज्ञप्तिओ, संज्ञप्तिओ अने विज्ञप्तिओथी कहेवाने यावत् समजाववाने शक्तिमान् न थया त्यारे वगर इच्छाए तेओए जमालि क्षत्रियकुमारने दीक्षा लेवानी अनुमति आपी. ॥ २८४ ॥

तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! खत्तियकुंडग्गामं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाइए जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोचंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावइत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवन्नियाणं कलसाणं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचन्ति निक्खमणाभिसेगेणं ॥

त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. अने बोलावीने एम कह्युं के—'हे देवानुप्रियो! शीघ्र आ क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी बहार अने अंदर पाणीथी छंटकाव करावो, वाळीने साफ करावो, अने लींपावो'--इत्यादि जेम औप-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पातिक सूत्रमां कह्युं छे तेम करीने यावत् ते कौटुंबिक पुरुषो आज्ञा पाछी आपे छे. त्यारबाद फरीने पण जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, अने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के—'हे देवानुप्रियो ! जलदी जमालि क्षत्रियकुमारनो महार्थ, महामूल्य, महापूज्य अने मोटो दीक्षानो अभिषेक तैयार करो.' त्यारबाद ते कौटुंबिक पुरुषो कह्या प्रमाणे करीने आज्ञा पाछी आपे छे. त्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता-पिता उत्तम सिंहासनमां पूर्व दिशा सन्मुख बेसाडे छे, अने बेसाडीने एकसो आठ सोनाना कलशोथी–इत्यादि राजप्रश्नीयसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् एकसोने आठ माटीना कलशोथी सर्व ऋद्धिवडे यावद् मोटा शब्द-मोटा २ निष्क्रमणाभिषेकथी तेनो अभिषेक करे छे.

अभिसिंचित्ता करयल जाव जएणं विजएणं वद्धावेन्ति, जएणं विजएणं वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? किणा वा ते अट्ठो ?, तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणिउं कासवगं च सद्दाविउं,तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह सयसहस्सेणं कासवगं च सद्दावेइ, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइं तहेव जाव कासवगं सद्दावेंति । तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे तुट्ठे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता

अभिषेक कर्या बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता—पिता हाथ जोडी यावत् तेने जय अने विजयथी वधावे छे. वधावीने तेओए आ प्रमाणे कह्युं के—'हे पुत्र! तुं कहे के तने अमे शुं दइए, शुं आपीए, अथवा तारे कांइ प्रयोजन छे? त्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कह्युं के—हे माता-पिता! हुं कुत्रिकापणथी एक रजोहरण अने एक पात्र मंगाववा तथा एक हजामने बोलाववा इच्छुं छुं; त्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने कह्युं के—'हे देवानुप्रियो! शीघ्र आपणा खजानामांथी त्रण लाख (सोनैया) ने लइने तेमांथी बे लाख (सोनैया) वडे कुत्रिकापणथी एक रजोहरण अने एक पात्र लावो, तथा एक लाख सोनैया आपीने एक हजामने बोलावो. ज्यारे जमालि क्षत्रिकुमारना पिताए ते कौटुंबिक पुरुषोने ए प्रमाणे आज्ञा करी त्यारे तेओ खुश थया, तुष्ट थया, अने हाथ जोडीने यावत् पोताना स्वामीनुं वचन स्वीकारीने तुरतज खजानामांथी त्रण लाख सुवर्णमुद्रा लइने यावत् हजामने बोलावे छे, त्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषो द्वारा बोलावेलो ते हजाम खुश थयो, तुष्ट थयो, न्हायो, अने बलिकर्म (देवपूजा) करी, यावत् तेणे पोतानुं शरीर शणगार्युं, अने पछी ज्यां जमालि क्षत्रियकुमारनो पिता छे त्यां ते आवे छे.

करयल० जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ जएणं विजएणं वद्धावित्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जं मए करणिज्जं, तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवं वयासी-तुमं देवाणुप्पिया! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपयोगे अग्गकेसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पडिकप्पेह, तए णं से कासवे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयल जाव एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ २ त्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपादे पक्खालेइ सुरभिणा २ सुद्धाए अट्ठपडलाए पोत्तीए मुहं बंधइ मुहं बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपयोगे अग्गकेसे कप्पइ। तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ अग्गकेसे पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेति २ सुद्धवत्थेणं बंधेइ सुद्धवत्थेणं बंधित्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवति २ हारवारिधारासिंदुवारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं सुयवियोगदूसहाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी २ एवं वयासी— एस णं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जन्नेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीतिकट्टु ओसीसगमूले ठवेति,

आवीने हाथ जोडीने जमालि क्षत्रियकुमारना पिताने जय अने विजयथी वधावे छे; वधाव्या पछी ते हजाम आ प्रमाणे बोल्यो के—'हे देवानुप्रिय ! जे मारे करवानुं होय ते फरमावो'. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए ते हजामने आ प्रमाणे कह्युं के—'हे देवानुप्रिय ! जमालि क्षत्रियकुमारना अत्यन्त यत्नपूर्वक चार अंगुल मूकीने निष्क्रमणने (दीक्षाने) योग्य आगळना वाळ कापी नाख. त्यारपछी ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए ते हजामने ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते खुश थयो, तुष्ट थयो अने हाथ जोडीने ए प्रमाणे बोल्यो—'हे स्वामिन् ! आज्ञा प्रमाणे करीश' एम कहीने विनयथी ते वचनने स्वीकार करे छे. स्वीकार करीने

For Private and Personal Use Only

सुगंधी गंधोदकथी हाथ पगने धुए छे, धोइने शुद्ध आठ पडवाळा वस्त्रथी मोढाने बांधी अत्यंत यत्नपूर्वक जमालि क्षत्रियकुमारना निष्क्रमण योग्य अग्रकेशो चार आंगळ मूकीने कापे छे. त्यार पछी जमालि क्षत्रियकुमारनी माता हंसना जेवा श्वेत पटशाटकथी ते अग्रकेशोने ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने ते केशोने सुगंधी गंधोदकथी धूए छे. धोइने उत्तम अने प्रधान गंध तथा मालावडे पूजे छे. पूजीने शुद्ध वस्त्रवडे बांधे छे. बांधीने रत्नना करंडियामां मूके छे. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता हार, पाणीनी धारा, सिंदुवारना पुष्पो अने तूटी गएली मोतीनी माळा जेवां पुत्रना वियोगथी दुःसह आंसु पाडती आ प्रमाणे बोली के—आ केशो अमारा माटे घणी तिथिओ, पर्वणीओ, उत्सवो, यज्ञो, अने महोत्सवोमां जमालिकुमारना वारंवारं दर्शनरूप थशे' एम धारी तेने ओशीकाना मूळमां मूके छे.

तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोचंपि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति २ दोच्चंपि जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयापीयएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति सीयापीयएहिं कलसेहिं ण्हाणेत्ता पम्हसुकुमालाए सुरभिए गंधकासाइए गायाइं लूहेंति सुरभिए गंधकासाइए गायाइं लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झं चक्खुहरं वन्नफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचियंतकम्मं महरिहं हंसलक्खणपडसाडगं परिहिंति २ हारं पिणद्धेंति २ अद्धहारं पिणद्धेंति २ एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं रयणसंकडुक्कडं मउडं पिणद्धेंति, किं बहुणा?, गंथिमवेढिमपूरिमसंघातिमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकियविभूसियं करेंति ।

त्यार बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता—पिता पुनः उत्तर दिशा सन्मुख बीजुं सिंहासन मूकावे छे. मूकावीने फरीवार जमालि क्षत्रियकुमार ने सोना अने रूपाना कलशो वडे न्हवरावे छे. न्हवरावीने सुरभि, दशावाळी अने सुकुमाल सुगंधी गंधकाषाय (गन्धप्रधान लाल) वस्त्र वडे तेनां अंगोने लूंछे छे, अने अंगोने लुंछीने सरस गोशीर्ष चंदनवडे गात्रनुं विलेपन करे छे. विलेपन करीने नासिकाना निःश्वासना वायुथी उडी जाय एवुं हलकुं, आंखने गमे तेवुं सुंदर, वर्ण अने स्पर्शथी संयुक्त, घोडानी लाळ करतां पण वधारे नरम, धोळुं, सोनाना कसबी छेडावाळुं, महामूल्यवाळुं, अने हंसना चिह्नयुक्तएवुं पटशाटक (रेशमी वस्त्र) पहेरावे छे. पहेरावीने हार अने अर्धहारने पहेरावे छे. ए प्रमाणे जेम सूर्याभना अलंकारनुं वर्णन करेलुं छे तेम अहिं करवुं, यावत् विचित्र रत्नोथी जडेला उत्कृष्ट मुकुटने पहेरावे छे. वधारे शुं कहेवुं ? पण ग्रंथिम—गुंथेली, वेष्टिम—वींटेली, पूरिम-पूरेली अने संघातिम—परस्पर संघात वडे तैयार थयेली चारे प्रकारनी माळाओ वडे कल्पवृक्षनी पेठे ते जमालि कुमारने अलंकृत--विभूषित करे छे.

तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवन्नओ जाव मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं पुरिससहस्सवाहणीयं सीयं उवट्ठवेह उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति । तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं वत्थालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुन्नालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ सीहासणाओ अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरूहइ २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्यार बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिता कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. अने बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्यु के-'हे देवानुप्रियो! शीघ्र सेंकडो स्तंभोवडे सहित लीलापूर्वक पुतळीओथी युक्त -इत्यादि राजप्रश्नीयसूत्रमां विमाननुं वर्णन कर्युं छे तेवी यावत् मणिरत्ननी घंटिकाओना समूह युक्त, हजार पुरुषोथी उंचकी शकाय तेवी शीबिका-पालखीने तैयार करो अने तैयार करीने मारी आज्ञा पाछी आपो.' त्यारबाद ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् आज्ञाने पाछी आपे छे. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमार केशालंकार, वस्त्रालंकार माल्यालंकार अने आभरणालंकार ए चार प्रकारना अलंकारथी अलंकृत थइ प्रतिपूर्ण अलंकारथी विभूषित थइ सिंहासनथी उठे छे. उठीने ते शिबिकाने प्रदक्षिणा दइने तेना उपर चढे छे. चढीने उत्तम सिंहासन उपर पूर्व दिशा सन्मुख बेसे छे.

तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ण्हाया कयबलि जाव सरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरूहइ सीयं दुरूहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि संनिसन्ना, तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाई ण्हाया जाव सरीरा रयहरणं च पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणी करेमाणी सीयं दुरूहइ सीयं दुरूहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि संनिसन्ना। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगयगय जाव रूवजोव्वणविलासकलिया सुंदरथण० हिमरययकुमुदकुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं उवरि धारेमाणी २ चिट्ठति, तए णं तस्स जमालिस्स उभओपासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारा-चारुजावकलियाओ नाणामणिकणगरयणविमल महरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखंककुंदेंदुद-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गरयअमयमहियफेणपुंजसंनिकासाओ धवलाओ चामराओ गहाय सलीलं वीयमाणीओ चिट्ठंति,

त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता स्नान करी बलिकर्म करी यावत् शरीरने अलंकृत करी, हंसना चिह्नवाळा पटशाटकने लइ शिबिकाने प्रदक्षिणा करी तेना उपर चढे छे; अने चढीने ते जमालि क्षत्रियकुमारने जमणे पडखे उत्तम भद्रासन उपर बेठी. पछी जमालि क्षत्रियकुमारनी धावमाता स्नान करी यावत् शरीरने शणगारी रजोहरण अने पात्रने लइ ते शिबिकाने प्रदक्षिणा करी तेना उपर चढे छे, अने चढीने जमालि क्षत्रियकुमारने डाबे पडखे उत्तम भद्रासन उपर बेठी. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी पाछळ मनोहर आकार अने सुंदर पहेरवेशवाळी, संगतगतिवाळी यावत् रूप अने यौवनना विलासथी युक्त, सुंदर स्तनवाळी एक युवती हिम, रजत, कुमुद, मोगरानुं फुल अने चंद्रसमान कोरंटकपुष्पनी माळायुक्त, धोळुं छत्र हाथमां लइ तेने लीलापूर्वक धारण करती उभी रहे छे. त्यारपछी ते जमालिने बन्ने पडखे शृंगारना जेवा मनोहर आकारवाळी अने सुंदर वेशवाळी उत्तम बे युवती स्त्रीओ यावत् अनेक प्रकारना मणि, कनक, रत्न अने विमल, महामूल्य तपनीय रक्त सुवर्ण—) थी बनेला, उज्ज्वल विचित्र दंडवाळां, दीपतां, शंख, अंक, मोगराना फुल, चंद्र, पाणीना बिन्दु अने मथेल अमृतना फीणना समान धोळां चामरोने ग्रहण करी लीलापूर्वक वींजती उभी रहे छे.

तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरच्छिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागारजाव कलिया सेतरयगामयविमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ, तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरच्छिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागारजाव कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं गहाय चिट्ठति, तए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ को० २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयं एगाभरणं वसणगहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं जाव सद्दावेंति, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणकोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ० ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता एगाभरणवसणगहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छन्ति ते० २ त्ता करयलजाव वद्धावेत्ता एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जं अम्हेहिं करणिज्जं,

पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी उत्तरपूर्व दिशाए शृंगारना गृह जेवी उत्तम वेषवाळी यावत् एक उत्तम स्त्री श्वेत रजतमय, पवित्र पाणीथी भरेला अने उन्मत्त हस्तीना मोटा मुखना आकारवाळा कलशने ग्रहण करीने यावत् उभी रहे छे. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी दक्षिणपूर्वे शृंगारना गृहरूप उत्तम वेषवाळी यावत् एक उत्तम स्त्री विचित्र सोनाना दंडवाळा विंजणाने लइने उभी रहे छे, पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे देवानुप्रियो! शीघ्र सरखा, समानत्वचावाळा, समानउमरवाळा, समानलावण्य, रूप अने यौवन गुणयुक्त. अने एक सरखा आभरण अने वस्त्ररूप परिकरवाळा एक हजार उत्तम युवान कौटुंबिक पुरुषोने बोलावो'. पछी ते कौटुंबिक पुरुषोए यावत् पोताना स्वामीनुं वचन स्वीकारीने जलदी एक सरखा अने सरखी त्वचावाळा यावत् एक हजार पुरुषोने बोलाव्या. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषे द्वारा बोलावेला ते कौटुंबिक पुरुषो हर्षित अने तुष्ट थया, स्नान करी, बलिकर्म (पूजा) करी, कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करी, एकसरखाघरेणां अने वस्त्ररूप परिकरवाळा थईने तेओ ज्यां जमालि क्षत्रियकुमारना पिता छे त्यां आवे छे. आवीने हाथ जोडी यावत् वधावी तेओए आ प्रमाणे कह्युं के—'हे देवानुप्रिय ! जे कार्य अमारे करवानुं होय ते फरमावो.'

तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्संपि एवं वदासी—तुज्झे णं देवाणुप्पिया! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स जाव पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं०—सोत्थिय सिरिवच्छ जाव दप्पणा, तदाणंतरं च णं पुन्नकलसभिंगारं जहा उववाइए जाव गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, एवं जहा उववाइए तहेव भाणियव्वं जाव आलोयं वा करेमाणा जय २ सद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तदाणंतरं च णं बहवे उग्गा भोगा जहा उववाइए जाव महापुरिसवग्गुरपरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियस्स पुरओ य मग्गओ य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

पछी ते जमालिकुमारना पिताए ते हजार कौटुंबिक उत्तम युवान पुरुषोने आ प्रमाणे कह्युं के—'हे देवानुप्रियो ! स्नान करी, बलिकर्म करी अने यावत् एक सरखां आंभरण अने वस्त्ररूपपरिकरवाळा तमे जमालि क्षत्रियकुमारनी शिबिकाने उपाडो.' पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पितानुं वचन स्वीकारी स्नान करेला यावत् सरखो पहेरवेष धारण करेला ते कौटुंबिक पुरुषो जमालि क्षत्रिय-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुमारनी शिबिका उपडे छे. पछी ज्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमार हजार पुरुषोथी उपाडेली शीबिकामां बेठो त्यारे सौ पहेलां आ आठ आठ मंगलो आगळ अनुक्रमे चाल्या. ते आ प्रमाणे १ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स, यावद् ८ दर्पण. ते आठ मंगळ पछी पूर्ण कलश चाल्यो—इत्यादि औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावद् गगन तलनो स्पर्श करती एवी वैजयंती—ध्वजा आगळ अनुक्रमे चाली—इत्यादि औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् जय जय शब्दनो उच्चार करता तेओ आगळ अनुक्रमे चाल्या. त्यारपछी घणा उग्रकुलमां उत्पन्न थयेला, भोगकुलमां उत्पन्न थयेला पुरुषो औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् मोटा पुरुषो रूपी वागुराथी वींटायेलि जमालि क्षत्रियकुमारनी आगळ, पाछळ अने पडखे अनुक्रमे चाल्या.

तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयबलिकम्मे जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणे २ हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगर जाव परिक्खित्ते जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ २ अणुगच्छइ। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ महं आसा आसवरा उभओ पासिं णागा णागवरा पिट्ठओ रहा रहसंगेल्ली। तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गयभिंगारे परिग्गहियतालियंटे ऊसवियसेतच्छत्ते पवीइयसेतचामरवालवीयणीए सव्विड्ढीए जाव णादितरवेणं। तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा जाव पुत्थयगाहा जाव वीणगाहा, तयाणंतरं च णं अट्ठसयं गयाणं अट्ठसयं तुरयाणं अट्ठसयं रहाणं, तयाणंतरं च णं लउडअसिकोंतहत्थाणं बहूणं पायत्ताणीणं पुरओ संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं बहवे राईसरतलवरजावसत्थवा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हप्पभिइओ पुरओ संपट्ठिया जाव णादितरवेणं खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

त्यारपछी ते जमालिकुमारना पिता स्नान करी, बलिकर्म करी यावद् विभूषित थइ हाथीना उत्तम स्कंध उपर चडी, कोरंटक पुष्पनी माळा युक्त. (मस्तके) धारण कराता छत्रसहित, बे श्वेत चामरोथी वींजाता २, घोडा, हाथी, रथ अने प्रवर योद्धाओ सहित चतुरंगिणी सेना साथे परिवृत थइ, मोटा सुभटना वृन्दथी यावत् वींटायेला जमालि क्षत्रियकुमारनी पाछळ चाले छे, त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी आगळ मोटा अने उत्तम घोडाओ. अने बन्ने पडखे उत्तम हाथीओ, पाछळ रथो अने रथनो समूह चाल्यो. त्यार बाद ते जमालिकुमार सर्व ऋद्धिसहित यावत् वादित्रना शब्दसहित चाल्यो. तेनी आगळ कलश अने तालवृन्तने लइने पुरुषो चालता हता, तेना उपर उंचे श्वेत छत्र धारण करायुं हतुं, अने तेना पडखे श्वेत चामर अने नाना पंखाओ वींजाता हता. त्यार पछी केटलाक लाकडीवाळा, भालावाळा, पुस्तकवाळा यावत् वीणवाळा पुरुषो चाल्या. त्यारपछी एकसो आठ हाथी, एकसो आठ घोडा अने एकसो आठ रथो चाल्या, त्यारपछी लाकडी, तरवार अने भालाने ग्रहण करी मोटुं पायदळ आगळ चाल्युं, त्यारपछी घणा युवराजो, धनिको, तलवरो, यावत् सार्थवाह प्रमुख आगळ चाल्या. यावद् क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वच्चे थइने ज्यां ब्रह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, ज्यां बहुशालक चैत्य छे अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां जवानो विचार कर्यो.

तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडग-तियचउक्कजाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया जहा उववाइए जाव अभिनंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी—जय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जय णंदा! धम्मेणं जय जय णंदा तवेणं जय जय णंदा! भद्दं ते अभग्गेहिं णाणदंसणचरित्तमुत्तमेहिं अजियाइं जिणाहि इंदियाइं जियं च पालेहि समणधम्मं जियविग्घोऽवि य वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे णिहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणियबद्धकच्छे मद्दाहि अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च धीर! तेलोक्करंगमज्झे पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं च णाणं गच्छय मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धिमग्गेणं अकुडिलेणं हंता परीसहचमूं अभिभविय गामकंटकोवसग्गाणं धम्मे ते अविग्घमत्थुत्तिकट्टु अभिनंदंति य अभिथुणंति य।

त्यारपछी क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वच्चोवच्च निकळता ते जमालि क्षत्रियकुमारने शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क यावत् मार्गोमां घणा धनना अर्थिओए, कामना अर्थिओए-इत्यादि औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् अभिनंदन आपता, स्तुति करता आ प्रमाणे कह्युं के-'हेनंद -आनन्ददायक! तारो धर्म वडे जय थाओ, हे नन्द! तारो तपवडे जय थाओ, हे नन्द तारुं भद्र थाओ, अभग्न —अखंडित अने उत्तम ज्ञान, दर्शन अने चारित्र वडे अजित एवी इन्द्रियोने तुं जित, अने जीतिने श्रमण धर्मनुं पालन कर. हे देव! विघ्नोने जीती तुं सिद्धिगतिमां निवास कर. धैर्यरूप कच्छने मजबूत बांधीने तपवडे रागद्वेषरूप मल्लोनो घात कर. उत्तम शुक्ल ध्यानवडे अष्टकर्मरूप शत्रुनुं मर्दन कर. वळी हे धीर! तुं अप्रमत्त थइ त्रणलोकरूप रंगमंडप मध्ये आराधनापताकाने ग्रहण करी निर्मळ अने अनुत्तर एवा केवलज्ञानने प्राप्त कर, अने जिनवरे उपदेशेल सरल सिद्धिमार्गवडे परमपदरूप मोक्षने प्राप्त कर. परीषहरूप सेनाने हणीने इन्द्रियोने प्रतिकूल उपसर्गोनो पराजय कर. तने धर्ममां अविघ्न थाओ'—ए प्रमाणे तेओ अभिनंदन आपे छे अने स्तुति करे छे.

For Private and Personal Use Only

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे २ एवं जहा उववाइए कूणिओ जाव णिग्गच्छति निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं ठवेइ २ पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ, तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वदासी—एवं खलु भंते! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव किमंग पुण पासणयाए ? से जहानामए—उप्पलेइ वा पउमेइ वा जाव पउमसहस्सपत्तेइ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पति पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं एवामेव जमालीवि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे णोवलिप्पइ कामरएणं णोवलिप्पइ भोगरएणं णोवलिप्पइ मित्तणाईनियगसयणसंबंधिपरिजणेणं, एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तं एयन्नं देवाणुप्पियाणं अम्हे भिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसभिक्खं,

त्यारबाद ते जमालि क्षत्रियकुमार हजारो नेत्रोनी मालाओथी वारंवार जोवातो–इत्यादि औपपातिकसूत्रमां कूणिकना प्रसंगे कह्यु छे तेम अहिं जाणवुं; यावत् ते [जमालि] नीकळे छे. नीकळीने ज्यां ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, ज्यां बहुशाल नामे चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने तीर्थंकरना छत्रादिक अतिशयोने जुए छे, जोइने हजार पुरुषोथी वहन कराती ते शिबिकाने उभी राखे छे.

उभी राखीने ते शिबिका थकी नीचे उतरे छे. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारने आगळ करी तेना माता-पिता ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् नमी नेओ आ प्रमाणे बोल्या के-'हे भगवान्! ए प्रमाणे खरेखर आ जमालि क्षत्रियकुमार अमारे एक इष्ट अने प्रिय पुत्र छे, जेनुं नाम श्रवण पण दुर्लभ छे, तो दर्शन दुर्लभ होय तेमां शुं कहेवुं? जेम कोइ एक कमळ, पद्म, यावत् सहस्रपत्र कादवमां उत्पन्न थाय, अने पाणीमां वधे, तोपण ते पंकनी रजथी तेम जलना कणथी लेपातुं नथी; ए प्रमाणे आ जमालि क्षत्रियकुमार पण कामथकी उत्पन्न थयो छे अने भोगोथी वृद्धि पाम्यो छे, तो पण ते कामरजथी अने भोगरजथी लेपातो नथी, तेमज मित्र, ज्ञाति, पोताना स्वजन, संबन्धी अने परिजनथी पण लेपातो नथी. हे देवानुप्रिय! आ जमालि क्षत्रियकुमार संसारना भयथी उद्विग्न थयो छे, जन्म मरणथी भयभीत थयो छे, अने देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंड-दीक्षित थइने अगारवासथी अनगारिकपणाने स्वीकारवाने इच्छे छे. तो देवानुप्रियने अमे आ शिष्यरूपी भिक्षा आपीए छीए. तो हे देवानुप्रिय! आप आ शिष्यरूप भिक्षानो स्वीकार करो'.

तए णं समं० ३ तं जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी-अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं। तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, तते णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छति पडिच्छित्ता हारवारिजाव विणिम्मुयमाणा वि० २ जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी—घडियव्वं जाया! जइयव्वं जाया!

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिक्कमियव्वं जाया! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमायेतव्वंतिकट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तए णं से जमालिखत्तियए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता एवं जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव सव्वं सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ सामाइयमा० अहिज्जेत्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमजावमासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ (सूत्रं ३८५) ॥

त्यारे श्रमण भगवंत महावीरे ते जमालि क्षत्रियकुमारने आ प्रमाणे कह्यु के–'हे देवानुप्रिय! जेम सुख उपजे तेम करो, प्रतिबन्ध न करो'. ज्यारे श्रमण भगवान् महावीरे जमालि क्षत्रियकुमारने ए प्रमाणे कह्यु त्यारे ते हर्षित थइ, तुष्ट थइ, यावत् श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावद् नमस्कार करी, उत्तरपूर्व दिशा तरफ जाय छे. जइने पोतानी मेळे आभरण, माला अने अलंकार उतारे छे. पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता हंसना चिह्नवाळां पटशाटकथी आभरण, माला अने अलंकारोने ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने हार अने पाणीनी धारा जेवां आंसु पाडती २ तेणे पोताना पुत्र जमालिने आ प्रमाणे कह्यु के–'हे पुत्र! संयमने विषे प्रयत्न करजे, हे पुत्र! यत्न करजे, हे पुत्र! पराक्रम करजे, संयम पाळवामां प्रमाद न करीश. ए प्रमाणे (कहीने) ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता–पिता श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे; वांदी अने नमीने जे दिशाथी तेओ आव्या हता ते दिशाए पाछा गया. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार पोतानी मेळे पंच मुष्टिक लोच करे छे, करीने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवे छे, आवीने ऋषभदत्त ब्राह्मणनी पेठे तेणे प्रव्रज्या लीधी. परन्तु जमालि क्षत्रियकुमारे पांचसो पुरुषो साथे प्रव्रज्या लीधी-इत्यादि सर्व जाणवुं. यावत् ते जमालि अनगार सामायिकादि अगीआर अंगोने भणे छे. भणीने घणा चतुर्थ भक्त, छट्ठ, छट्ठम, अने यावत् मासार्ध तथा मासक्षमणरूप विचित्र तपकर्मवडे आत्मानें भावित करता विहरे छे. ॥ ३८५ ॥

तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइं जेणेव समणं भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति वंदित्ता २ एवं वयासी-इच्छामि णं भंते! तुज्झेहिं अब्भणुन्नाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए, तए णं से समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-इच्छामि णं भंते! तुज्झेहिं अब्भणुन्नाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं जाव विहरित्तए, तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चंपि तच्चंपि एयमट्ठं णो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ,

त्यार बाद अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगार ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे. वांदी अने नमीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं के-'हे भगवन्! तमारी अनुमतिथी हुं पांचसे अनगारनी साथे

For Private and Personal Use Only

बहारना देशोमां विहार करवाने इच्छुं छुं.' त्यारे श्रमण भगवान् महावीरे जमालि अनगारनी आ वातनो आदर न कर्यो, स्वीकार न कर्यो, परन्तु मौन रह्या. त्यार पछी ते जमालि अनगारे श्रमण भगवंत महावीरने बीजी वार, त्रीजी वार पण ए प्रमाणे कह्युं के–'हे भगवान्! तमारी अनुमतिथी हुं पांचसो साधु साथे यावत् विहार करवाने इच्छुं छुं.' पछी श्रमण भगवान् महावीरे जमालि अनगारनी आ वातनो बीजी वार, त्रीजी वार पण आदर न कर्यो, यावत् मौन रह्या. त्यारबाद जमालि अनगार श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे. वांदीने–नमीने श्रमण भगवंत महावीर पासेथी अने बहुशाल नामे चैत्यथी नीकळे छे, नीकळीने पांचसो साधुओनी साथे बहारना देशोमां विहार करे छे.

तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थीनामं णयरी होत्था वन्नओ, कोट्ठए चेइए वन्नओ, जाव वणसंडस्स, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था वन्नओ पुन्नभद्दे चेइए वन्नओ, जाव पुढविशिलावट्टओ। तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइ पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेवसावत्थी नरीय जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हति अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयावि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपानगरी जेणेव पुन्नभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हति अहा० २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

ते काले अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती. वर्णन. त्यां कोष्ठक नामे चैत्य हतुं. वर्णन यावत् वनखंड सुधी जाणवुं. ते

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काले अने ते समये चंपा नामे नगरी हती, वर्णन. पूर्णभद्र चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. हवे अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगार पांचसो साधुओना परिवारनी साथे अनुक्रमे विहार करता, एक गामथी बीजे गाम जता ज्यां श्रावस्ती नामे नगरी छे, अने ज्यां कोष्ठक चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करीने संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता विहरे छे. त्यारबाद अन्य कोई दिवसे श्रमण भगवान् महावीर अनुक्रमे विचरता यावत् सुखपूर्वक विहार करता ज्यां चंपानगरी छे, अने ज्यां पूर्णभद्र चैत्य छे त्यां आवे छे आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता विचरे छे.

तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहि य विरसेहि य अंतेहि य पंतेहि य लूहेहि य तुच्छेहि य कालाइक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य सीतएहि य पाणभोयणेहिं अन्नया कयावि सरीरगंसि विउले रोगातंके पाउब्भूए उज्जले विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे दुरहियासे पित्तज्जरपरिगतसरीरे दाहवक्कंतिए यावि विहरइ। तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे णिग्गंथे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी–तुज्झे णं देवाणुप्पिया! मम सेज्जासंथारगं संथरेह, तए णं ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जासंथारगं संथरेंति, तए णं से जमाली अणगारे बलियतरं वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्चंपि समणे निग्गंथे सद्दावेइ २ त्ता दोच्चंपि एवं वयासी–ममन्नं देवाणुप्पिया! सेज्जासंथारए किं कडे कज्जइ?, एवं वुत्ते समाणे समणा निग्गंथा बिंति–भो सामी! कीरइ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हवे अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगारने रसरहित, विरस, अन्त, प्रान्त, रुक्ष (लुखा) तुच्छ, कालातिक्रांत, (भुख तरसनो काल वीती गया पछी) प्रमाणातिक्रांत (प्रमाणथी वधारे के ओछा) शीत पान-भोजनथी शरीरमां मोटो व्याधि पेदा थयो, ते व्याधि अत्यन्त दाह करनार, विपुल, सख्त, कर्कश, कटुक, चंड, (भयंकर) दुःखरूप, कष्टसाध्य, तीव्र अने असह्य हतो. तेनुं शरीर पित्तज्वरथी व्याप्त होवाथी ते दाहयुक्त हतो. हवे ते जमालि अनगार वेदनाथी पीडित थयेलो पोताना श्रमण निर्ग्रंथोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कह्युं के-'हे देवानुप्रियो! तमे मारे सुवा माटे संस्तारक (शय्या) पाथरो'. त्यारबाद ते श्रमण निर्ग्रन्थो जमालि अनगारनी आ वातनो विनयपूर्वक स्वीकार करे छे, स्वीकारीने जमालि अनगारने सुवा माटे संस्तारक पाथरे छे. ज्यारे ते जमालि अनगार अत्यंत वेदनाथी व्याकुल थयो त्यारे फरीथी श्रमण निर्ग्रंथोने बोलाव्या अने बोलावीने फरीथी तेणे आ प्रमाणे कह्युं के-'हे देवानुप्रियो! मारे माटे संस्तारक कर्यो छे के कराय छे?'

जए णं ते समणा निग्गंथा जमालिं अणगारं एवं वयासी-णो खलु देवाणुप्पियाणं सेज्जासंथारए कडे कज्जति तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जन्नं समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ जाव एवं परूवेइ-एवं खलु चलमाणे चलिए उदीरिज्जमाणे उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे णिज्जिन्ने तं णं मिच्छा, इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथरिज्ज-माणे असंथरिए, जम्हा णं सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथरिज्जमाणे असंथरिए तम्हा चलमाणेवि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणेवि अणिज्जिन्ने, एवं संपेहेइ एवं संपेहेत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेइ समणे निग्गंथे सद्दावेत्ता एवं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वयासी–जन्नं देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ जाव परूवेइ–एवं खलु चलमाणे चलिए तं चेव सव्वं जाव णिज्जरिज्जमाणे अणिज्जिन्ने । तए णं जमालिस्स अणगारस्स एवं आइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगइया समणा निग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति अत्थेगइया समणा निग्गंथा एयमट्ठं णो सद्दहंति ३, तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति ३ ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तत्थ णं जे ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं णो सद्दहंति णो पत्तियंति णो रोयंति ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति २ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइ० जेणेव चंपानयरी जेणेव पुन्नभद्दे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति २ त्ता वंदइ णमंसइ २ समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ॥ (सूत्रं ३८६) ॥

त्यार पछी ते श्रमण निर्ग्रन्थोए जमालि अनगारने एम कह्युं के–'देवानुप्रियने माटे शय्यासंस्तारक कर्यो नथी, पण कराय छे'. त्यार पछी ते जमालि अनगारने आ आवा प्रकारनो संकल्प उत्पन्न थयो के–"श्रमण भगवंत महावीर जे ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, चालतुं होय ते चाल्युं कहेवाय, उदीरातुं होय ते उदीरायुं कहेवाय, यावत् निर्जरातुं होय ते निर्जरायुं कहेवाय, ते मिथ्या छे. कारण के आ प्रत्यक्ष देखाय छे के, शय्या संस्तारक करातो होय त्यां सुधी ते करायो नथी, पथरातो होय त्यां सुधी ते पथरायो नथी; जे कारणथी आ शय्या–संस्तारक करातो होय त्यां सुधी ते करायो नथी, पथरातो होय त्यां सुधी ते पथरायेलो नथी; ते

For Private and Personal Use Only

कारणथी चालतुं होय त्यां सुधी ते चलित नथी, पण अचलित छे; यावत् निर्जरातुं होय त्यां सुधी ते निर्जरायुं नथी पण अनिर्जरित छे" ए प्रमाणे विचार करे छे. विचार करीने ते जमालि अनगार श्रमण निर्ग्रंथोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवंत महावीर जे आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के–खरेखर ए प्रमाणे "चालतुं ते चलित कहेवाय"– इत्यादि, पूर्ववत् सर्व कहेवुं, यावत् निर्जरातुं होय ते निर्जरित नथी, पण अनिर्जरित छे.' ज्यारे जमालि अनगार ए प्रमाणे कहेता हता, यावत् प्ररूपणा करता हता, त्यारे केटलाएक श्रमण निर्ग्रन्थो ए वातने श्रद्धापूर्वक मानता हता, तेनी प्रतीति करता हता, रुचि करता हता; अने केटलाक श्रमण निर्ग्रन्थो ए वात मानता न होता, तथा तेनी प्रतीति अने रुचि करता न होता. तेमां जे श्रमण निर्ग्रंथो ते जमालि अनगारना आ मन्तव्यनी श्रद्धा करता हता. प्रतीति करता हता अने रुचि करता हता तेओ ते जमालि अनगारने आश्रयी विहार करे छे. अने जे श्रमण निर्ग्रंथो जमालि अनगारना ए मन्तव्यमां श्रद्धा करता न होता, प्रतीति करता न होता अने रुचि करता न होता तेओ जमालि अनगारनी पासेथी कोष्ठक चैत्य थकी बहार नीकळे छे. अने बहार नीकळीने अनुक्रमे विचरता, एक गामथी बीजे गाम विहार करता ज्यां चंपा नगरी छे, ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करे छे, करीने वांदे छे; नमे छे, अने वांदी-नमीने श्रमण भगवंत महावीरनी निश्राए विहार करे छे. ॥ ३८६ ॥

तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयावि ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के हट्ठे तुट्ठे जाए अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चंपा नयरी जेणेव पुन्नभद्दे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था भवेत्ता छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंता णो खलु अहं तहा छउमत्थे भवित्ता छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कमिए, अहन्नं उप्पन्नणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कमिए, तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी—णो खलु जमाली! केवलिस्स णाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवरिज्जइ वा णिवारिज्जइ वा, जइ णं तुमं जमाली! उप्पन्नणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि-सासए लोए जमाली! असासए लोए जमाली?, सासए जीवे जमाली! असासए जीवे जमाली?, तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए जाव कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था, णो संचाएति भगवओ गोयमस्स किंचिवि पमोक्खमाइक्खित्तए तुसिणीए संचिट्ठइ,

त्यार पछी कोइ एक दिवसे ते जमालि अनगार पूर्वोक्त रोगना दुःखथी विमुक्त थयो, हृष्ट, रोगरहित अने बलवान् शरीरवाळो थयो. अने श्रावस्ती नगरीथी अने कोष्ठक चैत्यथी बहार नीकळी अनुक्रमे विचरता ग्रामानुग्राम विहार करता ज्यां चंपानगरी छे, ज्यां पूर्णभद्र चैत्य छे, अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी अत्यन्त दूर नहि तेम अत्यन्त पासे नहि, तेम उभा रहीने श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कह्युं-'जेम देवानुप्रियना घणा शिष्यो श्रमण निर्ग्रन्थो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छद्मस्थ होइनें छद्मस्थ विहारथी विहरी रह्या छेः पण हुं तेम छद्मस्थ विहारथी विहरतो नथी. हुं तो उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शन धारण करनारो अर्हन्, जिन अने केवली थइने केवलिविहारथी विचरु छुं. त्यार पछी भगवंत गौतमे ते जमालि अनगारने आ प्रमाणे कह्यु के–'हे जमालि ! खरेखर ए प्रमाणे केवलिनुं ज्ञान के दर्शन पर्वतथी स्तंभथी के स्तूपथी अवृत थतुं नथी, तेम निवारित थतुं नथी, हे जमालि ! जो तुं उत्पन्न थयेला ज्ञान, दर्शनने धारण करनार अर्हन्, जिन अने केवली थइने केवलिविहारथी विचरे छे तो आ बे प्रश्नोनो उत्तर आप. [प्र०] हे जमालि ! १ लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे? हे जमालि ! २ जीव शाश्वत छे के अशाश्वत छे? ज्यारे भगवंत गौतमे ते जमालि अनगारने पूर्व प्रमाणे पूछयुं त्यारे ते शंकित अने कांक्षित थयो, यावत् कलुषितपरिणामवाळो थयो. ज्यारे ते (जमालि) भगवंत गौतमना प्रश्नोनो कांइ पण उत्तर आपवा समर्थ न थयो त्यारे तेणे मौन धारण कर्युं.

जमालीति समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी–अत्थि णं जमाली! ममं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था जे णं एयं वागरणं वागरित्तए जहा णं अहं नो चेव णं एयप्पगारं भासं भासित्तए जहा णं तुमं, सासए लोए जमाली! जन्न कयावि णासी णो कयावि ण भवति ण कदावि ण भविस्सइ भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे, असासए लोए जमालि ! जओ ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ,सासए जीवे जमालि ! जं न कयाइ णासि जाव णिच्चे असासए जीवे जमाली! जन्नं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ मणुस्से भवित्ता देवे भवइ,

For Private and Personal Use Only

पछी श्रमण भगवान् महावीरे 'हे जमालि!' एम कहीने ते जमालि अनगारने आ प्रमाणे कह्यु के-'हे जमालि! मारे घणा श्रमण निर्ग्रंथ शिष्यो छद्मस्थ छे, तेओ मारी पेठे आ प्रश्नोनो उत्तर आपवा समर्थ छे, पण जेम तुं कहे छे तेम 'हुं सर्वज्ञ अने जिन छुं' एवी भाषा तेओ बोलता नथी. हे जमालि! लोक शाश्वत छे, कारण के 'लोक कदापि न हतो' एम नथी, 'कदापि लोक नथी' एम नथी, अने 'कदापि लोक नहि हशे' एम पण नथी. परन्तु लोक हतो, छे अने हशे. ते ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षत, अव्यय, अवस्थित अने नित्य छे. वळी हे जमालि! लोक अशाश्वत पण छे, कारण के अवसर्पिणी थइने उत्सर्पिणी थाय छे. उत्सर्पिणी थइने अवसर्पिणी थाय छे. हे जमालि! जीव शाश्वत छे, कारण के ते 'कदापि न हतो' एम नथी, 'कदापि नथी' एम नथी अने, 'कदापि नहि हशे' एम पण नथी, जीव यावद् नित्य छे. वळी हे जमालि! जीव अशाश्वत पण छे, कारण के नैरयिक थइने तिर्यंचयोनिक थाय छे, तिर्यंचयोनिक थइने मनुष्य थाय छे, अने मनुष्य थइने देव थाय छे.

तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहइ णो पत्तिएइ णो रोएइ एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चंपि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ दोच्चंपि आयाए अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणंच परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूयाइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणइ २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ अ० २ तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति २ तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसुदेवकिब्बिसियत्ताए

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उववन्ने ॥ (सूत्रं० ३८७) ॥

त्यारपछी ते जमालि अनगार आ प्रमाणे कहेता, यावत् ए प्रकारे प्ररूपणा करता श्रमण भगवान् महावीरनी आ वातनी श्रद्धा करतो नथी, प्रतीति करतो नथी, रुचि करतो नथी, अने आ बाबतनी अश्रद्धा करतो, अप्रतीति करतो अने अरुचि करतो पोते बीजी वार पण श्रमण भगवंत महावीर पासेथी नीकळे छे. नीकळीने घणा असद्–असत्य भावने प्रकट करवा वडे अने मिथ्यात्वना अभिनिवेश वडे पोताने, परने तथा बन्नेने भ्रान्त करतो अने मिथ्याज्ञानवाळा करतो घणा वरस सुधी श्रमण पर्यायने पाळे छे, पाळीने अर्धमासिकसंलेखनावडे आत्माने–शरीरने कृश करीने अनशनवडे त्रीश भक्तोने पूरा करी ते पापस्थानकने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय मरण समये काल करीने लान्तक देवलोकने विषे तेर सागरोपमनीस्थितिवाळा किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिक देवपणे उत्पन्न थयो. ॥ ३८७ ॥

तए णं से भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ ते० २ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमालिणामं अणगारे से णं भंते! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने?, गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं से णं तदा मम एवं आइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं णो सद्दहइ ३ एयमट्ठं असद्दहमाणे ३ दोच्चंपि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ २ बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं तं चेव जाव देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ॥ (सूत्रं ३८८) ॥

For Private and Personal Use Only

पछी ते जमालि अनगारने कालगत थयेला जाणीने भगवान् गौतम ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. अवीने श्रमण भगवान् महावीरने वांदे छे, नमे छे, वांदी-नमीने ते आ प्रमाणे बोल्या के-'हे भगवन्! ए प्रमाणे देवानुप्रिय एवा आपनो अंतेवासी कुशिष्य जमालि नामे अनगार हतो, ते काळ समये काळ करीने क्यां गयो-क्यां उत्पन थयो? [उ०] 'हे गौतमादि!' ए प्रमाणे कहीने श्रमण भगवंत महावीरे भगवान् गौतमने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे गौतम! मारो अंतेवासी कुशिष्य जमालि नामे अनगार हतो ते ज्यारे हुं ए प्रमाणे कहेतो हतो, यावत् प्ररूपणा करतो हतो त्यारे ते आ बाबतनी श्रद्धा करतो नहोतो, प्रतीति के रुचि करतो नहोतो. आ बाबतनी श्रद्धा, प्रतीति के रुचि न करतो फरीथी मारी पासेथी नीकळीने घणा असद्भूत-मिथ्या भावोने प्रकट करवावडे-इत्यादि यावत् किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थयो छे. ॥ ३८८ ॥

कतिविहा णं भंते! देवकिब्बिसिया पन्नत्ता?, गोयमा! तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, तंजहा-तिपलिओवमट्ठिइया तिसागरोवमट्ठिइया तेरससागरोवमट्ठिइया, कहिं णं भंते! तिपलिओवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति?, गोयमा! उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति। कहिं णं भंते! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति?, गोयमा! उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं हिट्ठिं सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति, कहिं णं भंते! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति?, गोयमा! उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतए कप्पे एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति। देवकिब्बिसिया णं भंते! केसु

कम्मादाणेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति ?, गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया उवज्झायपडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया संघपडिणीया आयरियउवज्झायाणं अयसकरा अवन्नकरा अकित्तिकरा बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च ३ वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणंति पा० तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति, तंजहा—तिपलिओवमट्ठितीएसु वा तिसागरोवमट्ठितीएसु वा तेरससागरोवमट्ठितीएसु वा ।

[प्र०] हे भगवन् ! किल्बिषिक देवो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारना किल्बिषिक देवो कह्या छे. ते आ प्रमाणे-त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा, त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा अने तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो कये ठेकाणे रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्योतिष्कदेवोनी उपर अने ईशानदेवलोकनी नीचे त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्म अने ईशानदेवलोकनी उपर तथा सनत्कुमार अने माहेन्द्र देवलोकनी नीचे त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे. [प्र०] हे भगवन् ! तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! ब्रह्मलोकनी उपर अने लांतक कल्पनी नीचे तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे. [प्र०] हे भगवन् ! किल्बिषिक देवो क्या कर्मना निमित्ते किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवो आचार्यना प्रत्यनीक (द्वेषी), उपाध्यायना

प्रत्यनीक, कुलप्रत्यनीक, गणप्रत्यनीक अने संघना प्रत्यनीक होय, तथा आचार्य अने उपाध्यायना अयश करनारा, अवर्णवाद करनारा, अने अकीर्ति करनारा होय, तथा घणा असत्य अर्थने प्रगट करवाथी अने मिथ्या कदाग्रहथी पोताने, परने अने बन्नेने भ्रान्त करता, दुर्बोध करता, घणा वरस सुधी साधुपणाने पाळे, अने पाळीने ते अकार्य स्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या सिवाय मरणसमये काल करीने कोइ पण किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. ते आ प्रमाणे—त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळामां, के तेर सागरोपमनी स्थितिवाळामां. (उत्पन्न थाय.)

देवकिब्बिसियाणं भंते! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति?, गोयमा! जाव चत्तारि पंच नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति जाव अंतं करेंति, अत्थेगइया अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति ॥ जमाली णं भंते! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी जाव तुच्छजीवी उवसंतजीवी पसंतजीवी विवित्तजीवी?, हंता गोयमा! जमाली णं अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी। जति णं भंते! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी कम्हा णं भंते! जमाली अणगारे कालमासे कालं किचा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने?, गोयमा! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए जाव वुप्पाएमाणे जाव बहूइं वासाइं सामन्नपरि-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यागं पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति तीसं० २ तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे जाव उववन्ने ॥ (सूत्रं० ३८९) ॥

[प्र०] हे भगवन् ! ते किल्बिषिक देवो आयुष्यनो क्षय थवाथी, भवनो क्षय थवाथी, स्थितिनो क्षय थवाथी, तरत ते देवलोकथी च्यवीने क्यां जाय-क्यां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते किल्बिषिक देवो नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवना चार के पांच भवो करी, एटलो संसार भ्रमण करीने त्यारपछी सिद्ध थाय, बुद्ध थाय अने यावद् दुःखोनो नाश करे. अने केटलाक किल्बिषिक देवो तो अनादि, अनंत अने दीर्घमार्गवाळा चारगति संसाराटवीमां भम्या करे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जमालि नामे अनगार रसरहित आहार करतो, विरसाहार करतो, अंताहार करतो, प्रांतहार करतो, रूक्षाहार करतो, तुच्छाहार करतो, अरसजीवी, विरसजीवी, यावत् तुच्छजीवी, उपशांतजीवनवाळो, प्रशांतजीवनवाळो, पवित्र अने एकान्त जीवनवाळो हतो ? [उ०] हे गौतम ! हा, जमालि नामे अनगार अरसाहारी, विरसाहारी यावद् पवित्रजीवनवाळो हतो. [प्र०] हे भगवन् ! जो जमालि नामे अनगार अरसाहारी, विरसाहारी अने यावद् पवित्र जीवनवाळो हतो तो हे भगवन् ! ते जमालि अनगार मरणसमये काल करीने लांतक देवलोकमां तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिक देवपणे केम उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! ते जमालि अनगार आचार्यनो अने उपाध्यायनो प्रत्यनीक हतो, तथा आचार्य अने उपाध्यायनो अयश करनार अवर्णवाद करनार हतो यावद् ते (मिथ्या अभिनिवेश वडे पोताने, परने अने उभयने भ्रान्त करतो) दुर्बोध करतो, यावत् घणा वरस सुधी श्रमणपणाने पाळीने अर्धमासिक संलेखना वडे शरीरने कृश करीने त्रीश भक्तोने अनशन वडे पूरा करीने ते स्थानकने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय काळसमये काळ करीने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लांतककल्पमां यावद् उत्पन्न थयो. ॥ ३८९ ॥

जमाली णं भंते! देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिइ ?, गोयमा! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति जाव अंतं काहेति। सेवं भंते सेवं भंते! त्ति ॥ (सू० ३९०) ॥ जमाली समत्तो ॥ ९ । ३३ ॥

[प्र०] हे भगवान्! ते जमालि नामे देव देवपणाथी, देवलोकथी, पोताना आयुषनो क्षय थया बाद यावत् क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! तिर्यंचयोनिक, मनुष्य, अने देवना चार पांच भवो करी-एटलो संसार भमी-त्यार पछी ते सिद्ध थशे, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करशे. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. (एम कही भगवंत गौतम! यावत् विहरे छे.) ॥३९०॥

भगवत् सुधर्मस्वामी प्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ९मा शतकमां ६ठा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ७

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी-पुरिसे णं भंते! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ नो पुरिसं हणइ?, गोयमा! पुरिसंपि हणइ नोपुरिसेवि हणति, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ पुरिसंपि हणइ नोपुरिसेवि हणइ?, गोयमा! तस्स णं एवं—भवइ एवं खलु अहं एगं पुरिसं हणामि, से णं एगं पुरिसं हणमाणे अणेगा-जीवा हणइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ पुरिसंपि हणइ नोपुरिसेवि हणति। पुरिसे णं भंते! आसं हणमाणे

For Private and Personal Use Only

किं आसं हणइ नोआसेवि हणइ ?, गोयमा! आसंपि हणइ नोआसेवि हणइ, से केणट्ठेणं अट्ठो तहेव, एवं हत्थिं सीहं वग्घं जाव चिल्ललगं।

[प्र०] ते काले-ते समये राजगृह नगरमां (भगवान् गौतमे) यावत् ए प्रमाणे पुछ्युं के-हे भगवन्! कोइ पुरुष घात करतो शुं पुरुषनोज घात करे के नोपुरुषनो घात करे? [उ०] हे गौतम! पुरुषनो पण घात करे अने यावत् नोपुरुषोनो (पुरुष शिवाय बीजा जीवोनो) पण घात करे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के-पुरुषनो घात करे अने यावत् नोपुरुषोनो पण घात करे? [उ०] हे गौतम! ते घात करनारना मनमां तो एम छे के 'हुं एक पुरुषने हणुं छुं', पण ते एक पुरुषने हणतो बीजा अनेक जीवोने हणे छे; माटे ते हेतुथी हे गौतम! एम कहुं छुं छे के ते पुरुषने पण हणे अने यावत् नोपुरुषोने पण हणे. [प्र०] हे भगवन्! अश्वने हणतो कोइ पुरुष शुं अश्वने हणे के नोअश्वोने (अश्व सिवाय बीजा जीवोने) पण हणे? [उ०] हे गौतम! ते अश्वने पण हणे अने नोअश्वोने पण हणे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो? [उ०] हे गौतम! उत्तर पूर्ववत् जाणवो. ए प्रमाणे हस्ती, सिंह, वाघ तथा यावत् चिल्ललक संबन्धे पण जाणवुं. ए बधानो एक सरखो पाठ जाणवो.

पुरिसे णं भंते! अन्नयरं तसपाणं हणमाणे किं अन्नयरं तसपाणं हणइ नोअन्नयरे तसपाणे हणइ ?, गोयमा! अन्नयरंपि तसपाणं हणइ नोअन्नयरेवि तसे पाणे हणइ, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अन्नयरंपि तसं पाणं नोअन्नयरेवि तसे पाणे हणइ ?, गोयमा! तस्स णं एवं भवइ एवं खलु अहंएगं अन्नयरं तसं पाणं हणामि, से णं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! तं चेव एए सव्वेवि एक्कगमा। पुरिसे णं भंते! इसिं हणमाणे किं इसिं हणइ नोइसिं हणइ ?, गोयमा! इसिंपि हणइ नोइसिंपि हणइ, से केणट्ठेणं भंते! एवं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वुच्चइ जाव नोइसिंपि हणइ?, गोयमा! तस्स णं एवं भवइ एवं खलु अहं एगं इसिं हणामि, से णं एगं इसिं हणमाणे अणंते जीवे हणइ से तेणट्ठेणं निक्खेवओ। पुरिसे णं भंते! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे नो पुरिसवेरेणं पुट्ठे?, गोयमा! नियमा ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे अहवा पुरिसवेरेण य णोपुरिसवेरेण य पुट्ठे अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे, एवं आसं एवं जाव चिल्ललगं जाव अहवा चिल्ललगवेरेण य णोचिल्ललगवेरेहि य पुट्ठे, पुरिसे णं भंते! इसिं हणमाणे किं इसिवेरेणं पुट्ठे नोइसिवेरेणं पुट्ठे?, गोयमा! नियमा इसिवेरेण य नोइसिवेरेहि य पुट्ठे ॥ (सूत्रं० ३९१) ॥

[प्र०] हे भगवन्! कोइ पुरुष कोइ एक त्रस जीवने हणतो शुं ते त्रस जीवने हणे के ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे? [उ०] हे गौतम! ते कोइ एक त्रस जीवने पण हणे, अने ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे. [उ०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के 'ते कोई एक त्रस जीवने हणे अने ते शिवाय बीजा त्रस जीवने पण हणे'? [उ०] हे गौतम! ते हणनारना मनमां ए प्रमाणे होय छे के 'हुं कोइ एक त्रस जीवने हणुं छुं', पण ते कोई एक त्रस जीवने हणतो ते शिवाय बीजा अनेक त्रस जीवोने हणे छे. माटे हे गौतम! इत्यादि पूर्ववत् जाणवुं. ए बधाना एक सरखा पाठ कहेवा. [प्र०] हे भगवन्! ऋषिने हणतो कोई पुरुष शुं ऋषिने हणे के ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे? [उ०] हे गौतम! ऋषिने हणे अने ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के यावद् ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे? [उ०] हे गौतम! ते हणनारना मनमां एम होय छे के 'हुं एक ऋषिने हणुं छुं'', पण ते एक ऋषिने हणतो अनंत जीवोने हणे छे, ते हेतुथी एम कहेवाय छे—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यादि उपसंहार जाणवो. [प्र०] हे भगवन्! कोइ पुरुष बीजा पुरुषने हणतो शुं पुरुषना वैरथी बन्धाय के नोपुरुषना (पुरुष शिवाय बीजा जीवोना) वैरथी बन्धाय? [उ०] हे गौतम! ते अवश्य पुरुषना वैरथी बन्धाय, १ अथवा पुरुषना वैरथी अने नोपुरुषना वैरथी बन्धाय, २ अथवा पुरुषना वैरथी अने नोपुरुषना वैरोथी बन्धाय. ए प्रमाणे अश्वसंबन्धे अने यावत् चिल्ललक संबन्धे पण जाणवुं. यावत् अथवा चिल्ललकना वैरथी अने नोचिल्ललकना वैरोथी बन्धाय. [प्र०] हे भगवन्! ऋषिनो वध करनार पुरुष शुं ऋषिना वैरथी बन्धाय के नोऋषिना वैरथी बन्धाय? [उ०] हे गौतम! ते अवश्य ऋषिना वैरथी अने नोऋषिना वैरोथी बन्धाय. ॥३९१॥

पुढविकाइया णं भंते! पुढविकायं चेव आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा?, हंता गोयमा! पुढविकाइए पुढविकाइयं चेव आणमंति वा जाव नीससंति वा। पुढवीकाइए णं भंते! आउकाइयं आणमंति वा जाव नीससंति?, हंता गोयमा! पुढविकाइए आउकाइयं आणमंति वा जाव नीससंति वा, एवं तेउकाइयं वाउकाइयं एवं वणस्सइकाइयं। आउकाइए णं भंते! पुढवीकाइयं आणमंति वा पाणमंति वा?, एवं चेव, आउकाइए णं भंते! आउकाइयं चेव आणमंति वा?, एवं चेव, एवं तेउवाऊवणस्सइकाइयं। तेऊकाइए णं भंते! पुढविकाइयं आणमंति वा?, एवं जाव वणस्सइकाइए णं भंते! वणस्सइकाइयं चेव आणमंति वा तहेव। पुढविकाइए णं भंते! पुढविकाइयं चेव आणममाणे वा पाणममाणे वा ऊससमाणे वा नीससमाणे वा कइकिरिए?, गोयमा! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए, पुढविकाइए णं भंते! आउकाइयं आणममाणे वा०? एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइयं, एवं आउकाइएणवि सव्वेवि भाणियव्वा, एवं तेउकाइएणवि, एवं वाउकाइएणवि, जाव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वणस्सइकाइए णं भंते! वणस्सइकाइयं चेव आणममाणे वा ?, पुच्छा, गोयमा! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए ॥ (सूत्रं० ३९२) ॥

[प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] हे गौतम ! हा, पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव अप्कायिकने आनप्राणरूपे -श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] हा, गौतम ! पृथिवीकायिक अप्कायिकने श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे, यावत् मूके. ए प्रमाणे अग्निकाय, वायुकायिक अने वनस्पतिकायिकसंबन्धे प्रश्नो करवा. [प्र०] हे भगवन् ! अप्कायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] एरीते पूर्व प्रमाणे जाणवु. [प्र०] हे भगवन् ! अप्कायिक जीव अप्कायिकने आनप्रणरूपे--श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे तेजःकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय संबन्धे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! अग्निकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? ए प्रमाणे यावत् [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] उत्तर पूर्ववत् जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो अने मूकतो केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव अप्कायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो (केटली क्रियावाळो होय ?) [उ०] इत्यादि पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावद् वनस्पति-

For Private and Personal Use Only

कायिक संबन्धे पण जाणवुं. तथा ए प्रमाणे अप्कायिकनी साथे सर्व पृथिवीकायादिकनो संबन्ध कहेवो. तेज प्रकारे तेजःकायिक अने वायुकायिकनी साथे सर्वनो संबन्ध कहेवो. यावत् [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिकने आनप्राणरूपे-श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो (अने मूकतो केटली क्रियावाळो होय ?) [उ०] हे गौतम ! ते कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो पण होय. ॥ ३९२ ॥

वाउकाइए णं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?, गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए। एवं कंदं, एवं जाव मूलं बीयं पचालेमाणे वा पुच्छा, गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए। सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्रं ३९३) ॥ नवमं सयं समत्तं ॥ ९ । ३४ ॥

[प्र०] हे भगवन् ! वायुकायिक जीव वृक्षना मूळने कंपावतो के पाडतो केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो होय, कदाच चारक्रियावाळो होय अने कदाच पांचक्रियावाळो पण होय. ए प्रमाणे यावत् कंद संबन्धे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् [प्र०] बीजने कंपावतो-इत्यादि संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. ॥ ३९३ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ९ मा शतकमां ७ मा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

॥ इति श्रीमदभयदेवसूरिविरचितवृत्तियुतं नवमं शतकं समाप्तं ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शतक १० (उद्देशक १)

दिसि १ संवुडअणगारे २ आयड्ढी ३ सामहत्थि ४ देवि ५ सभा ६। उत्तरअंतरदीवा २८ दसमंमि सयंमि चोत्तीसा ॥ ३४ ॥

(उद्देशक संग्रह–) १ दिशा, २ संवृत अनगार, ३ आत्मऋद्धि, ४ श्यामहस्ती, ५ देवी, ६ सभा अने ७–३४ उत्तर दिशाना अन्तरद्वीपो–ए सबन्धे दशमां शतकमां चोत्रीश उद्देशको छे. (१ दिशा संबंधे प्रथम उद्देशक, २ संवृत (संवरयुक्त) अनगारादि विषे बीजो उद्देशक, ३ आत्म ऋद्धि–पोतानी शक्ति–थी देवो देवावासोने उल्लंघन करे'–इत्यादि संबन्धे त्रीजो उद्देशक, ४ श्यामहस्ति नामे श्रीमहावीरना शिष्यना प्रश्न संबन्धे चोथो उद्देशक, ५ देवी–चमरादि इन्द्रनी अग्रमहिषी–संबन्धे पांचमो उद्देशक, ६ सभा–सुधर्मा सभा–संबंधे छट्ठो उद्देशक अने ७–३४ उत्तर दिशाना अठ्यावीश अन्तरद्वीपो संबन्धी सातथी चोत्रीश उद्देशको छे.)

रायगिहे जाव एवं वयासी–किमियं भंते! पाईणत्ति पवुच्चई?, गोयमा! जीवा चेव अजीवा चेव, किमियं भंते! पडीणाति पवुच्चई?, गोयमा! एवं चेव, एवं दाहिणा एवं उदीणा एवं उड्ढा एवं अहोवि। कति णं भंते! दिसाओ पण्णत्ताओ?, गोयमा! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–पुरच्छिमा १ पुरच्छिमदाहिणा २ दाहिणा ३ दाहिणपच्चत्थिमा ४ पच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमुत्तरा ६ उत्तरा ७ उत्तरपुरच्छिमा ८ उड्ढा ९ अहो १०। एयासि णं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भंते ! दसण्हं दिसाणं कति णामधेज्जा पण्णत्ता ?, गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा-इंदा १ अग्गेयी २ जमा य३ नेरती४ वारुणी५ य वायव्वा६। सोमा७ ईसाणी य८ विमला य९ तमा य१० बोद्धव्वा ॥१॥ (६२३२०) इंदा णं भंते ! दिसा किं जीवा जीवदेसा जीवपएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा ?, गोयमा ! जीवावि ३ तं चेव जाव अजीवपएसावि, जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया, जे जीवदेसा तेनियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा, जे जीवपएसा ते एगिंदियपएसा बेइंदियपएसा जाव अणिंदियपएसा, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-रूवी अजीवा य अरूवी अजीवा य, जे रूवी अजीवा ते चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा-खंधा १ खंधदेसा २ खंधपएसा ३ परमाणुपोग्गला ४, जे अरूवी अजीवा ते सत्तविहा तेपत्ता, तंजहा-नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्सपएसा नो अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थियस्स पएसा नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पएसा अद्धासमए ॥

[प्र०] राजगृह नगरमां (गौतम) यावत् आ प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! आ पूर्वदिशा ए शुं कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवरूप अने अजीवरूप कहेवाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! आ पश्चिम दिशा ए शुं कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे दक्षिण दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्वदिशा, अने अधोदिशा संबन्धे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! केटली दिशाओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! दश दिशाओ कही छे; ते आ प्रमाणे--१ पूर्व, २ पूर्वदक्षिण (अग्नि कोण), ३ दक्षिण, ४ दक्षिणपश्चिम (नैर्ऋत कोण), ५ पश्चिम, ६ पश्चिमोत्तर (वायव्य कोण), ७ उत्तर, ८ उत्तरपूर्व (ईशान कोण), ९ ऊर्ध्व अने १० अधो दिशा.

For Private and Personal Use Only

[प्र०] हे भगवन्! ए दश दिशाओनां केटलां नाम कह्यां छे? [उ०] हे गौतम! दश नाम कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-१ एन्द्री (पूर्व), २ आग्नेयी (अग्नि कोण), ३ याम्या (दक्षिण), ४ नैर्ऋती (नैर्ऋतकोण), ५ वारुणी (पश्चिम), ६ वायव्य,। ७ सोम्या (उत्तर), ८ ऐशानी (ईशान कोण), ९ विमला (उर्ध्व दिशा), अने १० तमा (अधो दिशा). ए दिशाना नामो अनुक्रमे जाणवां. [प्र०] हे भगवन्! ऐन्द्री (पूर्व) दिशा शुं १ जीवरूप छे, २ जीवना देशरूप छे के जीवना प्रदेशरूप छे? अथवा १ अजीवरूप छे, २ अजीवना देशरूप छे के ३ अजीवना प्रदेशरूप छे? [उ०] हे गौतम! ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे यावत् अजीवप्रदेशरूप पण छे. तेमां जे जीवो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, यावत् पंचेन्द्रिय, तथा अनिन्द्रिय (सिद्धो) छे. जे जीवना देशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशो छे, यावद् अनिंद्रिय-मुक्तजीवना देशो छे. जे जीवप्रदेशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना प्रदेशो छे, बेइन्द्रियजीवना प्रदेशो छे, यावद् अनिन्द्रिय (मुक्त) जीवना प्रदेशो छे. वळी जे अजीवो छे ते बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-एक रूपिअजीव अने अरूपिअजीव. तेमां जे रूपिअजीवो छे ते चार प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ स्कंध, २ स्कंध देश, ३ स्कंधप्रदेश अने ४ परमाणु पुद्गल. तथा जे अरूपिअजीवो छे ते सात प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ नोधर्मास्तिकायरूप धर्मास्तिकायनो देश, २ धर्मास्तिकायनो प्रदेशो, ३ नोअधर्मास्तिकायरूप अधर्मास्तिकायनो देश, ४ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ नो आकाशास्तिकायरूप आकाशास्तिकायनो देश, ६ आकाशास्तिकायना प्रदेशो, अने ७ अद्धासमय (काल).

अग्गेई णं भंते! दिसा किं जीवा जीवदेसा जीवपएसा? पुच्छा, गोयमा! णो जीवा जीवदेसावि १ जीवपएसावि २ अजीवावि १ अजीवदेसावि २ अजीवपएसावि ३, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदि-

यदेसा अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे १ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसा २ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा ३ अहवा एगिंदियदेसा तेइंदियस्स देसे एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो, जे जीवपएसा ते नियमा एगिंदियपएसा अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियस्स पएसा अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पएसा एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता,तंजहा-रूविअजीवा य अरूवीअजीवा य, जे रूवीजीवा ते चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा-खंधा जाव परमाणुपोग्गला ४, जे अरूवी अजीवा ते सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा-नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पएसा एवं अधम्मत्थिकायस्सवि जाव आगासत्थिकायस्स पएसा अद्धासमए । विदिसासु नत्थि जीवा देसे भंगो य होइ सव्वत्थ ॥ जमा णं भंते ! दिसा किं जीवा जहा इंदा तहेव निरवसेसा, नेरई य जहा अग्गेयी, वारुणी जहा इंदा,वायव्वा जहा अग्गेयी, सोमा जहा इंदा, ईसाणी जहा अग्गेयी, विमलाए जीवा जहा अग्गेयी, अजीवा जहा इंदा, एवं तमाएवि, नवरं अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो न भन्नति ॥ (सूत्रं ३९४)

[प्र०] हे भगवन् ! आग्नेयी दिशा (अग्निकोण) शुं १ जीवरूप छे, २ जीवदेशरूप छे के ३ जीवप्रदेशरूप छे-इत्यादि प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! १ नोजीवरूप जीवना देश अने २ जीवना प्रदेशरूप छे, ३ अजीवरूप छे, ४ अजीवना देशरूप छे अने ५ अजीवना प्रदेशरूप पण छे. तेमां जे जीवना देशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशो छे, १ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रयजीवनो देश छे, २ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियना देशो छे; ३ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियोना देशो

छे. १ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने त्रीन्द्रियनो देश छे--इत्यादि पूर्व प्रमाणे अहिं त्रण विकल्पो जाणवा. ए प्रमाणे यावद् अनिंद्रिय सुधी त्रण विकल्पो-भांगा कहेवा. तेमां जे जीवना प्रदेशो छे. ते अवश्य एकेन्द्रियोना प्रदेशो छे, १ अथवा एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियना प्रदेशो छे, २ अथवा एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियोना प्रदेशो छे. ए प्रमाणे सर्वत्र प्रथम भांगा सिवाय बे भांगा जाणवा, ए प्रमाणे यावद् अनिंद्रिय सुधी जाणवुं. हवे जे अजीवो छे ते बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-रूपिअजीव अने बीजा अरूपिअजीव. जे रूपिअजीवो छे ते चार प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ स्कंधो, यावत् ४ परमाणुपुद्गलो. तथा जे अरूपिअजीवो छे ते सात प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ नोधर्मास्तिकायरूप धर्मास्तिकायनो देश, २ धर्मास्तिकायना प्रदेशो; ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं; यावत् आकाशास्तिकायना प्रदेशो अने अद्धासमय. विदिशाओमां जीवो नथी, माटे सर्वत्र देशविषयक भांगो जाणवो. [प्र०] हे भगवन्! याम्या (दक्षिण) दिशा शुं जीवरूप छे-इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न. [उ०] हे गौतम! जेम ऐन्द्री दिशा संबन्धे कह्युं (सू. ६) तेम सर्व अहीं जाणवुं. जेम आग्नेयी दिशा संबन्धे कह्युं (सू. ७) ते प्रमाणे नैर्ऋती दिशा माटे जाणवुं. जेम ऐन्द्री दिशा संबन्धे कह्युं तेम वारुणी (पश्चिम) दिशा माटे जाणवुं. वायव्यदिशाने आग्नेयीनी पेठे जाणवुं. ऐन्द्रीनी पेठे सौम्या अने आग्नेयीनी पेठे ऐशानी दिशा जाणवी. तथा विमला-ऊर्ध्वदिशा-मां जेम आग्नेयीमां जीवो कह्या तेम जीवो अने ऐन्द्रीमां अजीवो कह्या तेम अजीवो जाणवा. ए प्रमाणे तमा-अधोदिशा-ने विषे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, तमा दिशामां अरूपिअजीवो छ प्रकारना छे, कारण के त्यां अद्धासमय (काल) नथी. ॥ २९४ ॥

कति णं भंते! सरीरा पन्नत्ता?, गोयमा! पंच सरीरा पन्नत्ता, तंजहा-ओरालिए जाव कम्मए। ओरालिय-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरीरे णं भंते! कतिविहे पन्नत्ते?, एवं ओगाहणसंठाणं निरवसेसं भाणियव्वं जाव अप्पाबहुगंति। सेवं भंते! सेवं भंतेत्ति (सूत्रं० ३९५) दसमे सए पढमो उद्देसो सत्तमो ॥ १० । १ ॥

[प्र०] हे भगवन्! शरीरो केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम! शरीरो पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ औदारिक, (२ वैक्रिय, ३ आहारक, ४ तैजस) यावत् ५ कार्मण. [प्र०] हे भगवन्! औदारिक शरीर केटला प्रकारे कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! अहिं सर्व 'अवगाहनासंस्थान' पद अल्पबहुत्व सुधी कहेवुं. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. (एम कही यावत् भगवान् गौतम विहरे छे) ॥ ३९५ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना १० मा शतकमां प्रथम उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक २.

रायगिहे जाव एवं वयासी-संवुडस्स णं भंते! अणगारस्स वीयीपंथे ठिचा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स अहे रूवाइं आलोएमाणस्स तस्स णं भंते! किं ईरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ?, गोयमा! संवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपंथे ठिचा जाव तस्स णं णो ईरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ संवुड० जाव संपराइया किरिया कज्जइ?, गोयमा! जस्स णं कोहमाणमायालोभा एवं जहा स-

त्तमसए पढमोद्देसए जाव से णं उस्सुत्तमेव रीयति, से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जइ। संवुडस्स णं भंते! अणगारस्स अवीयीपंथे ठिचा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव तस्स णं भंते! किं ईरियावहिया किरिया कज्जइ?, पुच्छा, गोयमा! संवुड० जाव तस्स णं ईरियावहिया किरिया कज्जइ नो संपराइया किरिया कज्जइ, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जहा सत्तमे सए पढमोद्देसए जाव से णं अहासुत्तमेव रीयति से तेणट्ठेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥ (सूत्रं० ३९६) ॥

[प्र०] राजगृह नगरमां यावत् (गौतम) ए प्रमाणे बोल्या–हे भगवन्! वीचिमार्गमां–कषायभावमां–रहीने आगळ रहेलां रूपोने जोता, पाछळना रूपोने देखता, पडखेना रूपोने अवलोकता,ऊंचेना रूपोने आलोकता अने नीचेना रूपोने अवलोकता संवृत (संवरयुक्त) अनगारने शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे? [उ०] हे गौतम! वीचिमार्गमां (कषायभावमां) रहीने यावत् रूपोने जोता संवृत अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के संवृत अनगारने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे? [उ०] हे गौतम! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ क्षीण थया होय तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे–इत्यादि सप्तम शतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् 'ते संवृत अनगार सूत्र विरुद्ध वर्ते छे' त्यांसुधी कहेवुं. माटे हे गौतम! ते हेतुथी तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे छे. [प्र०] हे भगवन्! अवीचिमार्गमां–अकषायभावमां–रहीने आगळना रूपोने जोता, यावत् अवलोकता संवृत अनगारने शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे? [उ०] हे गौतम! यावत् अकषायभावमां रहीने आगळ रूपोने जोता यावत् ते संवृत अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लागे, पण सांपरायिकी क्रिया न लागे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के ते अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे पण सांपरायिकी क्रिया न लागे? [उ०] हे गौतम! 'जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ क्षीण थया छे तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे-इत्यादि जेम सप्तम शतकना प्रथम उद्देशकमां (उ० १. सू० १८.) कह्युं छे तेम अहीं पण यावत् 'ते अनगार सूत्रानुसारे वर्ते छे' त्यांसुधी कहेवुं, हे गौतम! ते हेतुथी तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागती नथी. ॥ ३९६ ॥

कइविहा णं भंते! जोणी पन्नत्ता?, गोयमा! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तंजहा—सीया उसिणा सीतोसिणा, एवं जोणीपयं निरवसेसं भाणियव्वं ॥ (सूत्रं ३९७)

[प्र०] हे भगवन्! योनि केटला प्रकारनी कही छे? [उ०] हे गौतम! योनि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-शीत, उष्ण अने शीतोष्ण. ए प्रमाणे अहीं समग्र योनिपद कहेवुं. ॥ ३९७ ॥

कतिविहा णं भंते! वेयणा पन्नत्ता?, गोयमा! तिविहा वेयणा पन्नत्ता, तंजहा—सीया उसिणा सीओसिणा, एवं वेयणापयं निरवसेसं भाणियव्वं जाव नेरइयाणं भंते! किं दुक्खं वेदणं वेदेंति सुहं वेयणं वेयंति अदुक्खमसुहं वेयणं वेयंति?, गोयमा! दुक्खंपि वेयणं वेयंति सुहंपि वेयणं वेयंति अदुक्खमसुहंपि वेयणं वेयंति ॥ (सूत्रं ३९८)

[प्र०] हे भगवन्! वेदना केटला प्रकारनी कही छे? [उ०] हे गौतम! वेदना त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—शीत, उष्ण अने शीतोष्ण. ए प्रमाणे अहीं संपूर्ण वेदनापद कहेवुं. यावत्—[प्र०] हे भगवन्! नैरयिको शुं दुःखपूर्वक वेदना वेदे छे, सुखपूर्वक वेदना वेदे छे के सुख-दुःख शिवाय वेदना वेदे छे? [उ०] हे गौतम! नैरयिको दुःखपूर्वक वेदना वेदे छे, सुखपूर्वक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेदना वेदे छे अने सुखदुःख सिवाय पण वेदना वेदे छे. ॥ ३९८ ॥

मासियण्णं भंते! भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठे काये चियत्ते देहे, एवं मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा [जाव दसाहिं] जाव आराहिया भवइ। (सूत्रं ३९९)

[प्र०] हे भगवन्! जे अनगारे मासिक भिक्षु प्रतिमाने स्वीकारेली छे, अने हमेशां शरीरना ममत्वनो त्याग कर्यो छे—देहनो त्याग कर्यो छे—इत्यादि मासिक भिक्षु प्रतिमानो संपूर्ण विचार अहिं दशाश्रुत स्कंधमां बताव्या प्रमाणे यावत् (बारमी प्रतिमा) 'आराधी होय छे' त्यांसुधी जाणवो. ॥ ३९९ ॥

भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा, भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ पच्छावि णं अहं चरमकालसमयंसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि सेमिणं, तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते जाव नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा, भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ-जइ ताव समणोवासगावि कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति किमंग-पुण अहं अणपन्नियदेवत्तणंपि नो लभिस्सामित्तिकट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा। सेवं सेवं भंते!

For Private and Personal Use Only

सेवं भंतेत्ति। (सूत्रं ४००) १०।२

जो ते भिक्षु कोइ एक अकृत्यस्थानने सेवीने अने ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन तथा प्रतिक्रमण कर्या विना काल करे तो तेने आराधना थती नथी, परन्तु जो ते ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण करीने काल करे तो तेने आराधना थाय छे. वळी कदाच कोइ भिक्षुए अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्युं होय, पछी तेना मनमां एम विचार थाय के 'हुं मारा अंतकालना समये ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन करीश, यावत् तपरूप प्रायश्चित्तनो स्वीकार करीश,' त्यारपछी ते भिक्षु ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या विना मरण पामे तो तेने आराधना थती नथी, अने जो ते भिक्षु ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण करी काल करे तो तेने आराधना थाय छे. वळी कोइ भिक्षु कोइ एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन करी पछी मनमां एम विचारे के, 'जो श्रमणोपासको पण मरणसमये काल करीने कोइ एक देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थाय छे, तो शुं हुं अणपन्निकदेवपणुं पण नहि पामुं,' एम विचारीने ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या विना जो काल करे तो तेने आराधना थती नथी, अने जो ते अकृत्यस्थानने आलोची तथा प्रतिक्रमी पछी काल करे तो तेने आराधना थाय छे. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. (एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.) ॥ ४०० ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना १० मा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्देशक ३.

रायगिहे जाव एवं वयासी—आइड्ढीए णं भंते! देवे जाव चत्तारि पंच देवा वासंतराइं वीतिकंते तेण परं परिड्ढीए ?, हंता गोयमा! आइड्ढीए णं तं चेव, एवं असुरकुमारेवि, नवरं असुरकुमारावासंतराइं सेसं तं चेव, एवं एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे, एवं वाणमंतरे जोइसवेमाणिय जाव तेण परं परिड्ढीए। अप्पड्ढीए णं भंते! देवे से महिड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवइज्जा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे। समिड्ढीए णं भंते! देवे समड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवइज्जा. से णं भंते! किं विमोहित्ता पभू अविमोहित्ता पभू ?, गोयमा! विमोहेत्ता पभू, नो अविमोहेत्ता पभू। से भंते! किं पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा पुव्विं वीइवएत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?, गोयमा! पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, णो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा।

[प्र०] राजग्रह नगरमां (भगवान् गौतम) यावत् आ प्रमाणे बोल्या के–हे भगवन्! शुं देव पोतानी शक्तिवडे यावत् चार पांच देवावासोने उल्लंघन करे अने त्यारपछी बीजानी शक्तिवडे उल्लंघन करे? [उ०] हा, गोतम! पोतानी शक्तिवडे चार पांच देवावासोनुं उल्लंघन करे–इत्यादि पूर्व प्रमाणे कहेवुं. ए प्रमाणे असुरकुमार संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु ते आत्मशक्तिथी असुरकुमारोना आवासोनुं उल्लंघन करे. बाकी सर्व पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए रीते आ अनुक्रमथी यावत् स्तनितकुमार, वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक सुधी

For Private and Personal Use Only

जाणवुं. 'तेओ यावत् चार पांच देवावासोनुं उल्लंघन करे अने त्यारपछी आगळ परनी शक्तिथी उल्लंघन करे' त्यांसुधी जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पऋद्धिक-अल्पशक्तिवाळो देव महर्द्धिक-महाशक्तिवाळा देवनी वच्चे थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. (अर्थात् ते वच्चोवच्च थइने न जाय.) [प्र०] हे भगवन् ! समर्द्धिक-समानशक्तिवाळो-देव समानशक्तिवाळा देवनी वच्चे थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. पण जो ते प्रमत्त (असावधान) होय तो तेनी वच्चे थईने जाय. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते देव सामेना देवने विमोह पमाडीने जइ शके, के विमोह पमाड्या सिवाय जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! ते देव सामेना देवने विमोह पमाडीने जइ शके, पण विमोह पमाड्या सिवाय न जई शके. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय के पहेलां जइने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम ! ते देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय, पण पहेलां जइने पछी विमोह न पमाडे.

महिड्ढीए णं भंते ! देवे अप्पड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?, हंता वीइवएज्जा, से णं भंते ! किं विमोहित्ता पभू अविमोहेत्ता पभू ?, गोयमा ! विमोहेत्तावि पभू अविमोहेत्तावि पभू, से भंते ! किं पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीइवइज्जा पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?, गोयमा ! पुव्विं वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा पुव्विं वीइवएज्जा पच्छा विमोहेज्जा। अप्पिड्ढीए णं भंते ! असुरकुमारे महड्ढीयस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, एवं असुरकुमारेवि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएणं देवेणं भणिया, एवं जाव थणियकुमाराणं, वाणमंतरजोइसियवेमाणिएणं एवं चेव। अप्पड्ढिए णं भंते ! देवे मह-

ड्डियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे,

[प्र०] हे भगवन् ! महर्द्धिक-महाशक्तिवाळो देव अल्पशक्तिवाळा देवनी वचोवच थईने जाय ? [उ०] हा, गौतम ! जाय. [प्र०] हे भगवन् ! ते महर्द्धिक देव शुं ते अल्पशक्तिवाळा देवने विमोह पमाडीने जइ शके के विमोह पमाड्या विना जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! विमोह पमाडीने पण जइ शके अने विमोह पमाड्या विना पण जइ शके. [प्र०] हे भगवन् ! ते महर्द्धिक देव शुं पूर्वे विमोह पमाडीने पछी जाय के पूर्वे जाय अने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम ! ते महर्द्धिक देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जय, के पहेलां जइने पछी विमोह पमाडे. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळो असुरकुमार महाशक्तिवाळा असुरकुमारनी वचोवच थइने जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे सामान्य देवनी पेठे असुरकुमारना पण त्रण आलापक कहेवा. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी कहेवुं. तथा वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोने पण ए प्रमाणे कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळो देव महाशक्तिवाळी देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी; अर्थात् न जाय.

समड्ढिए णं भंते ! देवीए मज्झंमज्झेणं० एवं तहेव देवेण य देवीण य दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाए। अप्पड्ढिया णं भंते ! देवी महड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं एवं एसोवि तइओ दंडओ भाणियव्वो जाव महड्ढिया वेमाणिणी अप्पड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?, हंता वीइवएज्जा। अप्पड्ढिया णं भंते! देवी महिड्ढीयाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, एवं समड्ढिया देवी समड्ढियाए देवीए, तहेव, महड्ढियावि देवी अप्पड्ढियाए देवीए तहेव, एवं एक्केके तिन्नि २ आलावगा भाणियव्वा जाव महड्ढीया णं भंते ! वेमा-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णिणी अप्पड्ढीयाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?, हंता वीइवएज्जा, सा भंते! किं विमोहित्ता पभू तहेव जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा एए चत्तारि दंडगा ॥ (सू० ४०१) ॥

[प्र०] हे भगवन्! समानशक्तिवाळो देव समानशक्तिवाळी देवीनी वच्चोवच्च थइने जाय? [उ०] हे गौतम! ए प्रमाणे पूर्वनी पेठे देवनी साथे देवीनो दंडक कहेवो, यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! अल्पशक्तिवाळी देवी महाशक्तिवाळा देवनी वचोवच थइने जाय? [उ०] हे गौतम! न जाय, ए प्रमाणे अहीं त्रीजो दंडक पूर्व प्रमाणे कहेवो; यावत्-[प्र०] 'हे भगवन्! महाशक्तिवाळी वैमानिक देवी अल्पशक्तिवाळा वैमानिक देवनी वचोवच थइने जाय? [उ०] हा, गौतम! जाय.' [प्र०] हे भगवन्! अल्पशक्तिवाळी देवी मोटी शक्तिवाळी देवीनी वच्चोवच्च थइने जाय? [उ०] हे गौतम! आ अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे समानशक्तिवाळी देवीनो समानशक्तिवाळी देवी साथे, तथा महाशक्तिवाळी देवीनो अल्पशक्तिवाळी देवी साथे ते प्रमाणे आलापक कहेवा, अने ए रीते एक एकना त्रण त्रण आलापक कहेवा. यावत्-[प्र०] 'हे भगवन्! मोटीशक्तिवाळी वैमानिक देवी अल्पशक्तिवाळी वैमानिक देवीनी वचोवच थइने जाय? [उ०] हा, गौतम! जाय; यावत्-[प्र०] 'हे भगवन्! शुं ते महाशक्तिवाळी देवी विमोह पमाडीने जइ शके (के विमोह पमाड्या विना जइ शके? वळी पहेलां विमोह पमाडे, अने पछी जाय के पहेलां जाय अने पछी विमोह पमाडे? [उ०] हे गौतम) पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् 'पूर्वे जाय अने पछीथी विमोह पमाडे' त्यां सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे ए चार दंडक कहेवा. ॥ ४०१ ॥

आसस्स णं भंते! धावमाणस्स किं खुखुत्ति करेति?, गोयमा! आसस्स णं धावमाणस्स हिदयस्स जग-

For Private and Personal Use Only

यस्स य अंतरा एत्थ णं कब्बडए नामं वाए संमुच्छइ जेणं आसस्स धावमाणस्स खुखुत्ति करेइ ॥ (सू० ४०२)

[प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे घोडो दोडतो होय त्यारे ते 'खु खु' शब्द केम करे छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे घोडो दोडतो होय छे, त्यारे हृदय अने यकृत् (लीव्हर)-नी वच्चे कर्कटनामे वायु उत्पन्न थाय छे. अने तेथी घोडो दोडतो होय छे त्यारे ते 'खु खु' शब्द करे छे. ॥ ४०२ ॥

अह भंते ! आसइस्सामो सइस्सामो चिट्ठिस्सामो निसिइस्सामो तुयट्टिस्सामो आमंतणि आणवणी जायणि तह पुच्छणी य पण्णवणी । पच्चक्खाणी भासा भासा इच्छाणुलोमा य ॥ १ ॥ अणभिग्गहिया भासा भासा य अभिग्गहंमि बोद्धव्वा । संसयकरणी भासा वोयडमव्वोयडा चेव ॥ २ ॥ पन्नवणी णं एसा न एसा, भासा मोसा?, हंता गोयमा ! आसइस्सामो तं चेव जाव न एसा भासा मोसा । सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्र ४०३) दसमे सए तईओ उद्देसो ॥ १०—३ ॥

[प्र०] हे भगवन् ! अमे आश्रय करीशुं, शयन करीशुं, उभा रहीशुं, बेसीशुं, (पथारीमां) आळोटशुं—इत्यादि भाषा "१ आमंत्रणी, २ आज्ञापनी, ३ याचनी, ४ प्रच्छनी, ५ प्रज्ञापनी, ६ प्रत्याख्यानी, ७ इच्छानुलोमा ८ अनभिगृहीत, ९ अभिगृहीत, १० संशयकरणी, ११ व्याकृता, अने १२ अव्याकृता भाषा छे." तेमांनी आ प्रज्ञापनी भाषा कहेवाय ? अने ए भाषा मृषा (असत्य) न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! 'आश्रय करीशुं'-इत्यादि भाषा पूर्ववत् कहेवाय, पण मृषा भाषा न कहेवाय. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. (एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे;) ॥ ४०३ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना १० मा शतकमां त्रीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ४

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नाम नयरे होत्था वन्नओ, दूतिपलासए चेइए, सामी समोसढे, जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नामं अणगारे पयइभद्दए जहा रोहे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ, तए णं से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव उट्ठाए उट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

ते काले–ते समये वाणिज्यग्राम नगर हतुं. वर्णन. त्यां दूतिपलाश नामे चैत्य हतुं. त्यां भगवान् महावीर स्वामी समोसर्या. परिषद् धर्मोपदेश श्रवण करीने पाछी गइ. ते काले–ते समये श्रमण भगवंत महावीरना मोटा शिष्य इंद्रभूति नामे अनगार यावद् ऊर्ध्वजानुं (जेना ढींचण उभा छे एवा) यावद् विहरे छे. ते काले–ते समये श्रमण भगवान् महावीरना शिष्य श्यामहस्ती नामे अनगार हता. जे रोह नामे अनगारनी पेठे भद्रप्रकृतिना यावद् ऊर्ध्वजानु विहरता हता. त्यार पछी श्रद्धावाळा ते श्यामहस्ती अनगार यावत् उभा थइने ज्यां भगवान् गौतम छे त्यां आवे छे, आवीने भगवान् गौतमने त्रणवार प्रदक्षिणा करी, वंदी, नमी अने पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्या–

अत्थि णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमारस्स तायत्तीसगा देवा?, हंता अत्थि, से केणट्ठेणं

भंते! एवं वुचइ चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा २?, एवं खलु सामहत्थी! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे २ भारहे वासे कायंदी नामं नयरी होत्था वन्नओ, तत्थ णं कायंदीए नयरीए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा परिवसन्ति अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव विहरंति तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा पुव्विं उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी भवित्ता तओ पच्छा पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेंति अत्ताणं झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तायत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना,

[प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारना इन्द्र चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हा, चमरेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के असुरकुमारना इंद्र चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हे श्यामहस्ती! ते त्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध आ प्रमाणे छे-ते काले-ते समये आ जंबूद्वीपमां, भारतवर्षमां काकंदी नामे नगरी हती, वर्णन. ते काकंदी नगरीमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासक गृहपतिओ रहेता हता, जेओ धनिक, यावत् अपरिभूत (जेनो पराभव न थइ शके एवा समर्थ) हता, जीवाजीवने जाणनारा, अने पुण्य पापना ज्ञाता तेओ यावद् विहरे छे. त्यारपछी ते परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासक गृहपतिओ पूर्वे उग्र, उग्रविहारी (उग्रचर्यावाळा) संविग्न अने संविग्नविहारी हता, पण पाछळथी पासत्था, पास-

स्थविहारी (पासस्थानी चर्यावाळा) अवसन्न, अवसन्नविहारी, कुशील, कुशीलविहारी, यथाछंद, अने यथाछंदविहारी थईने तेओ घणा वरससुधी श्रमणोपासकना पर्यायने पाळे छे, पाळीने अर्धमासिक संलेखनावडे आत्माने सेवीने त्रीश भक्तोने अनशनपणे व्यतीत करीने ते प्रमादस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण कर्या विना काल समये काल करी तेओ असुरेंद्र, असुरकुमार राजा चमरना त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया.

जप्पभिइं च णं भंते ! कायंदगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तायत्तीसदेवत्ताए उववन्ना तप्पभिइं च णं भंते ! एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तायत्तीसगा देवा ?, तए णं भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठाए उट्ठेत्ता सामहत्थिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

[प्र०] हे भगवन् ! ज्यारथी मांडीने काकंदीना रहेनारा अने परस्पर सहाय करनारा, तेत्रीश श्रमणोपासको असुरेंद्र, असुरकुमारराजा चमरना त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया त्यारथी एम कहेवाय छे के असुरेंद्र, असुरकुमारराजा चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? (अर्थात् ते पूर्वे त्रायस्त्रिंशक देवो न होता ?). ज्यारे ते श्यामहस्ती अनगारे भगवंत गौतमने ए प्रमाणे कह्युं त्यारे भगवान् गौतम शंकित, कांक्षित अने अत्यन्त संदिग्ध थया, अने तेओ उभा थईने ते श्यामहस्ती अनगारनी साथे ज्यां श्रमण भगवान् महावीर हता त्यां आवे छे त्यां आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वांदी अने नमीने आ प्रमाणे बोल्या—

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्थि णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा ता० २ ?, हंता अत्थि, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ ?, एवं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव तप्पभिइं च णं एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तायत्तीसगा देवा २ ?, णो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तायत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, जं न कयाइ नासी न कदावि न भवति ण कयाई ण भविस्सई जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति। अत्थि णं भंते! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो तायत्तीसगा देवा ? ता० २ ?, हंता अत्थि, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ बलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तायत्तीसगा देवा ? ता० २?, एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे बिभेले णामं संनिवेसे होत्था वन्नओ, तत्थ णं बिभेले संनिवेसे जहा चमरस्स जाव उववन्ना, जप्पभिइं च णं भंते! ते बिभेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावइसमणोवासगा बलिस्स वइ० सेसं तं चेव जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति।

[प्र०] हे भगवन्! असुरेंद्र, असुरकुमारना राजा चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हा, गौतम! छे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के ते चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे?—इत्यादि पूर्वे कहेलो त्रायस्त्रिंशक देवोनो सर्व संबन्ध कहेवो; यावत् काकंदीना रहेनारा श्रमणोपासको त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया छे त्यारथी शुं एम कहेवाय छे के चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? (ते पूर्वे शुं नहोता?) [उ०] हे गौतम! ते अर्थ योग्य नथी, पण असुरेंद्र असुरकुमारना राजा चमरना त्रायस्त्रिंशक देवोना नामो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाश्वत कह्या छे, जेथी तेओ कदी न हतां एम नथी, कदी न हशे एम नथी; कदी नथी एम पण नथी. यावत् (तेओ नित्य छे, अव्युच्छित्तिनय-(द्रव्यार्थिकनय-) नी अपेक्षाए अन्य च्यवे छे अने अन्य उत्पन्न थाय छे. (पण तेओनो विच्छेद थतो नथी.) [प्र०] हे भगवन् ! वैरोचनेंद्र, वैरोचनराजा बलिने त्रायस्त्रिंशकदेवो छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के वैरोचनेंद्र बलिने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! बलिना त्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध आ प्रमाणे छे-ते काले-ते समये जंबूद्वीपना भारतवर्षमां बिभेल नामे संनिवेश (कस्बो) हतो. वर्णन. ते बिभेल सन्निवेशमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासको रहेता हता. इत्यादि जेम चमरेन्द्रना संबन्धे कह्युं तेम अहीं पण जाणवुं. यावत् तेओ त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया. ज्यारथी मांडीने ते बिभेल संनिवेशना परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपतिओ श्रमणोपासको वैरोचनेन्द्र बलिना त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया-इत्यादि पूर्वोक्त सर्व हकीकत यावत् 'तेओ नित्य छे, अव्यवच्छित्तिनयनी अपेक्षाए अन्य च्यवे छे अन्य उत्पन्न थाय छे' त्यांसुधी जाणवी.

अत्थि णं भंते ! धरणस्स णागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो तायत्तीसगा देवा ता० २ ?, हंता अत्थि, से केणट्ठेणं जाव तायत्तीसगा देवा २ ?, गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो तायत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पन्नत्ते जं न कयाइ नासी जाव अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति, एवं भूयाणंदस्सवि एवं जाव महाघोसस्स । अत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो पुच्छा, हंता अत्थि, से केणट्ठेणं जाव तायत्तीसगा देवा ?, एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पालासए नामं संनिवेसे होत्था

For Private and Personal Use Only

वन्नओ, तत्थ णं पालासए सन्निवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरंति, तए णं तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा पुव्विंपि पच्छावि उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव उववन्ना, जप्पभिइं च णं भंते! पालासिगा तायत्तीससहाया गाहावई समणोवासगा सेसं जहा चमरस्स जाव उववज्जंति।

[प्र०] हे भगवन्! नागकुमारना इंद्र अने नागकुमारना राजा धरणने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हे गौतम! हा, छे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के धरणेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हे गौतम! नागकुमारना इंद्र अने नागकुमारना राजा धरणना त्रायस्त्रिंशक देवोना नामो शाश्वत कह्या छे, जेथी तेओ कदापि न हता एम नथी, कदापि नथी एम नथी, अने कदापि न हशे एम पण नथी. यावत् अन्य च्यवे छे अने अन्य उपजे छे. ए प्रमाणे भूतानंद अने यावत् महाघोष इन्द्रना त्रायस्त्रिंशक देवो संबन्धे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! देवेंद्र देवराज शक्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हा गौतम! छे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के देवेंद्र देवराज शक्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हे गौतम! शक्रना त्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध आ प्रमाणे छे–ते काले–ते समये आ जंबूद्वीपना भरतवर्षमां पलाशक नामे संनिवेश हतो. वर्णन. ते पलाशक नामे संनिवेशमां परस्पर सहाय करनार तेत्रीश श्रमणोपासको रहेता हता–इत्यादि जेम चमर संबन्धे कह्युं ते प्रमाणे यावत् तेओ विचरे छे. त्यारपछी परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपति श्रमणोपासको पहेलां अने पछी उग्र, उग्रविहारी, संविग्न अने संविग्न-

विहारी थइने घणा वर्ष सुधी श्रमणोपासकपर्यायने पालीने मासिक संलेखनावडे आत्माने सेवे छे, सेवीने साठ भक्तो अनशन वडे व्यतीत करीने आलोचन, प्रतिक्रमण करीने समाधिने प्राप्त थाय छे, अने मरणसमये काळ करी यावत् त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. ज्यारथी आरंभीने पलाशक संनिवेशना निवासी परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपतिओ श्रमणोपासको शक्रना त्रायस्त्रिंशकपणे उत्पन्न थया इत्यादि सर्व वृत्तान्त चमरेन्द्रना प्रमाणे यावत् 'अन्य छे च्यवे छे अने अन्य उत्पन्न थाय छे' त्यांसुधी जाणवो.

अत्थि णं भंते! ईसाणस्स एवं जहा सक्कस्स नवरं चंपाए नगरीए जाव उववन्ना, जप्पभिइं च णं भंते! चंपिज्जा तायत्तीसं सहाया. सेसं तं चेव जाव अन्ने उववज्जंति। अत्थि णं भंते! सणंकुमारस्स देविंदस्स देवरन्नो पुच्छा, हंता अत्थि, से केणट्ठेणं जहा धरणस्स तहेव एवं जाव पाणयस्स एवं अच्चुयस्स जाव अन्ने उववज्जंति। सेवं भंते! सेवं भंते! ॥ (सूत्रं ४०४) ॥ दसमस्स चउत्थो ॥ १० । ४ ॥

[प्र०] हे भगवन्! ईशान इंद्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] शक्रनी पेठे ईशानेन्द्रने पण जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के ते गृहपतिओ श्रमणोपासको पलाशक संनिवेशने बदले चंपानगरीमां उत्पन्न थयेला छे. 'ज्यारथी चंपाना निवासी त्रायस्त्रिंशकपणे उत्पन्न थया'—इत्यादि पूर्वोक्त सर्व वृत्तान्त यावत् 'अन्य उपजे छे' त्यांसुधी जाणवो. [प्र०] हे भगवन्! देवोना राजा देवेंद्र सनत्कुमारने त्रायस्त्रिंशक देवो छे [उ०] हा, गौतम! छे. [प्र०] हे भगवन्! आप ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के सनत्कुमार देवेंद्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हे गौतम! जेम धरणेन्द्र संबन्धे कह्युं ते प्रमाणे अहीं जाणवुं. ए रीते यावत् प्राणतथी मांडीने अच्युतपर्यन्त यावत् 'बीजा उत्पन्न थाय छे' त्यांसुधी कहेवुं. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. (एम कही भगवान् गौतम विहरे छे.)

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना १० मा शतकमां चोथा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ५

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे गुणसिलए चेइए जाव परिसा पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव विहरंति। तए णं ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा जाव संसया जहा गोमयसामी जाव पज्जुवासमाणा एवं वयासी–चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?, अज्जो! पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—काली रायी रयणी विज्जु मेहा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सा परिवारो पन्नत्तो,

ते काले-ते समये राजगृह नामे नगर हतुं, अने त्यां गुणसिल नामे चैत्य हतुं. [श्रमण भगवान् महावीर समोसर्या.] यावत् सभा [धर्मश्रवण करीने] पाछी गइ. ते काले-ते समये श्रमण भगवान् महावीरना घणा शिष्यो पूज्य स्थविरो जातिसंपन्न-इत्यादि जेम आठमां शतकना सातमां उद्देशकमां कह्युं छे तेम यावत् विहरे छे. त्यारपछी ते स्थविर भगवंतो जाणवानी श्रद्धावाळा यावत् संशयवाळा थईने गौतमस्वामीनी पेठे पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्या. [प्र०] हे भगवन्! असुरेंद्र असुरकुमारना राजा चमरने केटली अग्रमहिषीओ (पट्टराणीओ) कही छे? [उ०] हे आर्यो! चमरेन्द्रने पांच पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे-काली रायी, रजनी, विद्युत् अने मेघा. तेमांनी एक एक देवीने आठ आठ हजार देवीओनो परिवार कह्यो छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पभू णं भंते! ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं अट्ठट्ठदेवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए?, एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा, से तं तुडिए, पभू णं भंते! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए चमरंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ नो पभू चमरे असुरिंदे चमरचंचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए?, अज्जो चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ संनिक्खित्ताओ चिट्ठंति, जाओ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो अन्नेसिं च बहूणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ भवंति तेसिं पणिहाए नो पभू, से तेणट्ठेणं अज्जो! एवं वुच्चइ-नो पभू चमरे असुरिंदे जाव राया चमरचंचाए जाव विहरित्तए, पभू णं अज्जो! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अन्नेहिं च बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहय जाव भुंजमाणे विहरित्तए० केवलं परियारिड्ढीए नो चेव णं मेहुणवत्तियं। (सूत्रं ४०५)

[प्र०] हे भगवन्! शुं ते एक एक देवी आठ आठ हजार देविओना परिवारने विकुर्ववा समर्थ छे? [उ०] हे आर्यो! हा, ए प्रमाणे पूर्वापर बधी मळीने [पांच पट्टराणीओनो परिवार चालीश हजार देवीओ छे अने ते त्रुटिक (वर्ग) कहेवाय छे. [प्र०] हे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भगवन् ! असुरेंद्र अने असुरकुमारोनो राजा चमर पोतानी चमरचंचा नामनी राजधानीमां सुधर्मा सभामां चमर नामे सिंहासनमां बेसी ते त्रुटिक (स्त्रीओना परिवार) साथे भोगववा लायक दिव्यभोगोने भोगववा समर्थ छे ? [उ०] हे आर्यो ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के चमरचंचा राजधानीमां ते असुरेंद्र अने असुरकुमारनो राजा चमर दिव्य भोगोने भोगववा समर्थ नथी ? [उ०] हे आर्यो ! असुरेंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरनी चमरचंचा नामनी राजधानीमां सुधर्मा नामे सभामां माणवक चैत्यस्तंभने विषे वज्रमय अने गोल-वृत्त डाबडामां नांखेलां जिनना घणां अस्थिओ (हाडकांओ) छे, जे असुरेंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरने तथा बीजा घणां असुरकुमार देवोने अने देवीओने अर्चनीय, वंदनीय, नमस्कार करवा योग्य, पूजवा योग्य, सत्कार करवा योग्य अने समान करवा योग्य छे, तथा कल्याण अने मंगलरूप देव चैत्यनी पेठे उपासना करवा योग्य छे, माटे ते जिनना अस्थिओना प्रणिधानमां [संनिधानमां] ते असुरेंद्र पोतानी राजधानीमां यावत् [भोगो भोगववा] समर्थ नथी. तेथी हे आर्यो ! एम कहेवाय छे के चमर असुरेंद्र यावत् चमरचंचा राजधानीमां यावत् [ते देवीओ साथे दिव्य भोगो] भोगववा समर्थ नथी. पण हे आर्यो ! ते असुरेंद्र असुरकुमारराजा चमर चमरचंचा नामे राजधानीमां, सुधर्मा सभामां, चमरनामे सिंहासनमां बेसी चोसठ हजार सामानिक देवो, त्रायस्त्रिंशक देवो, अने बीजा घणा असुरकुमार देवो तथा देवीओ साथे परिवृत थइ मोटा अने निरन्तर थता नाट्य, गीत, अने वादित्रोना शब्दो वडे केवल परिवारनी ऋद्धिथी भोगो भोगववा समर्थ छे, परन्तु मैथुननिमित्तक भोगो भोगववा समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इंद्र अने असुकुमारना राजा चमरना (लोकपाल) सोम महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्यो ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-कनका, कनकलता, चित्रगुप्ता

अने वसुंधरा. त्यां एक एक देवीने एक एक हजार देवीनो परिवार छे. तेओमांनी एक एक देवी एक एक हजार हजार देवीना परिवारने विकुर्वी शके छे, ए प्रमाणे पूर्वापर बधी मळीने चार हजार देवीओ थाय छे. ते त्रुटिक (देवीओनो वर्ग) कहेवाय छे.॥ ४०५ ॥

चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–कणगा कलगलया चित्तगुत्ता वसुंधरा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगंसि देविसहस्सं परिवारो पन्नत्तो, पभू णं ताओ एगमेगाए देवीए अन्नं एगमेगं देवीसहस्सं परियारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देविसहस्सा, सेत्तं तुडिए, पभू णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं अवसेसं जहा चमरस्स नवरं परियारो जहा सूरियाभस्स, सेसं तं चेव, जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं। चमरस्स णं भंते! जाव रन्नो जमस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ?, एवं चेव नवरं जमाए रायहाणीए सेसं जहा सोमस्स, एवं वरुणस्सवि, नवरं वरुणाए रायहाणीए, एवं वेसमणस्सवि, नवरं वेसमणाए रायहाणीए, सेसं तं चेव जाव मेहुणवत्तियं।

[प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरना (लोकपाल) सोम नामे महाराजा पोतानी सोमा नामे राजधानीमां सुधर्मा सभामां सोमनामे सिंहासनमां बेसी ते त्रुटिक (देवीओना वर्ग) साथे भोगववा समर्थ छे? [उ०] चमरना संबन्धे कह्युं छे ते सर्व अहीं पण जाणवुं. परन्तु तेनो परीवार सूर्याभनी पेठे जाणवो. अने बाकीनुं सर्व पूर्व प्रमाणे कहेवुं, यावत् ते देवीओ साथे पोतानी सोमा राजधानीमां मैथुननिमित्तक भोग भोगववा समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन्! ते चमरना (लोकपाल) यम नामे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाराजाने केटली पट्टराणीओ कहीछे ? [उ०] हे आर्यो ! पूर्व प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए छे के (यम लोकपालने) यमा नामे राजधानी छे. बाकी बधुं सोमनी पेठे जाणवुं. तथा ए प्रमाणे वरुणना संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु तेने वरुणा राजधानी छे. ते प्रमाणे वैश्रमणने पण जाणवुं. परन्तु तेने वैश्रमणा राजधानी छे. बाकी सर्व पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् 'तेओ मैथुननिमित्ते भोग भोगववा समर्थ नथी.'

बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स पुच्छा, अज्जो ! पंच २ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–सुभा निसुंभा रंभा निरंभा मदणा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ सेसं जहा चमरस्स, नवरं बलिचंचाए रायहाणीए, परियारो जहा मोउद्देसए, सेसं तं चेव, जाव मेहुणवत्तियं । बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो सोमस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ? अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–मीणगा सुभद्दा विजया असणी, तत्थ णं एगमेगाए सेसं जहा देवीए चमरसोमस्स, एवं जाव वेसमणस्स ॥ धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ?, अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–इला सुक्का सदारा सोदामणी इंदा घणविज्जुया,तत्थ णं एगमेगाए देवीए छ छ देविसहस्सा परिवारो पन्नत्तो, पभू णं भंते! ताओ एगमेगाए देवीए अन्नाइं छ छ देविसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए एवामेव सपुव्वावरेणं छत्तीसं देविसहस्साइं, सेत्तं तुडिए, पभू णं भंते ! धरणे सेसं तं चेव, नवरं धरणाए रायहाणीए धरणंसि सीहासणंसि सओ परियाओ सेसं तं चेव ।

[प्र०] हे भगवन्! वैरोचनेन्द्र बलिने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! पांच पट्टराणीओ कही छे; ते आ प्रमाणे–शुभा, निशुंभा, रंभा, निरंभा अने मदना. तेमांनी एक एक देवीने आठ आठ हजार देवीओनो परिवार होय छे–इत्यादि सर्व चमरेन्द्रनी पेठे जाणवुं; परन्तु बलि नामे इन्द्रने बलिचंचा नामे राजधानी छे. अने तेनो परिवार तृतीय शतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे जाणवो, बाकी सर्व पूर्व प्रमाणे जाणवुं. यावत् ते मैथुननिमित्ते भोग भोगववा समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन्! वैरोचनेन्द्र वैरोचनराजा बलिना (लोकपाल) सोम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–मेनका, सुभद्रा, विजया अने अशनी. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे बधुं चमरना सोम नामे लोकपालनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वैश्रमण सुधी जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! नागकुमारना इन्द्र अने नागकुमारना राजा धरणने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने छ पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–इला, शुक्रा, सतारा, सौदामिनी, इन्द्रा अने घनविद्युत्. तेमां एक एक देवीने छ छ हजार देवीओनो परिवार कह्यो छे. [प्र०] हे भगवन्! तेमांनी एक एक देवी अन्य छ छ हजार देवीओना परिवारने विकुर्वी शके? [उ०] तेओ पूर्वे कह्या प्रमाणे पूर्वापर सर्व मळीने छत्रीश हजार देवीओने विकुर्ववा समर्थ छे. ए प्रमाणे ते त्रुटिक (देवीओनो समूह) कह्यो. [प्र०] हे भगवन्! शुं धरणेन्द्र पोतानी धरणा नामे राजधानीमां धरण नामे सिंहासनमां बेसी पोताना परिवार देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे इत्यादि? [उ०] बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं, (अर्थात् मैथुननिमित्ते त्यां भोग भोगववा समर्थ नथी.)

धरणस्स णं भंते! नागकुमारिंदस्स कालवालस्स लोगपालस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?, अज्जो!

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा, तत्थ णं एगमेगाए अवसेसं जहा चमरस्स लोगपालाणं,एवं सेसाणं तिण्हवि। भूयाणंदस्स णं भंते! पुच्छा, अज्जो! छ अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-रूया रूयंसा सुरूया रुयगावती रूयकंता रुयप्पभा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए अवसेसं जहा धरणस्स,

[प्र०] हे भगवन्! नागकुमारना इन्द्र धरणना लोकपाल कालवाल नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! चार पट्टराणीओ कही छे; ते आ प्रमाणे-अशोका, विमला, सुप्रभा अने सुदर्शना. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे चमरना लोकपालोनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे बाकीना त्रणे लोकपालोसंबन्धे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! भूतानेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! छ पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-रूपा, रूपांशा, सुरूपा, रूपकावती, रूपकांता अने रूपप्रभा. तेमां एक एक देवीनो परिवार इत्यादि सर्व धरणेन्द्रनी पेठे जाणवुं.

भूयाणंदस्स णं भंते! नागवित्तस्स पुच्छा अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-सुणंदा सुभद्दा सुजाया सुमणा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं एवं सेसाणं तिण्हवि लोगपालाणं, जे दाहिणिल्लाणिंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोगपालाणंपि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं, उत्तरिल्लाणं, इंदाणं जहा भूयाणंदस्स, लोगपालाणवि तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणं, नवरं इंदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि परियारो जहा तइयसए पढमे उद्देसए,लोगपालाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसनामगाणि परियारो जहा चमरस्स लोगपालाणं। कालस्स णं भंते! पिसायिंदस्स

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिसायरन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–कमला कमलप्पभा उप्पला सुदंसणा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देविसहस्सं सेसं जहा चमरलोगपालाणं, परियारो तहेव, नवरं कालाए रायहाणीए कालंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव, एवं महाकालस्सवि।

[प्र०] हे भगवन्! भूतानेंद्रना लोकपाल नागवित्तने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे—सुनंदा, सुभद्रा, सुजाता अने सुमना. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे बधुं चमरेन्द्रना लोकपालोनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे बाकी रहेला त्रणे लोकपालोना संबन्धे जाणवुं. जे दक्षिण दिशिना इन्द्रो छे तेओने धरणेन्द्रनी पेठे (सू. १०.) जाणवुं, अने तेओना लोकपालोने पण धरणेंद्रना लोकपालोनी पेठे जाणवुं. तथा उत्तर दिशिना इंद्रोने भूतानेंद्रनी पेठे (सू. १२.) जाणवुं. तेओना लोकपालोने पण भूतनेंद्रना लोकपालोनी पेठे जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के सर्व इन्द्रोनी राजधानीओ अने सिंहासनो इंद्रना समान नामे जाणवां. अने तेओनो परिवार तृतीय शतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे समजवो. तथा बधा लोकपालोनी राजधानीओ अने सिंहासनो पण तेओनां समान नामे जणवां. अने तेओनो परिवार चमरेन्द्रना लोकपालोना परिवारनी पेठे जाणवो. [प्र०] हे भगवन्! पिशाचना इंद्र अने पिशाचना राजा कालने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे–कमला, कमलप्रभा, उत्पला अने सुदर्शना. तेमांनी एक एक देवीने एक एक हजार देवीनो परिवार छे, बाकी बधुं चमरना लोकपालोनी पेठे जाणवुं, अने परिवार पण तेज प्रमाणे जाणवो. परन्तु विशेष ए छे के काला नामे राजधानी अने काल नामे सिंहासन जाणवुं, तथा बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे महाकालसंबंधे पण जाणवुं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरूवस्स णं भंते! भूइंदस्स रन्नो पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-रूववती बहुरूवा सुरूवा सुभगा, तत्थ णं एगमेगाए सेसं जहा कालस्स, एवं पडिरूवस्सवि। पुन्नभद्दस्स णं भंते! जक्खिंदस्स पुच्छा अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-पुन्ना बहुपुत्तिया उत्तमा तारया, तत्थ णं एगमेगाए सेसं जहा कालस्स, एवं माणिभद्दस्सवि। भीमस्स णं भंते! रक्खसिंदस्स पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—पउमा पउमावती कणगा रयणप्पभा, तत्थ णं एगमेगा सेसं जहा कालस्स। एवं महाभीमस्सवि।

[प्र०] हे भगवन्! भूतना इन्द्र अने भूतना राजा सुरूपने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा, अने सुभगा. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे कालेन्द्रनी पेठे जाणवुं. अने एज प्रमणे प्रतिरूपेन्द्र संबंधे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवान्! यक्षना इन्द्र पूर्णभद्रने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-पूर्णा, बहुपुत्रिका, उत्तमा अने तारका. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे कालेन्द्रनी पेठे जाणवुं, अने ए प्रमाणे माणिभद्र संबन्धे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! राक्षसना इंद्र भीमने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे- पद्मा, पद्मावती, कनका अने रत्नप्रभा. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे सर्व कालेन्द्रनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे महाभीमेन्द्रसंबन्धे पण जाणवुं.

किन्नरस्स णं भंते! पुच्छा अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-वडेंसा केतुमती रतिसेणा रइप्पिया, तत्थ णं सेसं तं चेव, एवं किंपुरिसस्सवि। सप्पुरिसस्स णं पुच्छा अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तंजहा-रोहिणी नवमिया हिरी पुप्फवती, तत्थ णं एगमेगा०, सेसं तं चेव, एवं महापुरिसस्सवि। अतिकायस्स णं पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसी पन्नत्ता, तंजहा-भुयंगा भुयंगवती महाकच्छा फुडा, तत्थ णं०, सेसं तं चेव, एवं महाकायस्सवि। गीयरइस्स णं भंते! पुच्छा, अज्जो चत्तारि अग्गमहिसी पन्नत्ता, तंजहा-सुघोसा विमला सुस्सरा सरस्सई, तत्थ णं०, सेसं तं चेव, एवं गीयजसस्सवि, सव्वेसिं एएसिं जहा कालस्स, नवरं सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेसं तं चेव।

[प्र०] हे भगवन्! किंनरेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-अवतंसा, केतुमती, रतिसेना अने रतिप्रिया. तेओनां एक एकनो परिवार वगेरे पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे किंपुरुषेन्द्र संबंधे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! सत्पुरुषेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे-रोहिणी, नवमिका, ह्री अने पुष्पवती. तेमां एक एकनो परिवार वगेरे बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे महापुरुषेन्द्र संबन्धे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! अतिकायेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-भुजंगा, भुजगवती, महाकच्छा अने स्फुटा. तेमां एक एकनो परिवार वगेरे बधुं पूर्वनी पेठे जाणवु. ए प्रमाणे महाकायेन्द्र संबन्धे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवान्! गीतरतीन्द्रने केटली पट्टराणीओ होय छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ होय छे, ते आ प्रमाणे-सुघोषा, विमला, सुस्वरा अने सरस्वती. तेमां एक एकनो परिवार वगेरे बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे गीतयश इन्द्र संबन्धे पण समजवुं. आ सर्व इन्द्रोने बाकीनुं सर्व कालेन्द्रनी पेठे जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के, राजधानीओ अने

For Private and Personal Use Only

सिंहासनो इन्द्रना समान नामे जाणवां, बकी सर्व पूर्वनी पेठे जाणवुं.

चंदस्स णं भंते! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो पुच्छा, अज्जो चत्तारि अग्गमहिसी पन्नत्ता, तंजहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा एवं जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव, सूरस्सवि सूरप्पभा आयवाभा अच्चिमाली पभंकरा, सेसं तं चेव, जहा (जाव) नो चेव णं मेहुणवत्तियं। इंगालस्स णं भंते! महग्गहस्स कति अग्ग० पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसी पन्नत्ता, तंजहा–विजया वेजयंती जयंती अपराजिया, तत्थ णं एगमेगाए देवीए सेसं तं चेव जहा चंदस्स, नवरं इंगालवडेंसए विमाणे इंगालगंसि सीहासणंसि सेसं तं चेव, एवं जाव वियालगस्सवि, एवं अट्ठासीतीएवि महागहाणं भाणियव्वं जाव भावकेउस्स, नवरं वडेंसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेसं तं चेव। सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरन्नो पुच्छा, अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसी पन्नत्ता, तंजहा–पउमा सिवा सेया अंजू अमला अच्छरा नवमिया रोहिणी, तत्थ णं एगमेगाए देवीए सोलस सोलस देविसहस्सा परिवारो पन्नत्तो, पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं सोलस देविसहस्सपरियारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठावीसुत्तरं देविसयसहस्सं परियारं विउव्वित्तए, सेत्तं तुडिए।

[प्र०] हे भगवन्! ज्योतिष्कना इन्द्र अने ज्योतिष्कना राजा चन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–चन्द्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा, आर्चिमाली अने प्रभंकरा–इत्यादि जेम जीवाभिगमसूत्रमां ज्योतिष्कना उद्देशकमां कह्युं छे तेम जाणवुं. सूर्यसंबन्धे पण बधुं तेमज जाणवुं. सूर्यने चार पट्टराणीओ छे, ते आ प्रमाणे–सूर्यप्रभा, आतपाभा,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्चीमाली अने प्रभंकरा-इत्यादि सर्व पूर्वोक्त कहेवुं, यावत् तेओ पोतानी राजधानीमां सिंहासनने विषे मैथुननिमित्ते भोगो भोगवी शकता नथी. [प्र०] हे भगवन्! अंगार नामना महाग्रहने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे बधुं चन्द्रनी पेठे जाणवुं परन्तु विशेष ए छे के, अंगारावतंसकनामना विमानमां अने अंगारक नामना सिंहासनने विषे यावत् मैथुननिमित्त भोगो भोगवता नथी. बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं. तथा ए प्रमाणे यावत् व्याल नामे ग्रहसंबन्धे पण जाणवुं. एम अठ्याशी महाग्रहो माटे यावत् भावकेतु ग्रह सुधी कहेवुं. परन्तु विशेष ए छे के, अवतंसको अने सिंहासनो इन्द्रना समान नामे जाणवां. बाकी बधुं पूर्वप्रमाणे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! देवना इन्द्र देवना राजा शक्रने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने आठ पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-पद्मा, शिवा, श्रेया, अंजु, अमला, अप्सरा, नवमिका अने रोहिणी. तेमांनी एक एक देवीनो सोळ सोळ हजार देवीओनो परिवार होय छे. तेमांनी एक एक देवी बीजी सोळ सोळ हजार देवीओना परिवारने विकुर्वी शके छे. ए प्रमाणे पूर्वापर मळीने एक लाख अने अठ्यावीश हजार देवीओना परिवारने विकुर्ववा समर्थ छे. ए प्रमाणे त्रुटिक (देवीओनो समूह) कह्यो.

पभू णं भंते! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं सेसं जहा चमरस्स, नवरं परियारो जहा मोउद्देसए। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ?, पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसी पन्नत्ता, तंजहा-रोहिणी मदणा चित्ता सोमा, तत्थ णं एगमेगा० सेसं जहा चमरलोगपालाणं, नवरं सयंपभे विमाणे सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेसं तं चेव एवं जाव वेसमणस्स, नवरं विमाणाइं जहा तइयसए। ईसाणस्स णं भंते! पुच्छा, अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसी पन्नत्ता, तंजहा–कण्हा कण्हराई रामा रामरक्खिया वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा, तत्थ णं एगमेगाए०, सेसं जहा सक्कस्स। ईसाणस्स णं भंते! देविंदस्स सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ?, पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसी पन्नत्ता, तंजहा–पुढवी रायी रयणी विज्जू, तत्थ णं०, सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाणं, एवं जाव वरुणस्स, नवरं विमाणा जहा चउत्थसए, सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं। सेवं भंते! सेवं भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ (सूत्रं ४०६) ॥ १०–५ ॥

[प्र०] हे भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्र सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतंसक विमानमां सुधर्मा सभाने विषे अने शक्र नामे सिंहासनमां बेसी ते त्रुटिक (देवीओना समूह) साथे भोग भोगववा समर्थ छे? [उ०] हे आर्य! बाकी सर्व चमरेन्द्रनी पेठे जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के तेनो परिवार तृतीयशतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे जाणवो. [प्र०] हे भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्रना (लोकपाल) सोम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–रोहिणी, मदना, चित्रा अने सोमा. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे चमरेन्द्रना लोकपालोनी पेठे जाणवो; परन्तु विशेष ए छे के स्वयंप्रभ नामे विमानमां, सुधर्मा सभामां अने सोम नामना सिंहासनमां बेसीने मैथुननिमित्ते देवीओनी साथे भोग भोगववा समर्थ नथी–इत्यादि सर्व पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे यावद् वैश्रमण सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छेके तेमना विमानो तृतीयशतकमां कह्या प्रमाणे कहेवां. [प्र०] हे भगवन्! ईशानेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने आठ पट्टराणीओ कही छे,

For Private and Personal Use Only

ते आ प्रमाणे–कृष्णा, कृष्णराजि, रामा, रामरक्षिता, वसु, वसुगुप्ता, वसुमित्रा अने वसुंधरा. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे बधुं शक्रनी पेठे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! देवेन्द्र देवराज ईशानना (लोकपाल) सोम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्य! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–पृथिवी, रात्री, रजनी, अने विद्युत्. तेमां एक एकनो परिवार वगेरे बाकी बधुं शक्रना लोकपालोनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वरुण सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के चोथा शतकमां कह्या प्रमाणे विमानो कहेवा, बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. यावत् ते मैथुननिमित्ते (राजधानीमां पोताना सिंहासन उपर बेसीने) भोग भोगवता नथी. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. ॥ ४०६ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवती सूत्रना १० मा शतकमां पांचमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ६

कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो सभा सुहम्मा पन्नत्ता?, गोयमा! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पंच वडेंसगा पन्नत्ता, तंजहा–असोगवडेंसए जाव मज्झे सोहम्मवडेंसए, से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस य जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं–एवं जह सूरियाभे तहेव माणं तहेव उववाओ। सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियाभस्स ॥ १ ॥ अलंकार-अच्चणिया तहेव जाव आयरक्खत्ति, दो सागरोवमाइं ठिती। सक्के णं भंते! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए जाव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोयमा! महिड्ढीए जाव महासोक्खे, से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं जाव विहरति केमहासोक्खे?, एवं महड्ढिए जाव एवं महासोक्खे सक्के देविंदे देवराया। सेवं भंते! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्रं ४०७) ॥ १०-६ ॥

[प्र०] हे भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्रनी सुधर्मा नामे सभा क्यां कही छे? [उ०] हे गौतम! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां मेरु पर्वतनी दक्षिणे आ रत्नप्रभापृथिवीना (बहु सम अने रमणीय भूमिभागनी उंचे घणा कोटाकोटि योजन दूर सौधर्म नामे देवलोकने विषे) इत्यादि 'रायपसेणीय' सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् पांच अवतंसक विमानो कह्या छे, ते आ प्रमाणे–अशोकावतंसक, यावत् वच्चे सौधर्मावतंसक छे. ते सौधर्मावतंसक नामे महा विमाननी लंबाई अने पहोळाई साडा बार लाख योजन छे. शक्रनुं प्रमाण, उपपात (उपजवुं), अभिषेक, अलंकार अने अर्चनिका (पूजा)–इत्यादि यावत् आत्मरक्षको सूर्याभ देवनी पेठे जाणवा, तेनी स्थिति (आयुष) बे सागरोपमनी छे. [प्र०] हे भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्र केवी महाऋद्धिवाळो छे. केवा महासुखवाळो छे? [उ०] हे गौतम! ते महाऋद्धिवाळो यावत् महासुखवाळो बत्रीश लाख विमानोनो स्वामी थइने यावद् विहरे छे, ए प्रमाणे महाऋद्धिवाळो अने महासुखवाळो ते देवेन्द्र देवराज शक्र छे. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. (एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.) ॥ ४०७ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवती सूत्रना १० मा शतकमां छट्ठा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्देशक ७

कहिन्नं भंते ! उत्तरिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं दीवे पन्नत्ते ?, एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव सुद्धदंतदीवोत्ति, एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा । सेवं भंते! सेवं भंतेत्ति जाव विहरति ॥ ॥ (सूत्रं ४०८) ॥ १०-२४ ॥ दसमं सयं समत्तं ॥ १० ॥

[प्र०] हे भगवन् ! उत्तरमां रहेनारा एकोरुक मनुष्योना एकोरुक नामे द्वीप कये स्थळे कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवाभिगमसूत्रमां कह्या प्रमाणे सर्व द्विपो संबन्धे यावत् शुद्धदंतद्वीप सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे प्रत्येक द्वीप संबन्धे एक एक उद्देशक कहेवो. एम अठ्यावीश उद्देशको कहेवा. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. (एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे.) ॥ ४०८ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना १० मा शतकमां सातमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

॥ इति श्रीमदभयदेवाचार्यवृत्तियुतं दशमंशतकं समाप्तम् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शतक ११. (उद्देशक १.)

उप्पल १ सालु २ पलासे ३ कुंभी ४ नाली य ५ पउम ६ कन्नी ७ य। नलिण ८ सिव ९ लोग १० काला ११ ऽऽ-लंभिय १२ दस दो य एक्कारे ॥६६॥ उववाओ १ परिमाणं २ अवहारु ३ च्चत्त ४ बंध ५ वेदे ६ य। उदए ७ उदी-रणाए ८ लेसा ९ दिट्ठी १० य नाणे ११ य ॥६७॥ जोगु १२ वओगे १३ वन्न १४ रसमाई १५ ऊसासगे १६ य आहारे १७। विरई १८ किरिया १९ बंधे २० सन्न २१ कसायि २२ त्थि २३ बंधे २४ य ॥६८॥ सन्नि २५ दिय २६ अणुबंधे २७ संवेहा २८ हार २९ ठिइ ३० समुग्घाए ३१। चयणं ३२ मूलादीसु य उववाओ ३३ सव्वजीवाणं ॥ ६९ ॥

(उद्देश संग्रह-) १ उत्पल, २ शालूक, ३ पलाश, ४ कुंभी ५ नाडीक, ६ पद्म, ७ कर्णिका, ८ नलिन, ९ शिवराजर्षि, १० लोक, ११ काल. अने १२ आलभिक-ए संबन्धे अग्यारमां शतकमां बार उद्देशको छे. (उत्पल)-अमुक जातना कमल संबन्धे प्रथम उद्देशक, शालूक-उत्पलकन्द्-संबन्धे बीजो उद्देशक, पलाश-खाखरा-ना वृक्ष संबन्धे त्रीजो उद्देशक, कुंभीवनस्पति संबन्धे चोथो उद्देशक, नाडीक वनस्पति संबन्धे पांचमो उद्देशक, पद्म-अमुक जातना कमल-विषे छठ्ठो उद्देशक, कर्णिका संबन्धे सातमो उद्देशक, नलिन-अमुक प्रकारना कमल संबंधे आठमो उद्देशक, शिवराजर्षि संबन्धे नवमो उद्देशक, लोकने विषे दशमो उद्देशक, काल संबन्धे अगीआरमो उद्देशक, अने आलभिक-आलभिकानगरीमां करेला प्रश्न-संबंधे बारमो उद्देशक.-ए प्रमाणे अगीयारमां शतकमां बार उद्देशको छे.)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—उप्पले णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे?, गोयमा! एगजीवे नो अणेगजीवे, तेण परं जे अन्ने जीवा उववज्जंति ते णं णो एगजीवा अणेगजीवा। ते णं भंते! जीवा कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरि० मणु० देवेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! नो नेरतिएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतोवि उववज्जन्ति माणुस्सेहिंतो० देवेहिंतोवि उववज्जंति, एवं उववाओ भाणियव्वो, जहा वक्कंतीए वणस्सइकाइयाणं जाव ईसाणेति १। ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति?, गोयमा! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति २।

[प्र०] ते काले–ते समये राजगृह नगरने विषे पर्युपासना करता (गौतम) आ प्रमाणे बोल्या–हे भगवन्! उत्पल शुं एक जीववाळुं छे के अनेकजीववाळुं छे? [उ०] हे गौतम! ते एक जीववाळुं छे, पण अनेक जीववाळुं नथी. त्यार पछी ज्यारे ते उत्पलने विषे बीजा जीवो–जीवाश्रित पांदडा वगेरे अवयवो–उगे छे त्यारे ते उत्पल एक जीववाळुं नथी, पण अनेक जीववाळुं छे. [प्र०] हे भगवन्! (उत्पलमां) ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे—शुं नैरयिकथी, तिर्यंचथी, मनुष्यथी के देवथी आवीने उपजे छे? [उ०] हे गौतम! ते जीवो नैरयिकथी आवीने उपजता नथी, पण तिर्यंचथी, मनुष्यथी के देवथी आवीने उपजे छे. जेम प्रज्ञापनासूत्रनां व्युत्क्रांतिपदमां कह्युं छे ते प्रमाणे वनस्पतिकायिकोमां यावत् ईशान देवलोक सुधीना जीवोनो उपपात कहेवो. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवो (उत्पलमां) एक समयमां केटला उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्यात के असंख्याता जीवो एक समयमां उत्पन्न थाय.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते णं भंते ! जीवा समए २ अवहीरमाणा २ केवतिकालेणं अवहीरंति ?, गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समए २ अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया ३ । तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं ४ । ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा ?, गोयमा ! नो अबंधगा, बंधए वा बंधगा वा एवं जाव अंतराइयस्स, नवरं आउयस्स पुच्छा गोयमा ! बंधए वा अबंधए वा बंधगा वा अबंधगा वा अहवा बंधए य अबंधए य अहवा बंधए य अबंधगा य अहवा बंधगा य अबंधए य अहवा बंधगा य अबंधगा य ८ एते अट्ठ भंगा ५ ।

[प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो समये समये काढवामां आवे तो केटले काले ते पूरा काढी शकाय ? [उ०] हे गौतम ! जो ते जीवो समये समये असंख्य काढवामां आवे, अने ते असंख्य उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काल सुधी काढवामां आवे तो पण ते पूरा काढी शकाय नहीं. [प्र०] हे भगवन् ! उत्पलना जीवोनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य-ओछामां ओछी-अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटली, अने उत्कृष्ट कंइक अधिक हजार योजन होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो शुं ज्ञानावरणीय कर्मना बंधक छे के अबंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानारणीय कर्मना अबंधक नथी, पण बन्धक छे. अथवा एक जीव बंधक छे अने अनेक जीवो पण बंधक छे. ए प्रमाणे यावद् अंतरायकर्म संबंधे पण जाणवुं. [प्र०] परन्तु आयुषकर्मना संबंधे प्रश्न करवो. (हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो आयुषकर्मना बंधक छे के अबंधक छे ?) [उ०] हे गौतम ! १ (उत्प-

For Private and Personal Use Only

लनो) एक जीव बंधक छे, २ एक जीव अबंधक छे, ३ अनेक जीवो बंधक छे, ४ अनेक जीवो अबंधक छे, ५ अथवा एक बंधक अने एक अबंधक छे, ६ अथवा एक बंधक अने अनेक अबंधक छे, ७ अथवा अनेक बंधक अने एक अबंधक छे, ८ अथवा अनेक बंधक अने अनेक अबंधक छे. ए प्रमाणे ए आठ भांगा जाणवा.

ते णं भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा अवेदगा?, गोयमा! नो अवेदगा, वेदए वा वेदगा वा एवं जाव अंतराइयस्स, ते णं भंते! जीवा किं सायावेयगा असायावेयगा?, गोयमा! सायावेदए वा असायावेयए वा अट्ठ भंगा ६। ते णं भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई अणुदई?, गोयमा! नो अणुदई, उदई वा उदइणो वा, एवं जाव अंतराइयस्स ७॥ ते णं भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा०?, गोयमा! नो अणुदीरगा, उदीरए वा उदीरगा वा, एवं जाव अंतराइयस्स, नवरं वेयणिज्जाउएसु अट्ठ भंगा ८।

[प्र०] हे भगवन्! ते उत्पलना जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना वेदक छे के अवेदक छे? [उ०] हे गौतम! तेओ अवेदक नथी, पण एक जीव वेदक छे अथवा अनेक जीवो अवेदक छे. ए प्रमाणे यावद् अंतराय कर्म सुधी जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! ते (उत्पलना) जीवो साताना वेदक छे के असाताना वेदक छे? [उ०] हे गौतम! ते जीवो साताना वेदक छे अने असाताना पण वेदक छे. अहीं पूर्व प्रमाणे आठ भांगा कहेवा. [प्र०] हे भगवन्! ते (उत्पलना) जीवो ज्ञानावरणीय कर्मना उदयवाळा छे के अनुदयवाळा छे. [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानावरणीयकर्मना अनुदयवाळा नथी, पण एक जीव उदयवाळो छे अथवा अनेक जीवो उदयवाळा छे. ए प्रमाणे यावत् अंतरायकर्म संबंधे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते (उत्पलना) जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना उदीरक छे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के अनुदीरक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अनुदीरक नथी, पण एक जीव उदीरक छे, अथवा अनेक जीवो उदीरक छे. ए प्रमाणे यावत् अंतरायकर्म सुधी जाणवुं परन्तु विशेष ए छे के वेदनीयकर्म अने अयुषकर्ममां पूर्ववत् (सू० ८) आठ भांगा कहेवा.

ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा ?, गोयमा ! कण्हलेसे वा जाव तेउलेसे वा कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेसा वा अहवा कण्हलेसे य नीललेस्से य एवं एए दुयासंजोगतियासंजोगचउक्कसंजोगेणं असीती भंगा भवंति ९ ॥ ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ?, गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी नो सम्मामिच्छादिट्ठी मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा १० । ते णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नो नाणी अण्णाणी वा अन्नाणिणो वा ११ । ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी वयजोगी कायजोगी ?, गोयमा ! नो मणजोगी णो वयजोगी कायजोगी वा कायजोगिणो वा १२ ।

[प्र०] हे भगवन् ! शुं ते (उत्पलना) जीवो कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, कापोतलेश्यावाळा के तेजोलेश्यावाळा होय ? [उ०] हे गौतम ! एक जीव कृष्णलेश्यावाळो, यावत् एक तेजोलेश्यावाळो होय, अथवा अनेक जीवो कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, कापोतलेश्यावाळा अने तेजोलेश्यावाळा होय, अथवा एक कृष्णलेश्यावाळो अने एक नीललेश्यावाळो होय. ए प्रमाणे द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग अने चतुष्कसंयोग वडे सर्व मळीने एंशी भांगा कहेवा. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते (उत्पलना) जीवो सम्यग्दृष्टि छे, मिथ्यादृष्टि छे, के सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सम्यग्दृष्टि नथी, सम्यग्मिथ्यादृष्टि नथी, पण एक जीव

मिथ्यादृष्टि छे, अथवा अनेक जीवो मिथ्यादृष्टिओ छे, [प्र०] हे भगवन्! ते (उत्पलना) जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! ते ज्ञानी नथी, पण एक अज्ञानी छे, अथवा अनेक अज्ञानीओ छे. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते (उत्पलना) जीवो मनयोगी वचनयोगी के काययोगी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ मनयोगी नथी, वचनयोगी नथी, पण एक काययोगीछे अथवा अनेक काययोगिओ छे.

ते णं भंते! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता?, गोयमा! सागारोवउत्ते वा अणागारोव उत्तवा अट्ठ भंगा १३। तेसि णं भंते! जीवाणं सरीरगा कतिवन्ना कतिगंधा कतिरसा कतिफासा पन्नत्ता?, गोयमा! पंचवन्ना पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा पन्नत्ता, ते पुण अप्पणा अवन्ना अगंधा अरसा अफासा पन्नत्ता १४-१५॥ ते णं भंते! जीवा किं उस्सासा निस्सासा नो उस्सासनिसासा?, गोयमा! उस्सासए वा १ निस्सासए वा २ नो उस्सासनिस्सासए वा ३ उस्सासगा वा ४ निस्सासगा वा ५ नो उस्सासनीसासगा वा ६, अहवा उस्सासए य निस्सासए य ४ अहवा उस्सासए य नो उस्सासनिस्सासए य ४ अहवा निस्सासए य नो उस्सासनीसासए य ४, अहवा ऊसासए य नीसासए य नो उस्सासनिस्सासए य अट्ठ भंगा ८ एए छव्वीसं भंगा भवंति २६॥

[प्र०] हे भगवन्! शुं ते (उत्पलना) जीवो साकार उपयोगवाळा छे के अनाकार उपयोगवाळा छे? [उ०] हे गौतम! एक जीव साकार उपयोगवाळो छे, अथवा एक जीव अनाकारउपयोगवाळो छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे (सू० ८) आठ भांगा कहेवा. [प्र०] हे भगवन्! ते (उत्पलना) जीवोना शरीरो केटला वर्णवाळां, केटला गंधवाळां, केटला रसवाळां अने केटला स्पर्शवाळां कह्यां छे? [उ०] हे गौतम! पांच वर्णवाळां, पांच रसवाळां, बे गंधवाळां अने आठ स्पर्शवाळां कह्यां छे. अने जीवो पोते वर्ण, गंध, रस अने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्पर्श रहित छे. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते (उत्पलना) जीवो उच्छ्वासक (श्वास लेनारा) छे, निःश्वासक (श्वास मूकनारा) छे के अनुच्छ्वासक-निःश्वासक (श्वास नहि लेनारा अने नहि मूकनारा) होय छे? [उ०] हे गौतम! १ कोई एक उउच्छ्वासक छे, २ कोई एक निःश्वासक छे, अने ३ कोई एक अनुच्छ्वासकनिःश्वासक पण छे. ४ अथवा अनेक जीवो उच्छ्वासक छे, ५ अनेक निःश्वासक छे, अने ६ अनेक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक पण छे. १-४ अथवा एक उच्छ्वासक, अने एक निश्वासक छे. १-४ अथवा एक उच्छ्वासक अने एक अनुच्छ्वासक निःश्वासक. छे, १-४ अथवा एक निःश्वासक अने एक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक छे, १-८ अथवा एक उच्छ्वासक, एक निःच्छ्वासक अने एक अनुच्छ्वासकनिःश्वासक छे.-ए प्रमाणे आठ भांगा करवा. ए सर्व मळीने छवीश भांगा थाय छे.

ते णं भंते! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ?, गोयमा! नो अणाहारगा आहारए वा अणाहारए वा एवं अट्ठ भंगा १७। ते णं भंते! जीवा किं विरता अविरता विरताविरता ?, गोयमा! नो विरता नो विरयाविरया अविरए वा अविरया वा १८। ते णं भंते! जीवा किं सकिरिया अकिरिया ?, गोयमा! नो अकिरिया, सकिरिए वा सकिरिया वा १९। ते णं भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा अट्ठविहबंधगा,?, गोयमा! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा अट्ठ भंगा २०। ते णं भंते! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता भयसन्नोवउत्ता मेहुणसन्नोवउत्ता परिग्गहसन्नोवउत्ता ?, गोयमा! आहारसन्नोवउत्ता वा असीती भंगा २१।

[प्र०] हे भगवन्! शुं ते (उत्पलना) जीवो आहारक छे के अनाहारक छे? [उ०] हे गौतम! तेओ सघळा अनाहारक नथी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पण एक आहारक छे, अथवा एक अनाहारक छे.-इत्यादि आठ भांगा अहीं कहेवा. [प्र०] हे भगवान्! शुं ते उत्पलना जीवो सर्वविरति छे, अविरति छे के विरताविरत (देशविरति) छे? [उ०] हे गौतम! ते सर्वविरति नथी, विरताविरत (देशविरत) नथी, पण एक जीव अविरति छे, अथवा अनेक जीवो अविरति छे. [प्र०] हे भगवन्! ते उत्पलना जीवो शुं सक्रिय छे के अक्रिय छे? [उ०] हे गौतम! तेओ अक्रिय नथी पण तेमांनो एक जीव सक्रिय छे अथवा अनेक जीवो सक्रिय छे. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते उत्पलना जीवो सात प्रकारे कर्मना बंधक छे के आठ प्रकारे कर्मना बंधक छे? [उ०] हे गौतम! ते जीवो सात प्रकारे कर्मना बंधक छे, अथवा आठ प्रकारे बंधक छे. अहीं आठ भांगा कहेवा. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते (उत्पलना) जीवो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, भयसंज्ञाना उपयोगवाळा, मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा, के परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा छे? [उ०] हे गौतम! तेओ आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा छे-इत्यादि एंशी भांगा कहेवा.

ते णं भंते! जीवा किं कोहकसाई माणकसाई मायाकसाई लोभकसाई?, असीती भंगा २२। ते णं भंते! जीवा किं इत्थीवेदगा पुरिसवेदगा नपुंसगवेदगा?, गोयमा! नो इत्थिवेदगा नो पुरिसवेदगा नपुंसगवेदए वा नपुंसगवेदगा वा २३। ते णं भंते! जीवा किं इत्थीवेदबंधगा पुरिसवेदबंधगा नपुंसगवेदबंधगा?, गोयमा! इत्थिवेदबंधए वा पुरिसवेदबंधए वा नपुंसगवेयबंधए वा छव्वीसं भंगा २४। ते णं भंते! जीवा किं सन्नी असन्नी?, गोयम! नो सन्नी असन्नी वा असन्निणो वा २५। ते णं भंते! जीवा किं सइंदिया अणिंदिया?, गोयमा! नो अणिंदिया, सइंदिए वा सइंदिया वा २६।

For Private and Personal Use Only

[प्र०] हे भगवन्! शुं ते उत्पलना जीवो क्रोधकषायवाळा, मानकषायवाळा, मायाकषायवाळा के लोभकषायवाळा छे? [उ०] हे गौतम! अहीं पण एंशी भांगा कहेवा. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते उत्पलना जीवो स्त्रीवेदवाळा, पुरुषवेदवाळा के नपुंसकवेदवाळा होय? [उ०] हे गौतम! ते स्त्रीवेदवाळा नथी, पुरुषवेदवाळा नथी, पण एक जीव नपुंसकवेदवाळो के अनेक नपुंसकवेदवाळा होय. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते उत्पलना जीवो स्त्रीवेदना बंधक, पुरुष वेदना बंधक के नपुंसक वेदना बंधक छे? [उ०] हे गौतम! ते स्त्रीवेदना बंधक, पुरुषवेदना बंधक अथवा नपुंसकवेदना बंधक छे. अहीं पण छवीश भांगा कहेवा. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते उत्पल जीवो संज्ञी छे के असंज्ञी छे? [उ०] हे गौतम! ते संज्ञी नथी, एक असंज्ञी छे, अथवा अनेक असंज्ञिओ छे. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते उत्पलजीवो इंद्रियसहित छे के इंद्रियरहित छे? [उ०] हे गौतम! ते इंद्रियरहित नथी, पण एक जीव इंद्रियवाळो छे, अथवा अनेक जीवो इंद्रियवाळा छे.

से णं भंते! उप्पलजीवेति कालतो केवचिरं होइ?, गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं २७। से णं भंते! उप्पलजीवे पुढविजीवे पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा?, केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा?, गोयमा! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा, से णं भंते! उप्पलजीवे आउजीवे एवं चेव एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे, से णं भंते! उप्पलजीवे से वणस्सइजीवे से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवइयं कालं सेवेज्जा केवतियं कालं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गतिरागतिं कज्जइ ?, गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं, कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं अणंतं कालं-तरुकालं, एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गतिरागतिं कज्जइ,

[प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव उत्पलपणे कालथी क्यांसुधी रहे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त सुधी अने उत्कृष्टथी असंख्य काल सुधी रहे. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव पृथिवीकायिकमां आवे, अने फरीथी पाछो उत्पलमां आवे-ए प्रमाणे केटलो काळ सेवे-केटला काळ सुधी गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव अने उत्कृष्टथी असंख्यात भव सुधी गमनागमन करे, कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी असंख्यकाल; एटलो काल सेवे-केटलो काल गमनागमन करे. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव अप्कायिकपणे उपजे अने फरीथी ते पाछो उत्पलमां आवे. ए प्रमाणे केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. जेम पृथिवीना जीव संबन्धे (सू० ३१) कह्युं तेम यावत् वायुना जीव सुधी कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव वनस्पतिमां आवे, अने ते फरीथी उत्पलमां आवे ए प्रमाणे केटलो काल सेवे-केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, अने उत्कृष्टथी अनंत भव सुधी गमनागमन करे, कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी अनंत काल-वनस्पतिकाल पर्यन्त; एटलो काळ सेवे-एटलो काल गमनागमन करे.

से णं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदियजीवे पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवइयं कालं सेवेज्जा केवइयं कालं गतिरागतिं कज्जइ ?, गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जह-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्नेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं संखेज्जं कालं एवतियं कालं सेवेज्जा एवतियं कालं गतिरागतिं कज्जइ, एवं तेइंदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवेवि, से णं भंते ! उप्पलजीवे पंचेंदियतिरिक्खजोणियजीवे पुणरवि उप्पलजीवेत्ति पुच्छा, गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ताइं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्ताइं एवतियं कालं सेवेज्जा एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा, एवं मणुस्सेणवि समं जाव एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २८। ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ?, गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं एवं जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाणं आहारो तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति नवरं नियमा छद्दिसिं सेसं तं चेव २९।

[प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव बेइन्द्रियमां आवे, अने ते फरीथी उत्पलपणे उपजे; ए प्रमाणे ते केटलो काळ सेवे–केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, उत्कृष्टथी संख्याता भवो; तथा कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्यातो काल; एटलो काल सेवे–एटलो काल गमनागमन करे. एज प्रमाणे त्रीन्द्रियपणे, अने चतुरिंद्रियजीवपणे गमनागमन करवामां पूर्ववत् काल जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! उत्पलनो जीव पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकपणे उपजे अने ते फरीथी उत्पलपणे उपजे, एम केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, उत्कृष्टथी आठ भवो, कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी पूर्वकोटिपृथक्त्व; एटलो काल सेवे–एटलो काल गमनागमन करे. ए प्रमाणे उत्पलनो जीव मनुष्य साथे पण यावत् एटलो काल गमनागमन करे. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो

For Private and Personal Use Only

कया पदार्थनो आहार करे? [उ०] हे गौतम! ते जीवो द्रव्यथी अनन्तप्रदेशिक द्रव्योनो आहार करे, इत्यादि सर्व आहारक उद्देशकमां वनस्पतिकायिकोनो आहार कह्यो छे ते प्रमाणे यावत् 'तेओ सर्वात्मना-सर्व प्रदेशोए आहार करे छे,' त्यां सुधी कहेवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के तेओ अवश्य छए दिशीनो आहार करे छे, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

तेसि णं भंते! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?, गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ३०। तेसि णं भंते! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता?, गोयमा! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा-वेदणासमुग्घाए कसायस० मारणंतियस० ३१। ते णं भंते! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति?, गोयमा! समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति ३२। ते णं भंते! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उवव० एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं। अह भंते! सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए उप्पलकंदत्ताए उप्पलनालत्ताए उप्पलपत्तत्ताए उप्पलकेसरत्ताए उप्पलकन्नियत्ताए उप्पलथिभुगत्ताए उववन्नपुव्वा?, हंता गोयमा! असतिं अदुवा अणंतक्खुत्तो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ३३॥ (सूत्रं ४०९)॥ उप्पलुद्देसए॥ ११-१॥

[प्र०] हे भगवन्! ते उत्पलना जीवोनी स्थिति (आयुष) केटला काल सुधी कही छे? [उ०] हे गौतम! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी दस हजार वर्षनी स्थिति कही छे. [प्र०] हे भगवन्! ते उत्पलना जीवोने केटला समुद्घातो कह्या छे? [उ०] हे

कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण समुद्घातो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात अने मारणांतिकसमुद्घात. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो मारणांतिक समुद्घात वडे समवहत (समुद्घातने प्राप्त) थइने मरे, के असमवहत (समुद्घातने प्राप्त थया शिवाय) मरे ? [उ०] हे गौतम ! ते समवहत थइने पण मरे अने असमवहत थइने पण मरे. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो मरीने तरत क्यां जाय ?-क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, तिर्यंचयोनीकोमां उत्पन्न थाय, मनुष्योमां उत्पन्न थाय के के देवोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्रना व्युत्क्रांतिपदमां उद्वर्तना प्रकरणमां वनस्पतिकायिकोने कह्या प्रमाणे अहीं पण कहेवुं [प्र०] हे भगवन् ! सर्व प्राणो भूतो, सर्व जीवो अने सर्व सत्त्वो उत्पलना मूलपणे, कंदपणे, नालपणे, पांदडापणे, केसरपणे, कर्णिकापणे अने थिभुग (पांदडानुं उत्पत्ति स्थान) पणे पूर्वे उत्पन्न थया छे ? [उ०] हा, गौतम ! जीवो अनेकवार अथवा अनन्तवार पूर्वे उत्पन्न थया छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. ॥४०९॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां प्रथम उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक २.

सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ?, गोयमा ! एगजीवे एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अणंतखुत्तो. नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्र ४१०) ११-२ ॥

[प्र०] हे भगवन्! एक पांदडावाळो शालूक (उत्पलकन्द) शुं एक जीववाळो छे के अनेक जीववाळो छे? [उ०] हे गौतम! ते एक जीववाळो छे; ए प्रमाणे उत्पलउद्देशकनी सघळी वक्तव्यता कहेवी, यावद् 'अनन्तवार उत्पन्न थया छे.' परन्तु विशेष ए छे के, शालूकना शरीरनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटली. अने उत्कृष्ट धनुषपृथक्त्व छे बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं. हे भगवन्! ते एमज छे हे भगवन् ते एमज छे. ॥ ४१० ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ३.

पलासे णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे?, एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं गाउयपुहुत्ता, देवा एएसु न उववज्जंति। लेसासु ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे०?, गोयमा! कण्हलेसे वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा छव्वीसं भंगा, सेसं तं चेव। सेवं भंते! २ त्ति ॥ (सूत्रं ४११) ॥ ११-३ ॥

[प्र] हे भगवन्! पलाशवृक्ष [प्रारंभमां] एक पांदडावाळो होय त्यारे शुं एक जीववाळो होय के अनेक जीववाळो होय? [उ०] हे गौतम! उत्पलउद्देशकनी बधी वक्तव्यता अहीं कहेवी. परन्तु विशेष ए छे के, पलाशना शरीरनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट गाउपृथक्त्व छे. वळी देवो च्यवीने ए पलाशवृक्षमां उत्पन्न थता नथी. [प्र०] लेश्याद्वा-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रमां हे भगवन् ! शुं पलाशवृक्षना जीवो कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा के कापोतलेश्यावाळा होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कृष्ण-लेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा के कापोतलेश्यावाळा होय, ए प्रमाणे छव्वीश भांगा कहेवा. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. ॥ ४११ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां त्रीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ४.

कुंभिए णं भंते ! जीवे एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ?, एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवरं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वासपुहुत्तं, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (सू०४१२) ॥ ११-४ ॥

[प्र०] हे भगवन् ! एक पांदडावाळो कुंभिक [वनस्पतिविशेष] शुं एक जीववाळो होय के अनेकजीववाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे पलाशोद्देशकमां कह्या प्रमाणे बधुं कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के कुंभिकनी स्थिति (आयु) जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्ट वर्षपृथक्त्व-बे वर्षथी नव वर्ष-सुधीनी होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. ॥ ४१२ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां चोथा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

For Private and Personal Use Only

उद्देशक ५.

नालिए णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ?, एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते त्ति ॥ (सूत्रं ४१३) ॥ ११-५ ॥

[प्र०] हे भगवन्! एकपांदडावाळो नाडिक [वनस्पतिविशेष] शुं एक जीववाळो छे के अनेकजीववाळो छे ? [उ] हे गौतम! कुंभिक उद्देशकनी [उ० ४ सू० १] बधी वक्तव्यता अहीं कहेवी. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. ॥ ४१३ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मां शतकमा पांचमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ६

पउमे णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ?, उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥ (सूत्रं ४१४) ॥ ११-६ ॥

[प्र०] हे भगवन् एक पांदडावाळुं पद्म शुं एक जीववाळुं होय के अनेक जीववाळुं होय ? [उ०] हे गौतम! उत्पल उद्देशकमां (उ० १ सू०) कह्या प्रमाणे बधुं कहेवुं. हे भगवन्! ते एमज छे. हे भगवन्! ते एमज छे. ॥ ४१४ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां छट्ठा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ७.

कन्निए णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे० ?, एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥ (सूत्र ४१५) ११-७॥

[प्र०] हे भगवन्! एक पांदडावाळी कर्णिका शुं एक जीववाळी छे के अनेक जीववाळी छे? [उ०] हे गौतम! बधु पूर्व प्रमाणे कहेवुं. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. ॥ ४१५ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां सातमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ८.

नलिणे णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे?, एवं चेव निरवसेसं जाव अणंतखुत्तो॥ सेवं भंते! सेवं भंतेत्ति (सूत्र ४१६)॥ ११-८॥

[प्र०] हे भगवन्! एकपत्रवाळुं नलिन (कमलविशेष) शुं एकजीववाळुं छे के अनेकजीववाळुं छे? [उ०] हे गौतम! ए बधुं पूर्व प्रमाणे (उ० १ सू० १) 'यावत् सर्व जीवो अनंतवार उत्पन्न थया छे' त्यांसुधी कहेवुं. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. ॥ ४१५ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां आठमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्देशक ९.

तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था वन्नओ, तस्स णं हत्थिणागपुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे एत्थ णं सहसम्बवणे णामं उज्जाणे होत्था सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसंनिप्पगासे सुहसीयलच्छाए मणोरमे साउफले अकंटए पासादीए जाव पडिरूवे, तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था महयाहिमवंत० वन्नओ, तस्स णं सिवस्स रन्नो धारिणी नामं देवी होत्था सुकुमालपाणिपाया वन्नओ. तस्स णं सिवस्स रन्नो पुत्ते धारणीए अत्तए सिवभद्दए नामं कुमारे होत्था सुकुमाल० जहा सूरियकंते जाव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ,

ते काले-ते समये हस्तिनापुर नामे नगर हतुं वर्णन. ते हस्तिनापुर नगरनी बहार उत्तरपूर्व दिशामां-ईशानकोणमां-सहस्राम्रवन नामे उद्यान हतुं. ते उद्यान सर्व ऋतुना पुष्प अने फलथी समृद्ध, रम्य अने नंदनवन समान हतुं. तेनी छाया सुखकारक अने शीतळ हती, ते मनोहर, स्वादिष्टफलवाळुं, कंटकरहित, प्रसन्नता आपनार, यावत् प्रतिरूप-सुन्दर-हतुं. ते हस्तिनापुर नगरमां शिव नामे राजा हतो, ते मोटा हिमाचल पर्वतनी पेठे [सव राजाओमां] श्रेष्ठ हतो, [इत्यादि राजानुं वर्णन कहेवुं.] ते शिव राजाने धारिणी नामे पट्टराणी हती. तेना हाथ पग सुकुमाल हता,-[इत्यादि श्रीनुं वर्णन कहेवुं.] ते शिवराजाने धारिणी राणीथी उत्पन्न थयेलो शिवभद्र नामे पुत्र हतो, तेना हाथ पग सुकुमाल हता-इत्यादि कुमारनुं वर्णन सूर्यकांत राजकुमारनी पेठे कहेवुं. यावत् ते कुमार [राज्य, राष्ट्र, सैन्यादिने] जोतो जोतो विहरे छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तए णं तस्स सिवस्स रन्नो अन्नया कयावि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं वड्ढामि पसूहिं वड्ढामि रज्जेणं वड्ढामि एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि विपुलधणकणगरयणजावसंतसारसावएज्जेणं अतीव २ अभिवड्ढामि तं किन्नं अहं पुरा पोराणाणं जाव एगंतसोक्खयं उव्वेहमाणे विहरामि ? तं जाव ताव अहं हिरन्नेणं वड्ढामि तं चेव जाव अभिवड्ढामि जाव मे सामंतरायाणोऽवि वसे वट्टंति ताव ता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जेठावेत्ता तं सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूले वाणपत्था तावसा भवंति तं०—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जन्नई सड्ढई थालई हुंब उट्ठ दंतुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा संपक्खाला उद्धकंडूयगा अहोकंडूयगा दाहिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमया कूलधमगा मियलुद्धा हत्थितावसा जलाभिसेयकिढिणगाया अंबुवासिणो वाउवासिणो वक्कलवासिणो जलवासिणो चेलवासिणो अंबुभक्खिणो वायभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकंदमूलपंडुपत्तपुप्फफलाहारा उद्दंडा रुक्खमूलिया मंडलिया वणवासिणो दिसापोक्खिया आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियंपिव कंडुसोल्लियंपिव कट्ठसोल्लियंपिव अप्पाणं जाव करेमाणा विहरंति [जहा उववाइए जाव कट्ठसोल्लियंपिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति] ॥ तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिय तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता

For Private and Personal Use Only

दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइएवि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि-कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव विहरित्त-एत्तिकट्टु, एवं संपेहेनि ॥

हवे कोइ एक दिवसे शिवराजाने पूर्वरात्रिना पाछला भागमां राज्यकारभारनो विचार करता आ आवो अध्यवसाय-संकल्प उत्पन्न थयो के मारा पूर्व पुण्यकर्मोनो प्रभाव छे, इत्यादि तामलि तापसनी पेठे कहेवुं, जे यावत् हुं पुत्रोवडे, पशुओवडे, राज्यवडे, राष्ट्रवडे बलवडे, वाहनवडे, कोशवडे कोष्ठागारवडे, पुरवडे अने अन्तःपुरवडे वृद्धि पामुं छुं. वळी पुष्कळ धन, कनक, रत्न यावत् सारभूत द्रव्यवडे अतिशय अत्यंत वृद्धि पामुं छुं तो शुं हवे हुं मारा पूर्व पुण्यकर्मोना फलरूप एकान्त सुखने भोगवतो ज विहरुं ? ते माटे ज्यांसुधी हुं हिरण्यथी वृद्धि पामुं छु, यावत् पूर्वे कह्या प्रमाणे वृद्धि पामुं छुं ज्यांसुधी सामंत राजाओ मारे तावे छे, त्यांसुधी मारे काले प्रातःकाळे सूर्य देदीप्यमान थये छते घणी लोढीओ, लोहना कडायां कडछा अने त्रांबाना बीजा तापसना उपकरणोने घडावीने शिवभद्र कुमारने राज्यमां स्थापीने घणी लोढीओ, लोहना कडायां, कडछा अने त्रांबाना तापसना उपकरणो लइने, जे आ गंगाने कांठे वानप्रस्थ तापसो रहे छे, ते आ प्रकारे-अग्निहोत्री, पोतिक-वस्त्र धारण करनारा-इत्यादि 'उववाइअ' सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत्-जेओ काष्ठथी शरीरने तपावता विचरे छे, ते तापसोमां जे तापसो दिशाप्रोक्षक (पाणी वडे दिशाने पूजी फल पुष्पादि ग्रहण करनारा) छे, तेओनी पासे मारे मुंड थइने दिक्प्रोक्षकतापसपणे प्रव्रज्या अंगीकार करवी श्रेय छे, प्रव्रज्या ग्रहण करीने हु आ आवा प्रकारनो अभिग्रह ग्रहण करीश. ते आ प्रकारे-यावज्जीव निरंतर छट्ठ छट्ठ करवाथी दिक्चक्रवाल तपकर्म वडे उंचा हाथ राखीने रहेवुं मने कल्पे-ए प्रमाणे ते शिवराजा विचारे छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपेहेत्ता कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोहीलोह जाव घडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणागपुरं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसिय जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं से सिवे राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंत्ति २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं ३ विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति, तए णं से सिवे राया अणेगगणनायगदंडनायग जाव संधिपाल सद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेन्ति २ अट्ठसएणं सोवन्नियाणं कलसाणं जाव अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचइ २ पम्हलसुकुमालाए सुरभिए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ पम्ह० २ सरसेणं गोसीसेणं एवं जहेव जमालिस्स अलंकारो तहेव जाव कप्परुक्खगंपिव अलंकियविभूसियं करेंति २ करयल जाव कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति जएणं विजएणं वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं जहा उववाइए कोणियस्स जाव परमाउं पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणपुरस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागरनगर जाव विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति, तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाए महया हिमवंत० वन्नओ जाव विहरइ,

ए प्रमाणे विचारीने आवती काले प्रातःकाळे सूर्य देदीप्यमान छते, अनेक प्रकारना लोढी, कडाया वगेरे तापसना उपकरणो तैयार करावी पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे तेओने आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रियो! शीघ्र आ हस्तिनापुर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नगरनी बाहेर अने अंदर जल छंटकावी साफक।वो–इत्यादि यावत् तेम करी तेओ तेनी आज्ञाने पाछी आपे छे. त्यारपछी ते शिवराजा फरीने पण ते कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलोवीने तेणे आ प्रमाणेकह्युं–हे देवानुप्रियो! शीघ्र शिवभद्र कुमारना महाअर्थवाळा यावत् विपुल राज्याभिषेकनी तैयारी करो. त्यारबाद चे कौटुंबिक पुरुषो ते प्रमाणे यावत् राज्याभिषेकनी तैयारी करे छे, त्यारपछी ते शिवराजा अनेक गणनायक, दंडनायक, यावत् संधिपालना परिवारयुक्त शिवभद्र कुमारने उत्तम सिंहासन उपर पूर्व दिशा सन्मुख बेसडे छे, बेसाडीने एकसो साठ सोनाना कलशोवडे, यावत् एकसो आठ माटीना कलशोवडे, सर्व ऋद्धिथी यावत् वादित्रादिकना शब्दोवडे मोटा राज्याभिषेकथी अभिषेक करे छे. त्यारपछी पांपण जेवा सुकुमाल अने सुगंधी गंधवस्त्रवडे तेनां शरीरने साफ करे छे, साफ करीने सरस गोशीर्षचंदन वडे लेप करी यावत् जेम जमालिनुं वर्णन कर्युं छे तेम कल्पवृक्षनी पेठे तेने अलंकृत–विभूषित करे छे. त्यारपछी हाथ जोडी शिवभद्रकुमारने जय अने विजयथी वधावे छे; वधावीने इष्ट, कान्त, प्रिय वाणीवडे आशीर्वाद आपता औपापातिक सूत्रमां कोणिक राजा संबन्धे कह्या प्रमाणे तेओए कह्युं–यावत् तुं दीर्घायुषी था, अने इष्ट जनना परिवारयुक्त हस्तिनापुर नगर अने बीजा अनेक ग्राम, आकर तथा नगरोनुं स्वामिपणुं भोगव–इत्यादि कहीने तेओ जय जय शब्द बोले छे. त्यारबाद ते शिवभद्र कुमार राजा थयो, ते मोटा हिमाचलनी पेठे सर्व राजाओमां मुख्य थइने यावत् विहरे छे, अहीं शिवभद्रराजानुं वर्णन करवुं.

तए णं से सिवे राया अन्नया कयाइं सोभणंसि तिहिकरणदिवसमुहुत्तनक्खत्तंसि विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेंति उवक्खडावेत्ता मित्तणाइनियगजावपरिजणं रायाणो य खत्तिया आमंतेति आमंतेत्ता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तओ पच्छा ण्हाए जाव सरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्तणातिनियगसयण जाव परिजणेणं राएहि य खत्तिएहि य सद्धिं विपुलं असणपाणखाइमसाइमं एवं जहा तामली जाव सक्कारेति संमाणेति सक्कारेत्ता संमाणेत्ता तं मित्तणाति जाव परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छइ आपुच्छित्ता सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति तं चेव जाव तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइएऽविय णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं तं चेव जाव अभिग्गहं अभिगिण्हइ २ पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

त्यारपछी ते शिवराजा अन्य कोइ दिवसे प्रशस्त तिथि, करण, दिवस अने नक्षत्रना योगमां विपुल अशन, पान खादिम अने स्वादिम वस्तुओने तैयार करावे छे. तैयार करावी मित्र, ज्ञाति, यावत् पोताना परिजनने, राजाओने अने क्षत्रियोने आमन्त्रण करे छे, आमन्त्रण करी त्यार बाद स्नान करी यावत् शरीरने अलंकृत करी भोजनवेलाए भोजनमंडपमां उत्तम सुखासन उपर बेसी मित्र, ज्ञाति अने पोताना स्वजन यावत् परिजन साथे तथा राजा अने क्षत्रियो साथे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम भोजन करी तामलितापसनी पेठे यावत् ते शिवराजा बधाओनो सत्कार करे छे, सन्मान करे छे. सत्कार अने सन्मान करीने मित्र, ज्ञाति, पोताना स्वजन, यावत् परिजननी तथा राजाओ, क्षत्रियो अने शिवभद्र राजानी रजा मागे छे. रजा मागीने अनेक प्रकारना लोढी, लोढाना कडायां, कडछा यावत् तापसना उचित उपकरणो लइने गंगाने कांठे जे आ वानप्रस्थ तापसो रहे छे—इत्यादि सर्व पूर्ववत्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाणवुं, यावत् ते दिशाप्रोक्षक तापसोनी पासे दीक्षित थइ दिशाप्रोक्षकतापसरूपे प्रव्रज्या ग्रहण करी प्रव्रजित थइने ते आ प्रकारनो अभिग्रह धारण करे छे-'मारे यावज्जीव निरंतर छट्ठ छट्ठनो तप करवो कल्पे'-इत्यादि पूर्ववत् अभिग्रह ग्रहण करीने प्रथम छट्ठ तपनो स्वीकार करी विहरे छे.

तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ आयावणभूमिओ पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयगं गिण्हइ गिण्हित्ता पुरच्छिमं दिसं पोक्खेइ पुरच्छिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं अभि० २, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउत्ति कट्टु पुरच्छिमं दिसं पसरति पुर०२ जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हइ २ किढिणसंकाइयं भरेइ कढि० २ दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गेण्हइ २ जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ किढिणसंकाइयगं ठवेइ किढि०२ वेदिं वड्डेइ २ उवलेवणसंमज्जणं करेइ उ०२ दब्भसगब्भकलसाहत्थगए जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ गंगामहानदीं ओगाहेति २ जलमज्जणं करेइ २ जलकीडं करेइ २ जलाभिसेयं करेति २ आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवयपितिकयकज्जे दब्भसगब्भकलसाहत्थगए गंगाओ म २ नईओ पच्चुत्तरइ २ जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेतिं रएति वेतिं रएत्ता सरएणं अरणिं महेति सर० २ अग्गिं पाडेति २ अग्गिं संधुक्केइ २ समिहाकट्ठाइं

For Private and Personal Use Only

पक्खिवइ समिहाकट्ठाइं पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ अग्गिं उज्जालेत्ता—'अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे। तं०—सकहं वक्कलं ठाणं, सिज्जाभंडं कमंडलुं ॥ ७० ॥ दंडदारुं तहा पाणं, अहे ताइं समादहे ॥ महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, अग्गिं हुणित्ता चरुं साहेइ, चरुं साहेत्ता बलिं वइस्सदेवं करेइ बलिं वइस्सइदेवं करेत्ता अतिहिपूयं करेइ अतिहिपूयं करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति,

त्यारबाद प्रथम छठ्ठ तपना पारणाना दिवसे ते शिव राजर्षि आतापना भूमिथी नीचे आवे छे, नीचे आवीने वाल्कलना वस्त्र पहेरी ज्यां पोतानी झुंपडी छे त्यां आवे छे, त्यां आवी किढिन (वांसनुं पात्र) अने कावडने ग्रहण करे छे, ग्रहण करी पूर्व दिशाने प्रोक्षितकरी 'पूर्व दिशाना सोम महाराजा धर्मसाधनमां प्रवृत्त थएला शिव राजर्षिनुं रक्षण करो, अने पूर्व दिशमां रहेला कंद, मूल, छाल, पांदडा, पुष्प, फळ, बीज अने हरित-लीली वनस्पतिने लेवानी अनुज्ञा आपो'-एम कही ते शिव राजर्षि पूर्व दिशा तरफ जाय छे, जइने त्यां रहेला कंद, यावत्-लीली वनस्पतिने ग्रहण करीने पोतानी कावड भरे छे. त्यार पछी. दर्भ, कुश, समिध-काष्ठ अने झाडनी शाखाने मरडी पांदडाओने ले छे; लेईने ज्यां पोतानी झुंपडी छे त्यां आवे छे, आवीने कावडने नीचे मूके छे, मूकीने वेदिकाने प्रमार्जित करे छे; पछी वेदिकाने (छाण पाणीवडे) लींपी शुद्ध करे छे. त्यारबाद डाभ अने कलशने हाथमां लइ ज्यां गंगा महानदी छे, त्यां आवीने गंगा महानदीमां प्रवेश करे छे, प्रवेश करी डुबकी मारे छे. जलक्रीडा करे छे, अने स्नान करे छे, पछी आचमन करी चोक्खा थइ-परम पवित्र थइ देवता अने पितृ कार्य करी डाभ अने पाणीनो कलश हाथमां लइ गंगा महानदीथी बहार नीकळीने ज्यां पोतानी झुंपडी छे, त्यां आवे छे आवीने डाभ, कुश अने वालुका वडे वेदिने बनावे छे, बनावी मथनकाष्ठवडे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरणिने घसे छे, घसीने अग्नि पाडे छे, पाडीने अग्निने सळगावे छे, पछी तेमां समिधना काष्ठोने नांखी ते अग्निने प्रज्वलित करे छे, अने अग्निनी दक्षिण बाजुए आ सात वस्तुओ मुके छे ते आ प्रमाणे-"१ सकथा (उपकरणविशेष), २ वल्कल, ३ दीप, ४ शय्याना उपकरण, ५ कमंडल, ६ दंड अने ७ आत्मा (पोते). ए सर्वने एकठा करे छे." पछी मध, घी अने चोखा वडे अग्निमां होम करे छे होम करीने चरु-बलि तैयार करे छे, अने बलिथी वैश्वदेवनी पूजा करे छे, त्यारबाद अतिथिनी पूजा करी ते शिव राजर्षि पोते आहार करे छे.

तए णं से सिवे रायरिसी दोचं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तए णं से सिवे रायरिसी दोचे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ आयावण०२ एवं जहा पढमपारणगं नवरं दाहिणगं दिसं पोक्खेति २ दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं सेसं तं चेव आहारमाहारेइ, तए णं से सिवरायरिसी तचं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तए णं से सिवे रायरिसी सेसं तं चेव नवरं पच्चच्छिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं सेसं तं चेव जाव आहारमाहारेइ, तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं एवं तं चेव नवरं उत्तरदिसं पोक्खेइ उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं, सेसं तं चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥ (सूत्रं ४१७) ॥

त्यारबाद ते शिवराजर्षि फरीवार छट्ठ तप करीने विहरे छे, पछी ते शिवराजर्षि आतापनाभूमिथी उतरीव ल्कलनुं वस्त्र पहेरे छे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यादि बधुं प्रथम पारणानी पेठे जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के बीजा पारणा वखते दक्षिण दिशाने प्रोक्षित करे–पूजे, तेम करीने एम कहे के 'दक्षिण दिशाना (लोकपाल) यम महाराजा प्रस्थान–परलोकसाधन–मां प्रवृत्त थएला शिवराजर्षिनुं रक्षण करो' इत्यादि सर्व पूर्ववत् कहेवुं, यावत् पोते आहार करे छे. पछी ते शिवराजर्षि त्रीजा छट्ठ तपने स्वीकारी विहरे छे, तेना पारणानी बधी हकीकत पूर्वनी पेठे जाणवी, परंतु विशेष ए छे के, पश्चिम दिशानुं प्रोक्षण–पूजन–करे, अने एम कहे के पश्चिम दिशाना (लोकपाल) वरुण महाराजा प्रस्थान–परलोक साधनमां प्रवृत्त थयेला शिव राजर्षिनुं रक्षण करो, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. यावत् त्यार पछी ते आहार करे. पछी ते शिवराजर्षि चोथा छट्ठना तपने स्वीकारी विहरे छे–इत्यादि पूर्ववत् जाणवुं. परन्तु (चोथे पारणे) उत्तर दिशाने पूजे छे, अने एम कहे छे के 'उत्तर दिशाना (लोकपाल) वैश्रमण महाराजा धर्मसाधनमां प्रवृत्त थयेला शिवराजर्षिनुं रक्षण करो, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् त्यार पछी पोते आहार करे छे. ॥ ४१७ ॥

तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जाव विणीययाए अन्नया कयावि तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पन्ने, से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे तेण परं न जाणति न पासति, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–अत्थि णं ममं अइसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, एवं संपेहेइ एवं० २ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ आ० २ वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेणेव उवागच्छइ २ सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडगं किढिणसंकाइयं च गेण्हइ २ जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ उवा० २ भंडनिक्खेवं करेइ २ हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडगतिगजावपहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए जाव दीवा य समुद्दा य, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडगतिगजाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ–एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ जाव परूवेइ– अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, से कहमेयं मन्ने एवं?।

ए प्रमाणे निरंतर छट्ठ छट्ठना तप करवाथी दिक्चक्रवाल तप करता, यावत् आतापना लेता ते शिवराजर्षिने प्रकृतिनी भद्रता अने यावद् विनीतताथी अन्य कोइ दिवसे तेना आवरणभूत कर्मोना क्षयोपशम थवाथी ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषण करता विभंग नामे ज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी ते उत्पन्न थयेला ते विभंगज्ञान वडे आ लोकमां सात द्वीपो अने सात समुद्रो जुए छे, ते पछी आगळ जाणता नथी, के जोता नथी. त्यारबाद ते शिवराजर्षिने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय उत्पन्न थयो के, 'मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने ए प्रमाणे आ लोकमां सात द्वीप अने सात समुद्रो छे, अने त्यारपछी द्वीपो अने समुद्रो नथी'–एम विचारे छे, विचारीने आतापना भूमिथी नीचे उतरे छे, अने वल्कलनां वस्त्रो पहेरी ज्यां पोतानी झुंपडी छे त्यां आवी अनेक प्रकारना लोढी, लोढाना कडायां अने कडछा यावद् बीजा उपकरणो अने कावडने ग्रहण करे छे, अने ज्यां हस्तिनापुर नगर छे अने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्यां तापसोनुं यावद् आश्रम छे त्यां आवे छे, आवीने उपकरण वगेरेने मूके छे, अने हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक, त्रिक, यावद् राजमार्गोमां घणा माणसोने एम कहे छे, यावद् एम प्ररूपे छे के, 'हे देवानुप्रियो! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने आ लोकमां ए प्रमाणे सात द्वीपो अने सात समुद्रो छे,' त्यारबाद ते शिवराजर्षि पासेथी ए प्रकारनुं वचन सांभळी, अवधारी हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक, त्रिक, यवद् राजमार्गोमां घणा माणसो परस्पर एम कहे छे-यावद् एम प्ररूपे छे-हे देवानुप्रियो! शिवराजर्षि आ प्रमाणे कहे छे-यावत् प्ररूपे छे के हे देवानुप्रियो! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, यावत् ए प्रमाणे आ लोकमां सात द्वीप अने सात समुद्रो छे, त्यार पछी नथी, ते एम केवी रीते होय ?

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसा जाव पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खइ एवं जाव परूवेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ जाव परूवेइ-अत्थि णं देवाणुप्पिया! तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, से कहमेयं मन्ने एवं?, तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव सड्ढे जहा नियंठुद्देसए जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, से कहमेयं भंते! एवं?, गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जन्नं गोयमा! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमातिक्खइ तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव भंडनिक्खेवं करेति हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग० तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तं चेव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सव्वं भाणियव्वं जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्णं मिच्छा, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि–एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभूरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जे दीवसमुद्दे पन्नत्ते समणाउसो!॥

ते काले–ते समये महावीरस्वामी समोसर्या, पर्षद् पण पाछी गई. ते काले–ते समये श्रमण भगवन् महावीरना मोटा शिष्य इंद्रभूति नामे अनगार बीजा शतकना निर्ग्रन्थोद्देशकमां वर्णव्या प्रमाणे यावत् भिक्षाए जता घणा माणसोनो शब्द सांभळे छे–बहु माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे–यावत् प्ररूपे छे के 'हे देवानुप्रियो! शिव राजर्षि एम कहे छे–यावत् एम प्ररूपे छे–हे देवानुप्रियो! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने यावत् सात द्वीप अने सात समुद्रो छे, त्यार पछी द्वीपो अने समुद्रो नथी,' तो ए प्रमाणे केम होय? [प्र०] त्यार पछी भगवान् गौतमे घणा माणसो पासे आ वात सांभळी, अवधारी श्रद्धावाळा थई निर्ग्रंथ उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् श्रमण भगवंत महावीरने पूछ्युं–हे भगवन्! शिवराजर्षि कहे छे के–'यावत् सात द्वीप अने सात समुद्र छे, त्यार पछी कांइ नथी' तो ए प्रमाणे केम होइ शके? [उ०] 'हे गौतम'! एम कही श्रमण भगवान महावीरे गौतमने आ प्रमाणे कह्युं–हे गौतम! घणा माणसो जे परस्पर ए प्रमाणे कहे छे,–इत्यादि बधुं कहेवुं, यावत् ते शिवराजर्षि पोताना उपकरणो मूके छे अने हस्तिनापुर नगरमां जइ शृंगाटक, त्रिक अने बहु प्रकारना मार्गोमां आ प्रमाणे कहे छे, यावत् सात द्वीपो अने समुद्रो छे त्यार पछी नथी, त्यारबाद ते शिवराजर्षिनी पासे आ वात सांभळी अर्थ अवधारी हस्तिनापुर नगरमां माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के–'यावत् सात द्वीप अने समुद्रो छे, ते पछी, कांइ नथी' इत्यादि, ते मिथ्या (असत्य) छे. हे गौतम! हुं ए प्रमाणे कहुं छुं,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यावत् प्ररूपुं छुं–ए प्रमाणे जंबूद्वीपादि द्वीपो अने लवणादि समुद्रो बधा (वृत्ताकारे होवाथी) आकारे एक सरखा छे, पण विशालताए द्विगुण द्विगुण विस्तारवाळा होवाथी अनेक प्रकारना छे–इत्यादि सर्व 'जीवाभिगम'मां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् हे आयुष्मन् श्रमण! आ तिर्यग्लोकमां स्वयंभूरमण समुद्रपर्यन्त असंख्यात द्वीपो अने समुद्रो कह्या छे.

अत्थि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि सगंधाइंपि अगंधाइंपि सरसाइंपि अरसाइंपि सफासाइंपि अफासाइंपि अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति?, हंता अत्थि। अत्थि णं भंते! लवणसमुद्दे दव्वाइं सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि सगंधाइंपि अगंधाइंपि सरसाइंपि अरसाइंपि सफासाइंपि अफासाइंपि अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति?, हंता अत्थि। अत्थि णं भंते! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवन्नाइंपि० एवं चेव एवं जाव सयंभूरमणसमुद्दे? जाव हंता अत्थि। तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया, तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडगजावपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—जन्नं देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणे जाव समुद्दा य तं नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ–एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव भंडनिक्खेवं करेइ भंडनिक्खेवं करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग जाव समुद्दा य, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव

For Private and Personal Use Only

समुद्दा य लवणं मिच्छा, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ०-एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा तं चेव जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा पन्नत्ता समणाउसो!।

[प्र०] हे भगवन्! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां वर्णवाळां, वर्णरहित, गंधवाळां, गंधरहित, रसवाळां, रसरहित, स्पर्शवाळां अने स्पर्शरहित द्रव्यो अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य स्पृष्ट यावद् अन्योन्य संबद्ध छे? [उ०] हे गौतम! हा, छे. [प्र०] हे भगवन्! लवण समुद्रमां वर्णवाळां, वर्णविनाना, गंधवाळां, गंध विनाना, रसवाळां, रसविनाना, स्पर्शवाळां ने स्पर्शविनाना द्रव्यो अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य स्पृष्ट, यावत् अन्योन्य संबद्ध छे? [उ०] हे गौतम! हा, छे. [प्र०] हे भगवन्! धातकिखंडमां अने ए प्रमाणे यावत् स्वयंभूरमण समुद्रमां वर्णवाळां ने वर्णरहित इत्यादि पूर्वोक्त द्रव्यो परस्पर संबद्ध छे इत्यादि यावत्? [उ०] हे गौतम! हा, छे त्यां सुधी जाणवुं. त्यारबाद ते अत्यन्त मोटी अने महत्त्व युक्त परिषद् श्रमण भगवान् महावीर पासेथी ए अर्थ सांभळी अने अवधारी हृष्ट तुष्ट थइ श्रमण भगवंत महावीरने वांदी नमी जे दिशामांथी आवी हती ते दिशामां गइ. त्यारबाद हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक यावद् बीजा मार्गोमां घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के हे देवानुप्रियो! शिवराजर्षि जे एम कहे छे-यावत् प्ररूपे छे-'हे देवानुप्रियो! मने अतिशयवाळुं ज्ञान उत्पन्न थयुं छे, यावत् बीजा द्वीप-समुद्रो नथी;' ते तेनुं कथन यथार्थ नथी. श्रमण भगवान् महावीर ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के-छट्ठ छट्ठना तपने निरंतर करता शिवराजर्षि पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् पोताना उपकरणो मूकीने हस्तिनापुर नामना नगरमां शृंगाटक यावत् बीजा मार्गोमां ए प्रमाणे कहे छे-यावत् सात द्वीप-समुद्रो छे, बीजा नथी. त्यारबाद ते शिवराजर्षिनी पासे ए वात सांभळीने अवधारीने घणा माणसो एम कहे छे-'शिवराजर्षि जे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहे छे के म.त्र सात द्वीप समुद्रो छे' ते मिथ्या छे, यावत् श्रमण भगवान् महावीर ए प्रमाणे कहे छे के–हे आयुष्मन् श्रमण ! जंबू-द्वीपादि द्वीपो अने लवणादि समुद्रो एक सरखा आकारे छे–इत्यादि पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् असंख्याता द्वीप–समुद्रो कह्या छे.'

तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतिय एयमट्ठं सोचा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स जाव कलुससमावन्नस्स से विभंगे अन्नाणे खिप्पामेव परिवडिए, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स जहा उववाइए जाव गहणयाए, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य जाव भविस्सइत्तिकट्टु एवं संपेहेति ॥

त्यार बाद ते शिवराजर्षि घणा माणसो पासेथी ए वातने सांभळीने अने अवधारीने शंकित कांक्षित, संदिग्ध, अनिश्चित अने कलुषित भावने प्राप्त थया, अने शंकित, कांक्षित, संदिग्ध, अनिश्चित अने कलुषित भावने प्राप्त थयेला शिवराजर्षिनुं विभंग नामे अज्ञान तरतज नाश पाम्युं. त्यार पछी ते शिवराजर्षिने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत् उत्पन्न थयो–"ए प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीर धर्मनी आदि करनारा, तीर्थंकर, यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे; अने तेओ आकाशमा चालता धर्मचक्रवडे यावत् सहस्राम्रवन नामे उद्यानमां यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करी यावद् विहरे छे. तो तेवा प्रकारना अरिहंत भगवंतोना नामगोत्रनुं श्रवण करवुं ते महा

For Private and Personal Use Only

फळवाळुं छे, तो अभिगमन वंदनादि माटे तो शुं कहेवुं ?–इत्यादि औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् एक आर्य धार्मिक सुवचननुं श्रवण करवुं माहा फळवाळुं छे, तो तेना विपुल अर्थनुं अवधारण करवा माटे तो शुं कहेवुं ? तेथी हुं श्रमण भगवान् महावीरनी पासे जाउं, वांदु अने नमुं, यावत् तेओनी पर्युपासना करुं, ए मने आ भवमां अने परभवमां यावत् श्रेयने माटे थशे" एम विचारे छे.

एवं २ त्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता तावसावसहं अणुप्पविसति २ त्ता सुबहुं लोहीलोहकडाहं जाव किढिणसंकातिगं च गेण्हइ गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमति ताव० २ परिवडियविब्भंगे हत्थिणागपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे [ग्रन्थाग्रम् ७०००] जाव पंजलिउडे पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए जाव आणाए आराहए भवइ, तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोचा निसम्म जहा खंदओ जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमइ २ सुबहुं लोहीलोहकडाहं जाव किढिणसंकातिगं एगंते एडेइ ए० २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति सयमे० २ समणं भगवं महावीरं एवं जहेव उसभदत्ते तहेव पव्वइओ तहेव इक्कारस अंगाइं अहिज्जति तहेव सव्वं जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ (सूत्रं ४१८) ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ए प्रमाणे विचार करी ज्यां तापसोनो मठ छे त्यां आवे छे. आवी तापसोना मठमां प्रवेश करी घणी लोढी, लोढाना कडाया यावत् कावड वगेरे उपकरणोने लेइ तापसोना आश्रमथी नीकळे छे. नीकळीने विभंगज्ञानरहित ते शिवराजर्षि हस्तिनापुर नगरनी वच्चो वच्च थईने ज्यां सहस्राम्रवन नामे उद्यान छे, ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवान् महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करीने वांदे छे अने नमे छे. वांदी अने नमीने तेओथी बहु नजीक नहीं अने बहुदूर नहीं तेम उभा रही यावत् हाथ जोडी ते शिवराजर्षि श्रमण भगवंत महावीरनी उपासना करे छे. त्यार बाद ते शिवराजर्षिने अने मोटामां मोटी पर्षदने श्रमण भगवंत महावीर धर्म वीर धर्मकथा कहे छे. अने यावत् ते शिवराजर्षि आज्ञाना आराधक थाय छे. पछी ते शिवराजर्षि श्रमण भगवान् महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी अने अवधारी स्कंदकना प्रकरणमां कह्या प्रमाणे यावत् ईशान कोण तरफ जइ घणी लोढी, लोढाना कडाया यावत् कावड वगेरे तापसोचित उपकरणोने एकांत जग्याए मूके छे. मूकीने पोतानी मेळे पंच मुष्टि लोच करी, श्रमण भगवंत महावीर पासे ऋषभदत्तनी पेठे प्रव्रज्यानो स्वीकार करे छे, अने ते प्रमाणे अग्यार अंगोनुं अध्ययन करे छे, तथा एज प्रमाणे यावत् ते शिवराजर्षि सर्व दुःखथी मुक्त थाय छे. ॥ ४१८ ॥

भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरंमि संघयणे सिज्झंति?, गोयमा! वयरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति एवं जहेव उववाइए तहेव संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउयं च परिवसणा, एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव अव्वाबाहं सोक्खं अणुहवं (हुंती) ति सासया सिद्धा। सेवं भंते! २ त्ति ॥ (सूत्रं ४१९) सिवो समत्तो ॥ ११–९ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'हे भगवन्' ! एम कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे अने नमे छे, वांदी अने नमीने भगवंत गौतमे आ प्रमाणे पूछ्युं—[प्र०] हे भगवन् ! सिद्ध थता जीवो कया संघयणमां सिद्ध थाय ? [उ०] हे गौतम ! जीवो वज्रऋषभनाराच संघयणमां सिद्ध थाय"—इत्यादि औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे "संघयण, संस्थान, उंचाइ, आयुष, परिवसना (वास)"—अने ए प्रमाणे आखी सिद्धिगंडिका कहेवी; यावत् अव्याबाध (दुःखरहित) शाश्वत सुखने सिद्धो अनुभवे छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' एम कही यावद् विहरे छे. ॥ ४१९ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां नवमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक १०.

रायगिहे जाव एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! लोए पन्नत्ते ?, गोयमा ! चउव्विहे लोए पन्नत्ते, तंजहा—दव्वलोए खेत्तलोए काललोए भावलोए । खेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा—अहोलोयखेत्तलोए १ तिरियलोयखेत्तलोए २ उड्ढलोयखेत्तलोए ३ । अहोलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए जाव अहेसत्तमापुढविअहोलोयखेत्तलोए । तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! असंखेज्जविहे पन्नत्ते, तंजहा—जंबुद्दीवे तिरियखेत्तलोए जाव सयंभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए । उड्ढलोगखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! पन्नरसविहे

For Private and Personal Use Only

पन्नत्ते, तंजहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोगखेत्तलोए जाव अच्चुयउड्ढलोए गेवेज्जविमाणउड्ढलोए अणुत्तरविमाण० इसिंपब्भारपुढविउड्ढलोगखेत्तलोए । अहोलोगखेत्तलोए णं भंते! किंसंठिए पन्नत्ते?, गोयमा! तप्पागारसंठिए पन्नत्ते ।

[प्र०] राजगृह नगरमां (गौतम) यावद् आ प्रमाणे बोल्या–हे भगवन्! लोक केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! लोक चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–१ द्रव्यलोक, २ क्षेत्रलोक, ३ काललोक अने ४ भावलोक. [प्र०] हे भगवन्! क्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! त्रण प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ अधोलोकक्षेत्रलोक, २ तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक अने ३ ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक. [प्र०] हे भगवन्! अधोलोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! सात प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ रत्नप्रभापृथिवीअधोलोकक्षेत्रलोक, यावत् ७ अधःसप्तमपृथिवीअधोलोकक्षेत्रलोक. [प्र०] हे भगवन्! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! असंख्य प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–जंबूद्वीपतिर्यग्लोकक्षेत्रलोक, यावत् स्वयंभूरमणसमुद्रतिर्यग्लोकक्षेत्रलोक. [प्र०] हे भगवन्! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! पंदर प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–१ सौधर्मकल्पऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, यावद् १२ अच्युतकल्पऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, १३ ग्रैवेयकविमानऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, १४ अनुत्तरविमानऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक अने १५ ईषत्प्राग्भारपृथिव ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक. [प्र०] हे भगवन्! अधोलोकक्षेत्रलोक केवा संस्थाने छे? [उ०] हे गौतम! अधोलोक त्रापाने आकारे छे.

तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते! किंसंठिए पन्नत्ते?, गोयमा! झल्लरिसंठिए पन्नत्ते । उड्ढलोयखेत्तलोयपुच्छा उड्ढमुइंगाकारसंठिए पन्नत्ते । लोए णं भंते! किंसंठिए पन्नत्ते?, गोयमा! सुपइट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते, तंजहा—

हेट्ठा विच्छिन्ने मज्झे संखित्ते जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अंतं करेंति । अलोए णं भंते! किंसंठिए पन्नत्ते ?, गोयमा! झुसिरगोलसंठिए पन्नत्ते ॥ अहेलोगखेत्तलोए णं भंते! किं जीवा जीवदेसा जीवपएसा? एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए । तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते! किं जीवा० ?, एवं चेव, एवं उड्ढलोयखेत्तलोएवि, नवरं अरूवी छव्विहा, अद्धासमओ नत्थि॥

[प्र०] हे भगवन्! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक केवा संस्थाने छे? [उ०] हे गौतम! ते झालरने आकारे छे. [प्र०] हे भगवन्! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक केवा आकारे छे? [उ०] हे गौतम! उभा मृदंगने आकारे छे. [प्र०] हे भगवन्! लोक केवा आकारे संस्थित छे? [उ०] हे गौतम! लोक सुप्रतिष्ठकने आकारे संस्थित छे, ते आ प्रमाणे-"नीचे पहोळो, मध्यभागमां संक्षित-संकीर्ण"-इत्यादि सातमा शतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे कहेवुं. (ते लोकने उत्पन्न ज्ञान दर्शनने धारण करनारा केवलज्ञानी जाणे छे अने त्यार पछी सिद्ध थाय छे) यावद् 'सर्व दुःखोनो अन्त करे छे'. [प्र०] हे भगवन्! अलोक केवा आकारे कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! अलोक पोला गोळाने आकारे कह्यो छे. [प्र०] हे भगवन्! अधोलोकक्षेत्रलोक शुं जीवरूप छे, जीवदेशरूप छे, जीवप्रदेशरूप छे इत्यादि? [उ०] हे गौतम! जेम एन्द्री दिशा संबन्धे कह्युं छे ते प्रमाणे सर्व अहिं जाणवुं. यावद् अद्धासमय (काल) रूप छे'. [प्र०] हे भगवन्! तिर्यग्लोक शुं जीवरूप छे इत्यादि? [उ०] पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक संबन्धे पण जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के ऊर्ध्वलोकमां अरूपी द्रव्य छ प्रकारे छे, कारण के त्यां अद्धा समय नथी.

लोए णं भंते! किं जीवा जहा बितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे, नवरं अरूवी सत्तवि जाव अहम्मत्थि-

कायस्स पएसा नो आगासत्थिकाये आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्सपएसा अद्धासमए सेसं तं चेव ॥ अलोए णं भंते ! किं जीवा० ? एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे तहेव निरवसेसं जाव अणंतभागूणे ॥ अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगंमि आगासपएसे किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा ?, गोयमा ! नो जीवा जीवदेसावि जीवपएसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपएसावि, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा १ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे २ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा ३ एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव अणिंदिएसु जाव अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियाण य देसा य, जे जीवपएसा ते नियमा एगिंदियपएसा १ अहवा एगिंदियपएसा य बेंदियस्स पएसा २ अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियाण य पएसा ३ एवं आइल्लविरहिओ जाव पंचिंदिएसु, अणिंदिएसु तियभंगो. जे अरूवी अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-रूवी अजीवा य अरूवी अजीवा य, रूवी तहेव, जे अरूवी अजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा-नो धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे १ धम्मत्थिकायस्स पएसे २ एवं अहम्मत्थिकायस्सवि ४ अद्धासमए ५ ।

[प्र०] हे भगवन् ! लोक शुं जीव छे इत्यादि ? [उ०] बीजा शतकना अस्तिउद्देशकमां लोकाकाशने विषे कह्युं छे ते प्रमाणे अहिं जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के अहिं अरूपी सात प्रकारे जाणवा, यावद् ४ 'अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ नोआकाशास्तिकाय-रूप. आकाशास्तिकायनो देश, ६ आकाशास्तिकायना प्रदेशो अने ७ अद्धासमय. बाकी पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक शुं जीव छे इत्यादि ? [उ०] जेम अस्तिकायउद्देशकमां अलोकाकाशने विषे कह्युं छे ते प्रमाणे बधुं अहीं जाणवुं, यावत् ते

(सर्वाकाशना) 'अनन्तमा भाग न्यून छे'. [प्र०] हे भगवन्! अधोलोकक्षेत्रलोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं १ जीवो २ जीवना देशो ३ अजीवो, ४ अजीवोना देशो अने ५ अजीवना प्रदेशो छे? [उ०] हे गौतम! जीवो नथी, पण जीवोना देशो, जीवोना प्रदेशो, अजीवो, अजीवना देशो अने अजीवना प्रदेशो छे. तेमां त्यां जे जीवोना देशो छे ते अवश्य १ एकेन्द्रियजीवोना देशो छे २ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना देशो अने बेइन्द्रिय जीवनो देश छे, ३ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना देशो अने बेइन्द्रियोना देशो छे. ए प्रमाणे मध्यम भंगरहित बाकीना विकल्पो यावद् अनिन्द्रियो-सिद्धो संबन्धे जाणवा. यावद् 'एकेन्द्रियोना देशो अने अनिन्द्रियोना देशो' छे. तथा त्यां जे जीवना प्रदेशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो छे, १ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो अने एक बेइन्द्रिय जीवना प्रदेशो छे, २ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियोना प्रदेशो छे. ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय अने अनिन्द्रिय अने अनिन्द्रियो संबन्धे प्रथम भंग शिवाय त्रण भांगा जाणवा. तथा त्यां जे अजीवो छे ते बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-रूपिअजीव अने अरूपिअजीव. तेमां रूपिअजीवो पूर्व प्रमाणे जाणवा. अने जे अरूपिअजीवो छे ते पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-१ नोधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायनो देश, २ धर्मास्तिकायनो प्रदेश, ए प्रमाणे ४ अधर्मास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं. अने ५ अद्धा समय.

तिरियलोगखेत्तलोगस्स णं भंते! एगंमि आगासपएसे किं जीवा० ?, एवं जहा अहोलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एवं उड्डलोगखेत्तस्सवि. नवरं अद्धासमओ नत्थि, अरूवी चउव्विहा। लोगस्स जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगंमि आगासपएसे॥ अलोगस्स णं भंते! एगंमि आगासपएसे पुच्छा, गोयमा! नो जीवा नो जीवदेसा तं चेव जाव अणंतेहिं अगुरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे॥ दव्वओ णं अहेलोगखेत्तलोए अणंताइं जीव-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दव्वाइं अणंताइं अजीवदव्वाइं अणंता जीवाजीवदव्वा एव तिरियलोयखेत्तलोएवि, एवं उड्ढलोयखेत्तलोएवि, दव्वओ णं अलोए णेवत्थि जीवदव्वा नेवत्थि अजीवदव्वा नेवत्थि जीवाजीवदव्वा एगे अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासअणंतभागूणे। कालओ णं अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि जाव निच्चे एवं जाव अहोलोगे। भावओ णं अहेलोगखेत्तलोए अणंता वन्नपज्जवा जहा खंदए जाव अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा एवं जाव लोए, भावओ णं अलोए नेवत्थि वन्नपज्जवा जाव नेवत्थि अगुरुलहुयपज्जवा एगे अजीवदव्वदेसे जाव अणंतभागूणे ॥(सूत्रं ४२०)॥

[प्र०] हे भगवन्! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीवो छे? इत्यादि [उ०] जेम अधोलोकक्षेत्रलोकना संबन्धे कह्यु तेम अहीं बधुं जाणवुं. ए प्रमाणे ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशने विषे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, त्यां अद्धासमय नथी, माटे अरूपी चार प्रकारना छे, लोकना एक आकश प्रदेशमां अधोलोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशमां जेम कह्युं छे तेम जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! अलोकना एक आकाश प्रदेश संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! त्यां 'जीवो नथी, जीव देशो नथी'–इत्यादि पूर्वनी पेठे (सू. १४) कहेवुं, यावत् अलोक अनन्त अगुरुलघुगुणोथी संयुक्त छे अने सर्वाकाशना अनंतमां भागे न्यून छे. [प्र०] हे भगवन्! द्रव्यथी अधोलोकक्षेत्रलोकमां अनन्त जीव द्रव्यो छे, अनंत अजीव द्रव्यो छे अने अनंत जीवाजीव द्रव्यो छे. ए प्रमाणे तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकमां तथा ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकमां पण जाणवुं. द्रव्यथी अलोकमां जीव द्रव्यो नथी, अजीव द्रव्यो नथी अने जीवाजीवद्रव्यो नथी, पण एक अजीवद्रव्यनो देश छे, यावत् सर्वाकाशना अनंतमां भागे न्यून छे. कालथी अधोलोकक्षेत्रलोक कोइ दिवस न हतो एम नथी, यावत् नित्य छे. ए प्रमणे यावत् अलोक जाणवो. भावथी अधोलोकक्षेत्रलोकमां 'अनंत वर्ण पर्यवो

For Private and Personal Use Only

छे'-इत्यादि जेम स्कंदकना अधिकारमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावद् अनंत अगुरुलघुपर्यवो छे. ए प्रमाणे यावत् लोक सुधी जाणवुं. भावथी अलोकमां वर्णपर्यवो नथी, यावत् अगुरुलघुपर्यवो नथी, पण एक अजीवद्रव्यनो देश छे अने ते सर्वाकाशना अनंतमा भागे न्यून छे. ॥ ४२० ॥

लोए णं भंते! केमहालए पन्नत्ते?, गोयमा! अयन्नं जंबुद्दीवे २ सव्वदीवा० जाव परिक्खेवेणं, तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिड्डीया जाव महेसक्खा जंबुद्दीवे २ मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा, अहे णं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडे गहाय जंबुद्दीवस्स २ चउसुवि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा पभू णं गोयमा! ताओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए एगे देवे पुरच्छाभिमुहे पयाते एवं दाहिणाभिमुहे एवं पच्चत्थाभिमुहे एवं उत्तराभिमुहे एवं उड्ढाभि० एगे अहोभिमुहे पयाए, तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाए, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, णो चेव णं जाव संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमेवि कुलवंसे पहीणे भवति णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स नामगोएवि पहीणे भवति णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तेसि णं

भंते! देवाणं किं गए बहुए अगए बहुए?, गोयमा! गए बहुए, नो अगए बहुए, गयाउ से अगए असंखेज्जइभागे अगयाउ से गए असंखेज्जगुणे, लोए णं गोयमा! एमहालए पन्नत्ते।

[प्र०] हे भगवन्! लोक केटलो मोटो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! आ जंबूद्वीप नामे द्वीप सर्व द्वीपो अने समुद्रोनी अभ्यंतर छे, यावत् परिधि युक्त छे. ते काले-ते समये महार्धिक अने यावत् महासुखवाळा छ देवो जंबूद्वीपमां मेरुपर्वतने विषे मेरुपर्वतनी चूलिकाने चारे तरफ वींटाइने उभा रहे, अने नीचे मोटी चार दिक्कुमारीओ चार बलिपिंडने ग्रहण करीने जंबूद्वीपनी चारे दिशामां बहार मुख राखीने उभी रहे, पछी तेओ ते चारे बलिपिंडने एक साथे बाहेर फेंके, तोपण हे गौतम! तेमांनो एक एक देव ते चार बलिपिंडने पृथिवी उपर पड्या पहेलां शीघ्र ग्रहण करवा समर्थ छे. हे गौतम! एवी गतिवाळा ते देवोमांथी एक देव उत्कृष्ट यावद् त्वरित देवगतिवडे पूर्व दिशा तरफ गयो, ए प्रमाणे एक दक्षिण दिशा तरफ गयो, ए प्रमाणे एक पश्चिम दिशामां, एक उत्तर दिशामां, एक ऊर्ध्व दिशामां अने एक देव अधोदिशामां गयो. हवे ते काले, ते समये हजार वर्षना आयुषवाळो एक बाळक उत्पन्न थयो, त्यारपछी ते बाळकना मातापिता मरण पाम्या, तोपण तेटला वखत सुधी पण ते गएला देवो लोकना अंतने प्राप्त करी शकता नथी. त्यारबाद ते बाळकनुं आयुष क्षीण थयुं-पूरुं थयुं, तोपण ते देवो लोकान्तने प्राप्त करी शकता नथी. पछी ते बाळकना अस्थि अने मज्जा नाश पाम्या, तोपण ते देवो लोकना अंतने पामी शकता नथी, त्यारबाद सात पेढी सुधी तेना कुलवंश नष्ट थया, तोपण ते देवो लोकांतने प्राप्त करी शकता नथी. पछी ते बाळकनुं नामगोत्र पण नष्ट थयुं तोपण ते देवो लोकना अंतने पामी शकता नथी. [प्र०] जो एम छे तो हे भगवन्! ते देवोए ओळंगेलो मार्ग घणो छे के ओळंग्या विनानो मार्ग घणो छे? [उ०] हे गौतम! ते

देवो वडे ओळंगायेल–गमन करायेल–क्षेत्र वधारे छे, पण नहि ओळंगायेलुं–नहि गमन करायेलुं क्षेत्र वधारे नथी. गमन करायेला क्षेत्रथी नहि गमन करायेलु क्षेत्र असंख्यातमा भागे छे. अने नहि गमन करायेलां क्षेत्रथी गमन करायेलुं क्षेत्र असंख्यात गुण छे. हे गौतम ! लोक केटलो मोटो कह्यो छे.

अलोए णं भंते ! केमहालए पन्नत्ते?, गोयमा ! अयन्नं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं जहा खंदए जाव परिक्खेवेणं, तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्डिया तहेव जाव संपरिक्खित्ताणं संचिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसुवि दिसासु चउसुवि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जमगसमगं बहियाभिमुहीओ पक्खिवेज्जा, पभू णं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए लोगंसि ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरच्छाभिमुहे पयाए एगे देवे दाहिणपुरच्छाभिमुहे पयाए एवं जाव उत्तरपुरच्छाभिमुहे एगे देवे उड्ढाभिमुहे एगे देवे अहोभिमुहे पयाए, तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाए, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति, तं चेव०, तेसि णं देवाणं किं गए बहुए अगए बहुए?, गोयमा ! नो गए बहुए, अगए बहुए, गयाउ से अगए अणंतगुणे अगयाउ से गए अणंतभागे, अलोए णं गोयमा ! एमहालए पन्नत्ते ॥ (सूत्रं ४२१) ॥

[प्र०] हे भगवन्! अलोक केटलो मोटो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! 'आ मनुष्यक्षेत्र लंबाइ अने पहोळाइमां पीस्तालीश लाख योजन छे'-इत्यादि जेम स्कंदकना अधिकारमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत् ते परिधियुक्त छे. ते काले ते-समये दश महर्धिक देवो पूर्वनी पेठे ते मनुष्य लोकनी चारे बाजु वींटाइने उभा रहे. तेनी नीचे मोटी आठ दिक्कुमारीओ आठ बलिपिंडने लेइने मानुषोत्तर पर्वतनी चारे दिशामां अने चारे विदिशामां बाह्याभिमुख उभी रहे अने ते आठ बलि पिंडने लइने एकज साथे मानुषोत्तर पर्वतनी बाहेरनी दिशामां फेंके, तो हे गौतम! तेमांनो कोई पण एक देव ते आठ बलिपिंडोने पृथिवी उपर पड्या पहेलां शीघ्र संहरवा समर्थ छे. हे गौतम! ते देवो उत्कृष्ट, यावद् त्वरितदेवगतिथी लोकना अंतमां उभा रही असत् कल्पना वडे एक देव पूर्व दिशा तरफ जाय, एक देव दक्षिणपूर्व तरफ जाय, अने ए प्रमाणे यावत् एक देव पूर्व तरफ जाय, वळी एक देव ऊर्ध्व दिशा तरफ जाय, अने एक देव अधोदिशा तरफ जाय; ते काले-ते समये लाख वर्षना आयुषवाळा एक बालकनो जन्म थाय, पछी तेना मातापिता मरण पामे तोपण ते देवो अलोकना अन्तने प्राप्त करी शकता नथी-इत्यादि पूर्वे कहेलुं. अहीं कहेवुं. यावत् [प्र०] हे भगवन्! ते देवोनुं गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे के नहि गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे? [उ०] हे गौतम! तेओनुं गमन करायेलुं क्षेत्र बहु नथी, पण नहि गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे. गमन करायेला क्षेत्र करतां नहि गमन करायेलुं क्षेत्र अनन्तगुण छे, अने नहि गमन करायेला क्षेत्र करतां गमन करायेलुं क्षेत्र अनंतमे भागे छे. हे गौतम! अलोक एटलो मोटो कह्यो छे. ॥ ४२१ ॥

भंते णं लोगस्स! एगंमि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव पंचिंदियपएसा अणिंदियपएसा अन्नमन्नबद्धा अन्नमन्नपुट्ठा जाव अन्नमन्नसमभरघडत्ताए चिट्ठंति, णत्थि णं भंते! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाबाहं वा उप्पायंति छविच्छेदं वा करेंति ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ लोगस्स णं एगंमि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव चिट्ठंति णत्थि णं भंते! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा जाव करेंति ?, गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अन्नयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा, से नूणं गोयमा! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति?, हंता समभिलोएंति, ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता संनिवडियाओ?, हंता संनिवडियाओ, अत्थि णं गोयमा! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचिवि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति छविच्छेदं वा करेंति ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, अहवा सा नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति छविच्छेदं वा करेइ ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, ताओ वा दिट्ठीओ अन्नमन्नाए दिट्ठीए किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति छविच्छेदं वा करेन्ति ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ तं चेव जाव छविच्छेदं वा करेंति ॥ (सूत्रं ४२२) ॥

[प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जे एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो छे, यावत् पंचेन्द्रियना प्रदेशो अने अनिन्द्रियना प्रदेशो छे ते शुं बधा परस्पर बद्ध छे, अन्योन्य स्पृष्ट छे, यावद् अन्योन्य संबद्ध छे ? वळी हे भगवन् ! ते बधा परस्पर एक बीजाने कांइ पण आबाधा (पीडा) व्याबाधा (विशेष पीडा) उत्पन्न करे, तथा अवयवनो छेद करे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के लोकना एक आकाशप्रदेशमां जे एकेन्द्रियना प्रदेशो यावत् रहे छे,

अने ते परस्पर एक बीजाने कांइ पण आबाधा वा व्याबाधा करता नथी? [उ०] हे गौतम! जेम शृंगारना आकार सहित सुन्दर वेषवाळी अने संगीतादिने विषे निपुणतावाळी कोई एक नर्तकी होय अने ते सेंकडो अथवा लाखो माणसोथी भरेला रंगस्थानमां बत्रीश प्रकारना नाट्यमांनुं कोइ एक प्रकारनुं नाट्य देखाडे तो हे गौतम! ते प्रेक्षको शुं ते नर्तकीने अनिमेष दृष्टिथी चोतरफ जुए? हा, भगवन्! जुए. तो हे गौतम! ते प्रेक्षकोनी दृष्टिओ शुं ते नर्तकीने विषे चारे बाजुथी पडेली होय छे? हा, पडेली होय छे. हे गौतम! प्रेक्षकोनी ते दृष्टिओ ते नर्तकीने कांइ पण आबाधा वा व्याबाधा उत्पन्न करे, अथवा तेना अवयवनो छेद करे? हे भगवन्! ए अर्थ योग्य नथी. अथवा ते नर्तकी ते प्रेक्षकोनी दृष्टिओने कंइ पण आबाधा के व्याबाधा उत्पन्न करे अथवा तेना अवयवनो छेद करे? ए अर्थ यथार्थ नथी. अथवा ते दृष्टिओ परस्पर एक बीजी दृष्टिओने कांइपण आबाधा के व्याबाधा उत्पन्न करे, अथवा तेना अवयवनो छेद करे? ए अर्थ यथार्थ नथी. अर्थात् न करे, ते हेतुथी एम कहेवाय छे के पूर्वोक्त यावत् अवयवनो छेद करता नथी.' ॥ ४२२ ॥

लोगस्स णं भंते! एगम्मि आगासपएसे जहन्नपए जीवपएसाणं उक्कोसपए जीवपएसाणं सव्वजीवाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा?, गोयमा! सव्वत्थोवा लोगस्स एगंमि आगासपएसे जहन्नपए जीवपएसा, सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपएसा विसेसाहिया, सेवं भंते! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्रं ४२३) ॥ एकारससयस्स दसमोउद्देसो समत्तो ॥ ११-१० ॥

[प्र०] हे भगवन्! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जघन्यपदे रहेला जीवप्रदेशो, उत्कृष्टपदे रहेला जीवप्रदेशो अने सर्व जीवोमां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोण कोना करतां यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जघन्य पदे रहेला जीवप्रदेशो सौथी थोडा छे, तेना करतां सर्व जीव असंख्यात गुण छे, अने ते करतां पण उत्कृष्ट पदे रहेला जीवप्रदेशो विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, एम कही (भगवान् गौतम) यावद् विहरे छे. ॥ ४२३ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां दसमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ११.

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होत्था वन्नओ, दूतिपलासे चेइए वन्नओ, जाव पुढविसिलापट्टओ, तत्थ णं वाणियगामे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ अड्ढे जाव. अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ, सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ, तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कय जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ साओ गिहाओ पडिनिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पायविहारचारेणं महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तं०—सचित्ताणं दव्वाणं जहा उसभदत्तो जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिम-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महालयाए जाव आराहए भवइ। तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेइ २त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-कइविहे णं भंते! काले पन्नत्ते?, सुदंसणा! चउव्विहे काले पन्नत्ते, तंजहा-पमाणकाले१ अहाउनिव्वत्तिकाले२ मरणकाले ३ अद्धाकाले ४, से किं तं पमाणकाले?, २ दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—दिवसप्पमाणकाले १ राइप्पमाणकाले य २, चउपोरिसिए दिवसे चउपोरिसिया राई भवइ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, (सू० ४२४)॥

ते काले, ते समये वाणिज्यग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. दूतिपलाशक चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते वाणिज्यग्राम नगरमां सुदर्शन नामे शेठ रहेतो हतो; ते आढ्य-धनिक, यावत् अपरिभूत-कोइथी पराभव न पामे तेवो, जीवा-जीव तत्त्वनो जाणनार श्रमणोपासक हतो. त्यां महावीरस्वामी समवसर्या. यावत् पर्षद्-जनसमुदाये पर्युपासना करे छे. त्यार बाद महावीर स्वामी आव्यानी वात सांभळी सुदर्शनशेठ हर्षित अने संतुष्ट थया, अने स्नान करी, बलिकर्म यावत् मंगलरूप प्रायश्चित्त करी, सर्व अलंकारथी विभूषित थइ, पोताना घेरथी बहारनीकळे छे, बहार नीकळीने माथे धारण कराता कोरंटकपुष्पनी माळावाळा छत्र सहित पगे चालीने घणा मनुष्योना समुदायरूप वागुरा-बन्धनथी विंटायेला ते सुदर्शन शेठ वाणिज्यग्राम नगरनी वच्चोवच्च थईने नीकळे छे. नीकळीने ज्यां दूतिपलाश चैत्य छे, अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच प्रकारना अभिगमवडे जाय छे, ते अभिगमो आ प्रमाणे छे-१ 'सचित्त द्रव्योनो त्याग करवो'-इत्यादि जेम ऋषभदत्तना प्रक-

For Private and Personal Use Only

रणमां कह्युं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत् ते सुदर्शन शेठ त्रण प्रकारनी पर्युपासना वडे पर्युपासे छे. त्यार पछी श्रमण भगवंत महावीरे ते सुदर्शन शेठने अने ते मोटामा मोटी सभाने धर्मकथा कही, यावत् ते सुदर्शन शेठ आराधक थाय छे. त्यार पछी सुदर्शन शेठ श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्म सांभळी अने अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थइ उभा थाय छे, उभा थइने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, यावद् नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे पूछ्युं—[प्र०] हे भगवन्! काल केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे सुदर्शन! काल चार प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे-१ प्रमाणकाल २ यथायुर्निर्वृत्तिकाल, ३ मरणकाल, अने ४ अद्धाकाल. [प्र०] हे भगवन्! प्रमाणकाल केटला प्रकारे छे? [उ०] प्रमाणकाल बे प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे-दिवसप्रमाणकाल अने रात्रीप्रमाणकाल, अर्थात् चार पौरुषीना-प्रहरनो दिवस थाय छे, अने चार पौरुषीनी रात्री थाय छे. अने उत्कृष्ट-मोटामा मोटी साडा चार मुहूर्तनी पौरुषी दिवसनी, अने रात्रीनी थाय छे. तथा जघन्य-न्हानामां न्हानी पौरुषी दिवस अने रात्रिनी त्रण मुहूर्तनी थाय छे. ॥ ४२४ ॥

जदा णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति तदा णं कति भागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी परि० २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति?, जदा णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ?, सुदंसणा! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी परि०२ जहन्निया तिमु-

हुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जदा णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तया णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी परि०२उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति। कदा णं भंते! उक्कोसिआ अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ? कदा वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ?, सुदंसणा! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ जहन्निया तिमुहुत्ता राइए पोरिसी भवइ, जया णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिआ राई भवति जहन्निए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ।

[प्र०] हे भगवन्! ज्यारे दिवसे के रात्रीए साडा चार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे त्यारे ते मुहूर्तना केटला भाग घटती घटती दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी थाय? अने ज्यारे दिवसे के रात्रीए त्रण मुहूर्तनी न्हानामां न्हानी पौरुषी होय छे त्यारे ते मुहूर्तना केटला भाग वधती वधती दिवस अने रात्रीनी साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी थाय? [उ०] हे सुदर्शन! ज्यारे दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे त्यारे ते मुहूर्तना एकसो बावीशमा भाग जेटली घटती घटती दिवस अने रात्रीनी जघन्य त्रण मुहूर्तनी पोरुषी थाय छे, अने ज्यारे दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी होय छे त्यारे मुहूर्तना एकसो बावीशमा भाग जेटली वधती वधती दिवसे अने रात्रीए साडाचारमुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी थाय छे. [प्र०] हे भगवन्! क्यारे दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय, अने क्यारे दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होय ? [उ०] हे सुदर्शन ! ज्यारे अढारमुहूर्तनो मोटो दिवस होय अने बार मुहूर्तनी न्हानी रात्री होय त्यारे साडाचार मुहूर्तनी दिवसनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे, अने रात्रीनी त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी होय छे. तथा ज्यारे अढारमुहूर्तनी मोटी रात्री होय अने बार मुहूर्तनो न्हानो दिवस होय त्यारे साडा चार मुहूर्तनी रात्रिनो उत्कृष्ट पौरुषी होय छे, अने त्रण मुहूर्तनी दिवसनी जघन्य पौरुषी होय छे.

कदा णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ? कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ?, सुदंसणा ! आसाढपुन्निमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, पोसस्स पुन्निमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति ?, हंता ! अत्थि, कदा णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति ?, सुदंसणा ! चित्तासोयपुन्निमासु णं, एत्थ णं दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति, पन्नरसमुहुत्ते दिवसे पन्नरसमुहुत्ता राई भवइ चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, सेत्तं पमाणकाले ॥ (सूत्र ४२५) ॥

[प्र०] हे भगवन् ! अढार मुहूर्तनो मोटो दिवस, अने बार मुहूर्तनी न्हानी रात्रो क्यारे होय ? तथा अढार मुहूर्तनी मोटी रात्री अने बार मुहूर्तनो न्हानो दिवस क्यारे होय ? [उ०] हे सुदर्शन ! आषाढपूर्णिमाने विषे अढार मुहूर्तनो मोटो दिवस होय छे, अने बार मुहूर्तनी न्हानी रात्री होय छे. तथा पोषमासनी पूर्णिमाने समये अढार मुहूर्तनी मोटी रात्री अने बार मुहूर्तनो न्हानो दिवस होय छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[प्र०] हे भगवान्! दिवस अने रात्री ए बन्ने सरखां होय ? [उ०] हा, होय. [प्र०] क्यारे (दिवस अने रात्री) सरखां होय ? [उ०] हे सुदर्शन! ज्यारे चैत्री पूनम अने आसो मासनी पूनम होय त्यारे दिवस अने रात्री ए बन्ने सरखां होय छे. त्यारे पंदर मुहूर्तनी रात्री होय छे. अने रात्रीनी मुहूर्तना चोथा भागे न्यून चार मुहूर्तनी पौरुषीहोय छे. ए प्रमाणे प्रमाणकाल कह्यो. ॥४२५॥

से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले ?, अहा० २ जन्नं जेणं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं निव्वत्तियं सेत्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले। से किं तं मरणकाले ?, २ जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ, सेत्तं मरणकाले ॥ से किं तं अद्धाकाले ?, अद्धा० २ अणेगविहे पन्नत्ते, से णं समयट्ठयाए आवलियट्ठयाए जाव उस्सप्पिणीट्ठयाए। एस णं सुदंसणा! अद्धा दोहारच्छेदेणं छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हव्वमागच्छइ सेत्तं समए, समयट्ठयाए असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ, संखेज्जाओ आवलियाओ जहा सालिउद्देसए जाव सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाणं। एएहि णं भंते! पलिओवमसागरोवमेहिं किं पयोयणं ?, सुदंसणा! एएहिं पलिओवमसागरोवमेहिं नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवाणं आउयाइं मविज्जंति ॥ (सू० ४२६) ॥

[प्र०] हे भगवन्! यथायुर्निर्वृत्तिकाल केवा प्रकारेकहेलो छे ? [उ०] जे कोइ नैरयिक, तिर्यंचयोनिक, मनुष्य के देवे पोते जेवुं आयुष्य बांध्युं छे ते प्रकारे तेनुं पालन करे ते यथायुर्निर्वृत्तिकाल कहेवाय छे. [प्र०] हे भगवन्! मरणकाल ए शुं छे ? [उ०] (ज्यारे) शरीरथी जीवनो अथवा जीवथी शरीरनो वियोग थाय (त्यारे) ते मरणकाल कहेवाय छे. [प्र०] हे भगवन्! अद्धा-

For Private and Personal Use Only

काल ए केटला प्रकारे छे? [उ०] अद्धाकाल अनेक प्रकारनो कह्यो छे; समयरूपे, आवलिकारूपे, अने यावद् उत्सर्पिणीरूपे. हे सुदर्शन! कालना बे भाग करवा छतां ज्यारे तेना बे भाग न ज थइ शके ते काल समयरूपे समय कहेवाय छे. असंख्येय समयोनो समुदाय मळवाथी एक आवलिका थाय छे. संख्यात आवलिकानो (एक उच्छ्वास) थाय छे-इत्यादि बधुं शालि उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् सागरोपमना प्रमाण सुधी जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! ए पल्योपम अने सागरोपमरूपनुं शुं प्रयोजन छे? [उ०] हे सुदर्शन! ए पल्योपम अने सागरोपम वडे नैरयिक, तिर्यंचयोनिक, मनुष्य तथा देवोनां आयुषोनुं माप करवामां आवे छे. ॥४२६॥

नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता?, एवं ठिइपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता ॥ (सूत्रं ४२७) ॥

[प्र०] हे भगवन्! नैरयिकोनी स्थिति (आयुष) केटला काल सुधीनी कही छे? [उ०] अहीं संपूर्ण स्थितिपद कहेवुं, यावद् '(पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध देवोनी) उत्कृष्ट नहि अने जघन्य नहि एवी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे' त्यां सुधी जाणवुं. ॥४२७॥

अत्थि णं भंते! एएसिं पलिओवमसागरोवमाणं खएति वा अवचयेति वा?, हंता अत्थि, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थि णं एएसि णं पलिओवमसागरोवमाणं जाव अवचयेति वा?। एवं खलु सुदंसणा! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणागपुरे नामं नगरे होत्था वन्नओ, सहसंबवणे उज्जाणे वन्नओ, तत्थ णं हत्थिणागपुरे नगरे बले नामं राया होत्था वन्नओ, तस्स णं बलस्स रन्नो पभावई नामं देवी होत्था सुकुमाल० वन्नओ जाव विहरइ। तए णं सा पभावई देवी अन्नया कयाई तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे बाहि-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोयचिल्लियतले मणिरयणपणासियंधयारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए पंचवन्नसरस-सुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधिवरगंधिए गंधवट्टिभूए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे दुहओ उन्नए मज्झेणयगंभीरे गंगापुलिणवालुयउद्दालसालिसए उवचियखोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छन्ने सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणगरूयबूरणवणीयतूलफासे सुगंधवरकुसुमचुन्नसयणोवयारकलिए अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ अयमेयारूवं ओरालं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुविणं पासित्ताणं पडिवुद्धा ।

[प्र०] हे भगवन् ! ए पाल्योपम तथा सागरोपमनो क्षय के अपचय थाय छे ? [उ०] हा, थाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के पल्योपम अने सागरोपमनो यावत् अपचय थाय छे ? [उ०] हे सुदर्शन ! ए प्रमाणे खरेखर ते काले, ते समये हस्तिनागपुर नामे नगर हतुं. वर्णन. त्यां सहस्राम्रवन नामे उद्यान हतुं. वर्णन. ते हस्तिनागपुर नगरमां बल नामे राजा हतो. वर्णन. ते बल राजाने प्रभावती नामे राणी हती. तेना हाथ पग सुकुमाल हता-इत्यादि वर्णन जाणवुं. यावत् ते विहरती हती. त्यार बाद अन्य कोइपण दिवसे तेवा प्रकारना, अंदर चित्रवाळा, बहारथी धोळेला, घसेला अने सुंवाळा करेला, जेनो उपरनो भाग विविध चित्रयुक्त अने नीचेनो भाग सुशोभित छे एवा, मणि अने रत्नना प्रकाशथी अंधकाररहित, बहु समान अने सुविभक्त भागवाळा, मुकेला पांच वर्णना सरस अने सुगंधी पुष्पपुंजना उपचार वडे युक्त, उत्तम कालागुरु, कीन्दरु अने तुरुष्क-शिलारसना धूपथी चोतरफ फेलायेला सुगंधना उद्भवथी सुंदर, सुगंधि पदार्थोथी सुवासित थयेला, सुगंधि द्रव्यनी गुटिका जेवा ते वासघरमां तकीयास-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हित, माथे अने पगे ओशीकावाळी, बन्ने बाजुए उंची, वचमां नमेली अने विशाल, गंगाना किनारानी रेतीनी रेताळ सरखी (अत्यंत कोमल), भरेला क्षौमिक-रेशमी दुकूलना पट्टथी आच्छादित, रजस्त्राणथी (उडती धूळने अटकावनार वस्त्रथी) ढंकायेली, रक्तांशुक-मच्छरदानी सहीत, सुरम्य, आजिनक (एक जातनुं चामडानुं कोमळ वस्त्र), रू, बरु, माखण अने आकडाना रूना समान स्पर्शवाळी, सुगंधि उत्तम पुष्पो चूर्ण, अने बीजा शयनोपचारथी युक्त एवी शय्यामां कंइक सुती अने जागती निद्रा लेती लेती प्रभावती देवी अर्धरात्रीना समये आ एवा प्रकारना उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगलकारक अने शोभा युक्त महास्वप्नने जोइने जागी.

हाररययखीरसागरससंककिरणदगरयरययमहासेलपंडुरतरोरुरमणिज्जपेच्छणिज्जं थिरलट्ठपउट्ठवट्टपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमलमाइयसोभंतलट्ठउट्ठं रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीहं मूसागयपवरकणगताविय आवत्तायंतवट्टतडिविमलसरिसनयणं विसालपीवरोरुं पडिपुन्नविमलखंधं मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थविच्छिन्नकेसरसडोवसोभियं ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियंलगूलं सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं नहयलाओ ओवयमाणं नियगवयणमतिवयंतं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। तए णं सा पभावती देवी अयमेयारूवं ओरालं जाव सस्सिरीयं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा तं सुविणं ओगिण्हति ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रन्नो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरा-

लाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मियमहुरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी संलवमाणी पडिबोहेति पडिबोहेत्ता बलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि णिसीयति णिसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणी २ एवं वयासी–

मोतीना हार, रजत, क्षीरसमुद्र, चंद्रना किरण, पाणीना बिंदु अने रूपाना मोटा पर्वत जेवा धोळा, विशाळ, रमणीय अने दर्शनीय, स्थिर अने सुंदर प्रकोष्ठवाळा, गोळ, पुष्ट, सुश्लिष्ट, विशिष्ट अने तीक्ष्ण दाढोवडे फाडेला मुखवाळा, संस्कारित उत्तम कमलना जेवा कोमल, प्रमाणयुक्त अने अत्यन्त सुशोभित ओष्ठवाळा, राता कमलना पत्रनी जेम अत्यंत कोमळ तालु अने जीभवाळा, मूषामां रहेला, अग्नीथी तपावेल अने आवर्त करतां उत्तम सुवर्णना समान वर्णवाळी गोळ अने विजळीना जेवी निर्मळ आंखवाळा, विशाल अने पुष्टजंघावाळा, संपूर्ण अने विपुल स्कंधवाळा, कोमल, विशद–स्पष्ट, सूक्ष्म, अने प्रशस्त, लक्षणवाळी विस्तीर्ण केसरानी छटाथी सुशोभित, उंचा करेला, सारीरीते नीचे नमावेला, सुन्दर अने पृथिवी उपर पछाडेल पूछडाथी युक्त, सौम्य, सौम्य आकारवाळा लीला करता, बगासां खाता अने आकाश थकी उतरी पोताना मुखमां प्रवेश करता सिंहने स्वप्नमां जोइ ते प्रभावती देवी जागी. त्यार बाद ते प्रभावती देवी आ आवा प्रकारना उदार यावत् शोभावाळा महास्वप्नने जोइने जागी अने हर्षित तथा संतुष्ट हृदयवाळी थई, यावत् मेघनी धारथी विकसित थयेला कंदबकना पुष्पनी पेठे रोमांचित थयेली (प्रभावती देवी) ते स्वप्ननुं स्मरण करे छे, स्मरण करीने पोतना शयनथी उठी त्वराविनानी, चपलतारहित, संभ्रमविना, विलंबरहितपणे राजहंससमान गतिवडे ज्यां बलराजानुं शयनगृह छे त्यां आवे छे, आवीने इष्ट, कांत, प्रिय, मनोज्ञ, मनगमती, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगल्य सौन्दर्ययुक्त, मित,

मधुर अने मंजुल-कोमल वाणीवडे बोलती २ ते बल राजाने जगाडे छे. त्यारबाद ते बल राजानी अनुमतिथी विचित्र मणि अने रत्नोनी रचना वडे विचित्र भद्रासनमां बेसे छे. सुखासनमां बेठेली स्वस्थ अने शान्त थएली ते प्रभावती देवीए इष्ट, प्रिय, यावत् मधुर वाणीथी बोलतां २ आ प्रमाणे कह्युं—

एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण० तं चेव जाव नियगवयणम इवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ?, तए णं से बले राया पभावईए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियये धाराहयनी- वसुरभिकुसुमचंचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ ईहं पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ तस्स २ त्ता पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव मंगल्लाहिं मियमहुरसस्सि० संलवमाणे २ एवं वयासी- ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे कल्लाणे णं तुमे जाव सस्सिरीए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे आरोगतुट्ठिदीहाउ- कल्लाणमंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे अत्थलाभो देवाणुप्पिए! भोगलाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवा- णुप्पिए! रज्जलाभो देवाणुप्पिए! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलपव्वयं कुलवडेंसयं कुलतिलगं कुलकित्तिकरं कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं अहीण पडिपुन्नपंचिंदियसरीरं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं

सुरूवं देवकुमारसमप्पभे दारगं पयाहिसि, ॥

हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर में आजे ते तेवा प्रकारनी अने तकीयावाळी शय्यामां (सुतां जागतां) इत्यादि पूर्वोक्त जाणवुं, यावत् मारा पोताना मुखमां प्रवेश करता सिंहने स्वप्न मां जोइने जागी . तो हे देवानुप्रिय ! ए उदार यावत् महास्वप्ननुं बीजुं शुं कल्याणकारक फल अथवा वृत्तिविशेष थशे ? त्यार पछी ते बल राजा प्रभवती देवी पासेथी आ वात सांभळी, अवधारी हर्षित, तुष्ट, यवत् अल्हादायुक्त हृदयवाळो थयो, मेघनी धाराथी विकसित थयेला सुगंधि कदंब पुष्पनी पेठे जेनुं शरीर रोमांचित थयेलुं छे अने जेनी रोमराजी उभी थयेली छे, एवो बलराजा ते स्वप्नो अवग्रह–सामान्य विचार–करे छे, पछी ते स्वप्नसंबन्धी ईहा (विशेष विचार) करे छे. तेम करीने पोताना स्वाभाविक, मतिपूर्वक बुद्धिविज्ञानथी ते स्वप्नना फलनो निश्चय करे छे. पछी इष्ट, कांत, यावत् मंगल युक्त, तथा मित, मधुर अने शोभायुक्त वाणीथी संलाप करता २ ते बल राजाए आ प्रमाणे कह्युं —हे देवी ! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, हे देवी ! तमे कल्याणकारक स्वप्न जोयुं छे, यावत् हे देवी ! तमे शोभायुक्त स्वप्न जोयुं छे, तथा हे देवी ! तमे आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष, कल्याण अने मंगलकारक स्वप्न जोयुं छे. हे देवानुप्रिय ! तेथी अर्थनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये ! भोगनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये ! पुत्रनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये ! राज्यनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये ! खरेखर तमे नव मास संपूर्ण थया बाद साडा सात दिवस वित्या पछी आपणा कुलमा ध्वजसमान, कुलमां दीवासमान, कुलमां पर्वतसमान, कुलमां शेखरसमान, कुलमां तिलकसमान, कुलनी कीर्ति करनार, कुलने आनंद आपनार, कुलनो जश करनार, कुलना आधारभूत, कुलमां वृक्षसमान, कुलनी वृद्धिकरनार, सुकुमाल हाथपगवाळा, खोडरहित अने संपूर्ण पंचेन्द्रिययुक्त शरीरवाळा, यावत् चंद्रसमान सौम्यआकारवाळा, प्रिय,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जेनुं दर्शन प्रिय छे एवा, सुन्दररूपवाळा, अने देवकुमार जेवी कांतिवाळा पुत्रने जन्म आपशो.

सेऽवि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविउलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, तं उराले णं तुमे जाव सुमिणे दिट्ठे आरोग्गतुट्ठि जाव मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठेत्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं दोच्चंपि तच्चंपि अणुवूहति। तए णं सा पभावती देवी बलस्स रन्नो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० करयल जाव एवं वयासी–एवमेयं देवाणुप्पिया! तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! असंदिद्धमेयं दे० इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! से जहेयं तुज्झे वदहत्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ पडिच्छित्ता बलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल जाव गतीए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयति निसीइत्ता एवं वयासी–मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइत्ति कट्टु देवगुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमाणी २ विहरति।

अने ते बालक पोतानुं बालकपणुं मूकी, विज्ञ अने परिणत–मोटो थईने युवावस्थाने पामी शूर, वीर, पराक्रमी, विस्तीर्ण अने विपुल बल तथा वाहनवाळो, राज्यनो धणी राजा थशे. हे देवी! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, हे देवी! तमे आरोग्य, तुष्टि अने यावत् मंगलकारक स्वप्न जोयुं छे'–एम कही ते बल राजा इष्ट यावद् मधुर वाणीथी प्रभावती देवीनी बीजी वार अने त्रीजी वार ए

प्रमाणे प्रशंसा करे छे. त्यार बाद ते प्रभावती देवी बल राजानी पासेथी ए पूर्वोक्त वात सांभळीने, अवधारीने हर्षवाळी अने संतुष्ट थइ हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली-'हे देवानुप्रिय ! तमे जे कहो छो ते एज प्रमाणे छे, हे देवानुप्रिय ! तेज प्रमाणे छे, हे देवानुप्रिय ! ए सत्य छे, हे देवानुप्रिय ! ए संदेहरहित छे, हे देवानुप्रिय ! मने इच्छित छे, हे देवानुप्रिय ! ए में स्वीकारेलुं छे, हे देवानुप्रिय ! ए मने इच्छित अने स्वीकृत छे' एम कही स्वप्ननो सारी रीते स्वीकार करे छे, स्वीकार करीने बल राजानी अनुमतिथी अनेक जातना मणि अने रत्ननी रचना वडे विचित्र एवा भद्रासनथी उठे छे, उठीने त्वरा विना, चपलतारहित यावद् गति वडे (ते प्रभावती देवी) ज्यां पोतानी शय्या छे त्यां आवी शय्या उपर बेसे छे, बेसी ने तेणे आ प्रमाणे कह्युं-'आ मारुं उत्तम, प्रधान अने मंगलरूप स्वप्न बीजा पापस्वप्नोथी न हणाओ' एम कहीने ते प्रभावती देवी देव अने गुरुसंबन्धी, प्रशस्त, मंगलरूप अने धार्मिक कथाओवडे स्वप्न जागरण करती करती विहरे छे.

तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्तसुइयसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवरपंचवन्नपुप्फोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं करेह य करावेह य करेत्ता करावेत्ता सीहासणं रएह सीहासणं रयावेत्ता ममेतं जाव पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबिय जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पायपीढाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छति अट्टणसालं अणुपविसइ जहा उववाइए तहेव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव ससिव्वपियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरच्छाभिमुहे निसीयइ निसीइत्ता अप्पणो उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थुयाइं सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते णाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टबहुभत्तिसयचित्तताणं ईहामियउसभजावभत्तिचित्तं अब्भितरियं जवणियं अंछावेइ अंछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अच्छरयमउयमसूरगोच्छगं सेयवत्थपच्चुत्थुयं अंगसुहफासुयं सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेई रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी–

त्यार बाद ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रियो! आजे तमे जल्दी बहारनी उपस्थानशालाने सविशेषपणे गंधोदकवडे छांटी, वाळी अने छाणथी लींपीने साफ सरो. तथा सुगंधी अने उत्तम पांच वर्णना पुष्पोथी शणगारो, वळी उत्तम कालागुरु अने कींदरुना धूपथी यावद् गंधवर्तिभूत–सुगंधी गुटिका समान करो, करावो, अने त्यारपछी त्यां सिंहासन मूकावो, सिंहासन मूकावीने आ मारी आज्ञा यावत् पाछी आपो.' त्यार बाद ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् आज्ञानो स्वीकार करी तुरतज सविशेषपणे बहारनी उपस्थानशालाने साफ करीने यावत् आज्ञा पाछी आपे छे. त्यार बाद ते बल राजा प्रातःकाल समये पोतानी शय्याथी उठीने पादपीठथी उतरी ज्यां व्यायामशाळा छे त्यां आवे छे. आवीने व्यायामशाळामां प्रवेश करे छे, त्यार पछी ते स्नानगृहमां जाय छे. व्यायामशाला अने स्नानगृहनुं वर्णन औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् चंद्रनी पेठे जेनुं दर्शन प्रिय छे एवो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते बल नरपति स्नानगृहथी बहार नीकळे छे, बहार नीकळीने ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने पूर्वदिशा सन्मुख उत्तम सिंहासनमां बेसे छे. त्यार बाद पोतानाथी उत्तरपूर्वदिशामां-ईशान कोणमां धोळा वस्त्रथी आच्छादित अने सरसव वडे जेनो मंगलोपचार करेलो छे एवा आठ भद्रासनो मूकावे छे. त्यार बाद पोतानाथी थोडे दूर अनेक प्रकारना मणि अने रत्नथी सुशोभित, अधिक दर्शनीय, कींमती, मोटा शहेरमां बनेली, सूक्ष्म सूतरना सेंकडो कारीगरोवाळा विचित्रताणावाळी, तथा ईहामृग अने बळद वगेरेनी कारीगरीथी विचित्र एवी अंदरनी जवनिकाने-पडदाने खसेडे छे, खसेडीने (जवनिकानी अंदर) अनेक प्रकारना मणि अने रत्नोनी रचना वडे विचित्र, गादी अने कोमळ गालमसूरीयाथी ढंकायेलुं, श्वेत वस्त्रवडे आच्छादित, शरीरने सुखकर स्पर्शवाळुं तथा सुकोमळ एवुं एक भद्रासन प्रभावती देवी माटे मूकावे छे. त्यार पछी ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं-

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता बलस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ० पहाया कय जाव सरीरा सिद्धत्थगहरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं २ गिहेहिंतो निग्गच्छंति स० २ हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रन्नो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति एगओ मिलित्ता जेणेव बाहि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता करयल० बलरायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रन्ना वंदियपूइयसक्कारियसंमाणिया समाणा पत्तेयं २ पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति, तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ ठावेत्ता पुप्फफलपडिपुन्नहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावती देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा

'हे देवानुप्रियो! तमे शीघ्र जाओ, अने अष्टांग महानिमित्तना सूत्र अने अर्थने धारण करनारा, अने विविध शास्त्रमां कुशल एवा स्वप्नना लक्षण पाठकोने बोलावो.' त्यार बाद ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् आज्ञानो स्वीकार करीने बल राजानी पासेथी नीकळे छे; नीकळीने सत्वर, चपलपणे, झपाटाबंध अने वेगसहित हस्तिनापुर नगरनी वचोवच ज्यां स्वप्नलक्षणपाठकोना घरो छे, त्यां जइने स्वप्नलक्षणपाठकोने बोलावे छे. ज्यारे ते बल राजाना कौटुंबिक पुरुषोए ते स्वप्नलक्षणपाठकोने बोलाव्या त्यारे तेओ प्रसन्न थया, तुष्ट थया अने स्नान करी बलिकर्म करी यावत् शरीरने अलंकृत करी, मस्तके सर्षप अने लीली धरोनुं मंगल करी पोत पोताना घेरथी नीकळे छे, नीकळीने हस्तिनागपुर नगरनी वचे थइ ज्यां बल राजानुं उत्तम महालय छे, त्यां आवे छे, त्यां आवीने श्रेष्ठ महालयना द्वार पासे ते स्वप्नपाठको एकठा थाय छे, एकठ थइने ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवी हाथ जोडी बल राजाने जय अने विजयथी वधावे छे. त्यार बाद ते बल राजाए वांदेला, पूजेला, सत्कारेला अने सम्मानित करेला ते स्वप्नलक्षणपाठको पूर्वे गोठवेला भद्रासनो उपर बेसे छे. त्यार पछी ते बलराजा प्रभावती देवीने जवनिकानी–पडदानी अंदर बेसाडे छे. त्यार बाद पुष्प अने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फलथी परिपूर्ण हस्तवाळा ते बल राजाए अतिशय विनयपूर्वक ते स्वप्नलक्षणपाठकोने आ प्रमाणे कह्यु-'हे देवानुप्रियो! ए प्रमाणे खरेखर आजे प्रभावती देवी ते तेवा प्रकारना वासगृहमां यावत् स्वप्नमां सिंहने जोइने जागेली छे,

तएणं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ?, तए णं सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रन्नो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ० तं सुविणं ओगिण्हइ, २ ईहं अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ तस्स० २ त्ता अन्नमन्नेणं सद्धिं संचालेंति २ तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रन्नो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा उ० २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा, ॥

तो हे देवानुप्रियो! आ उदार एवा स्वप्ननुं यावत् बीजु कयुं कल्याणरूप फल अने वृत्तिविशेष थशे. त्यार पछी ते स्वप्नलक्षणपाठको बल राजानी पासेथी ए वात सांभळी तथा अवधारी खुश अने संतुष्ट थई ते स्वप्न संबन्धे सामान्य विचार करे छे, सामान्य विचार करी तेनो विशेष विचार करे छे, अने पछी ते स्वप्नना अर्थनो निश्चय करे छे, अने त्यार बाद तेओ परस्पर साथे विचारणा करे छे. त्यार पछी ते स्वप्नना अर्थने स्वयं जाणी, बीजा पासेथी ग्रहण करी, ते संबन्धी शंकाने पूछी, अर्थनो निश्चय करी अने स्वप्नना अर्थने अवगत करी बल राजानी आगळ स्वप्नशास्त्रोनो उच्चार करता तेओए आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेंताळीश सामान्य स्वप्नो, अने त्रीश महास्वप्नो मळीने कुल बहोंतेर जातना स्वप्नो कहेला छे.

For Private and Personal Use Only

तत्थ णं देवाणुप्पिया! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तंजहा-गयवसहसीहअभिसेयदामससिदिणयरं झयं कुंभं। पउमसरसागरविमाणभवणरयणुच्चयसिहिं च १४ ॥ १ ॥ वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, बलदेवमायरो वा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एतेसिं णं चउदसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झन्ति, इमे य णं देवाणुप्पिया! पभावतीएदेवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठ जाव मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए! भोग० पुत्त० रज्जलाभो देवाणुप्पिए!, एवं खलु देवाणुप्पिए! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव वीतिक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव पयाहिति सेऽविय णं दारए उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई राया भविस्सइ अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव-आरोग्ग तुट्ठि दीहाउअ कल्लाण० जावदिट्ठे।

तेमां हे देवानुप्रिय! तीर्थंकरनी माताओ के चक्रवर्तिनी माताओ ज्यारे तीर्थंकर के चक्रवर्ती गर्भमां आवीने उपजे त्यारे ए त्रीश महास्वप्नोमांथी आ चौद स्वप्नोने जोइने जागे छे, ते चौद स्वप्नो आ प्रमाणे छे-"१ हाथी, २ बलद, ३ सिंह, ४ लक्ष्मीनो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिषेक, ५ पुष्पमाळा, ६ चंद्र, ७ सूरज, ८ ध्वजा, ९ कुंभ, १० पद्मसरोवर, ११ समुद्र, १२ विमान अथवा भवन, १३ रत्ननो ढगलो अने १४ अग्नि" वळी वासुदेवनी माताओ ज्यारे वासुदेव गर्भमां आवे त्यारे ए चौद महास्वप्नोमांना कोइ पण सात महास्वप्नो जोइने जागे छे. तथा बलदेवनी माताओ ज्यारे बलदेव गर्भमां प्रवेश करे त्यारे ए चौद,महास्वप्नोमांना कोइ पण चार महास्वप्नोने जोइने जागे छे. मांडलिक राजानी माताओ ज्यारे मांडलिक राज गर्भमां प्रवेश करे त्यारे ए चौद महास्वप्नोमांना कोइ एक महास्वप्न जोइने जागे छे. तो हे देवानुप्रिय ! आ प्रभावती देवीए एक महास्वप्न जोयुं छे, हे देवानुप्रिय ! प्रभावती देवीए उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् आरोग्य, तुष्टि यावत् मंगल करनार स्वप्न जोयुं छे. तेथी हे देवानुप्रिय ! तमने अर्थलाभ थशे, भोगलाभ थशे, पुत्रलाभ थशे अने राज्यलाभ थशे. तथा हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर प्रभावती देवी नव मास संपूर्ण थया पछी अने साडा सात दिवस वित्या पछी तमारा कुलमां ध्वज समान पुत्र यावत् पुत्रनो जन्म आपशे. अने ते पुत्र पण बाल्यावस्था मूकी मोटो थशे त्यारे ते यावद् राज्यनो पति राजा थशे, अथवा भावितात्मा साधु थशे. तेथी हे देवानुप्रिय ! प्रभावती देवीए उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष तथा कल्याण करनार स्वप्न जोयुं छे.

तए णं से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ करयल जाव कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी–एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव से जहेयं तुब्भे वदहत्तिकट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ तं० त्ता सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असणपाणखाइमसाइमपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति संमाणेति सक्कारेत्ता संमाणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयति २ विपुलं २ पडिविसज्जेति पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अब्भुट्ठेइ सी० अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता पभावतीं देवीं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी–एवं खलु देवा णुप्पिया! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा तीसं महासुविणा बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा, तत्थ णं देवाणुप्पिए! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तं चेव जाव अन्नयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति, इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे तं ओराले तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव रज्जवई राया भविस्सइ अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव दिट्ठेत्तिकट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव दोच्चं पि तच्चंपि अणुबूहइ,

त्यार बाद ते बलराजा स्वप्नलक्षणपाठको पासेथी ए वातने सांभळी अने अवधारी हर्षित, अने संतुष्ट थयो, अने हाथ जोडी यावत् तेणे स्वप्नलक्षणपाठकोने आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो! आ ए प्रमाणे छे के, यावत् जे तमे कहो छो'–एम कही ते स्वप्नोनो सारी रीते स्वीकार करे छे. त्यार बाद स्वप्नलक्षणपाठकोने पुष्कळ अशन, पान, खादिम, पुष्प, वस्त्र, गंध, माला अने अलंकारो वडे सत्कार करे छे, सन्मान करे छे. तेम करीने जीवीकाने उचित घणुं प्रीतिदान आपे छे; अने प्रीतिदान आपीने ते स्वप्नलक्षणपाठकोने रजा आपे छे. त्यार पछी पोताना सिंहासनथी उठे छे, उठीने ज्यां प्रभावती देवी छे त्यां आवी प्रभावती देवीने तेणे ते प्रकारनी इष्ट, मनोहर यावत् मधुर वाणीवडे संलाप करता करता आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिये! ए प्रमाणे खरेखर स्वप्नशास्त्रमां बेंताळीश साधारण स्वप्नो, अने त्रीश महास्वप्नो तथा बधा मळीने बहोंतेर स्वप्नो देखाड्या छे. तेमां हे देवानुप्रिये! तीर्थंकरनी माताओ के चक्रवर्तिनी माताओ–इत्यादि पूर्ववत् कहेवुं, यावत् कोइ एक महास्वप्नने जोइने जागे छे. हे देवानुप्रिये! तमे आ

For Private and Personal Use Only

एक महास्वप्न जोयुं छे, हे देवी! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, यावद् ते राज्यनो पति राजा थशे के भावितात्मा अनगार थशे. हे देवि! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् मंगलकर स्वप्न जोयुं छे, एम कही प्रभावती देवीनी ते प्रकारनी इष्ट, कांत, प्रिय एवी यावद् मधुर वाणीवडे बे वार अने त्रण वार पण प्रशंसा करे छे.

तए णं सा पभावती देवी बलस्स रन्नो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठकरयलजाव एवं वयासी-एयमेयं देवाणुप्पिया! जाव तं सुविणं सम्मं पडिच्छति तं सुविणं सम्मं पडिच्छित्ता बलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्त जाव अब्भुट्ठेति अतुरियमचलजावगतीए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता सयं भवणमणुपविट्ठा। तए णं सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भं णाइसीएहिं नाइउण्हेहिं नाइतित्तेहिं नाइकडुएहिं नाइकसाएहिं नाइअंबिलेहिं नाइमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं भोयणच्छायणगंधमल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हियं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पइरिक्कसुहाए मणोणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुन्नदोहला सम्माणियदोहला अवमाणियदोहला वोच्छिन्नदोहला ववणीयदोहला ववगयरोगमोहभयपरित्तासा तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति। तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुन्नपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं जाव ससिसो- माकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाया।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्यार बाद ते प्रभावती देवी बल राजानी पासेथी ए वातने सांभळीने अवधारीने हर्षवाळी, अने संतुष्ट थइ यावत् हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली-'हे देवानुप्रिय! ए ए प्रमाणे ज छे' यावद् एम कही यावत् ते स्वप्नने सारी रीते ग्रहण करे छे. त्यार पछी बल राजानी अनुमतिथी अनेक प्रकारना मणी अने रत्ननी कारीगरीथी युक्त तथा विचित्र एवा ते भद्रासनथी उठी त्वरारहित, अचपल-पणे यावत् हंससमानगति वडे ज्यां पोतानुं भवन छे त्यां आवी तेणे पोताना भवनमां प्रवेश कर्यो. त्यार बाद ते प्रभावती देवी स्नान करी, बलिकर्म-देवपूजा करी, यावत् सर्व अलंकारथी विभूषित थइ ते गर्भने अतिशीत नहि, अतिउष्ण नहि, अति तिक्त नहि, अतिकटु नहि, अति तुरा नहि, अतिखाटां नहि, अने अतिमधुर नहि एवा. तथा दरेक ऋतुमां भोगवतां सुखकारक एवा भोजन, आच्छादन गंध अने माला वडे ते गर्भने हितकर, मित, पथ्य अने पोषणरूप छे तेवा आहारने योग्य देश अने योग्य काळे ग्रहण करती, तथा पवित्र अने कोमळ शयन अने आसनवडे एकान्तमां सुखरूप अने मनने अनुकूल एवी विहारभूमिवडे प्रशस्त दोहद-वाळी, संपूर्ण दोहदवाळी, सन्मानित दोहदवाळी, जेनो दोहद तिरस्कार पाम्यो नथी एवी, दोहदरहित, दूर थयेला दोहदवाळी, तथा रोग, मोह, भय अने परित्रास रहित ते गर्भने सुखपूर्वक धारण करे छे. त्यार बाद ते प्रभावती देवीए नव मास पूर्ण थया पछी अने साडा सात दिवस वीत्या पछी सुकुमालहाथ-पगवाळा अने दोषरहित प्रतिपूर्णपंचेन्द्रिय युक्त शरीरवाळा, तथा लक्षण, व्यंजन अने गुणथी युक्त, यावत् चंद्रसमानसौम्य आकारवाळा, कांत, प्रियदर्शन अने सुंदर रूपवाळा पुत्रने जन्म आप्यो.

तए णं तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता करयल जाव बलं रायं जयेणं विजएणं वद्धावेंति जएणं विजएणं वद्धावेत्ता एवं

वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती० पियट्टयाए पियं निवेदेमो पियं भे भवउ । तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जावरोमकूवे तासिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयति २ सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं भिंगारं च गिण्हइ गिण्हित्ता मत्थए धोवइ मत्थए धोवित्ता विउलं जीवियारिहं दलयति पीइदाणं पीइदाणं दलयित्ता सक्कारेति सम्माणेति ॥(सूत्रं ४२८)॥

त्यार बाद ते प्रभावती देवीनी सेवा करनार दासीओए तेने प्रसव थयेलो जाणी ज्यां बल राजा छे त्यां आवी हाथ जोडी यावत् बल राजाने जय अने विजयथी वधावीने आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर प्रभावती देवीनी प्रीति माटे आ (पुत्रजन्मरूप) प्रिय निवेदन करीए छीए, अने ते आपने प्रिय थाओ.' त्यार बाद ते बल राजा शरीरनी शुश्रूषा करनार दासीओ पासेथी ए वात सांभळी अवधारीने हर्षित अने संतुष्ट थइ यावद् मेघनी धाराथी सिंचायला कदंबकना पुष्पनी पेठे यावद् रोमांचित थइ ते अंगरक्षिका दासीओने मुकुट सिवाय पहेरेल सर्व अलंकार आपे छे. आपीने ते राजा श्वेत रजतमय अने निर्मल पाणीथी भरेला कलशने लइ ते दासीओना मस्तक धुए छे, मस्तकने धोइने तेओने जीविकाने उचित घणुं प्रीतिदान आपी सत्कार अने सन्मान करी विसर्जित करे छे. ॥ ४२८ ॥

तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेह चारग० २ माणुम्माणवद्धणं करेह मा० २ हत्थिणापुरं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जाव करेह कारवेह करेत्ता य कारवेत्ता य जूयसहस्सं वा चक्कसहस्सं वा पूयामहामहि-

मसक्कारं वा उस्सवेह २ ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रन्ना एवं वुत्ता० जाव पच्च-प्पिणंति। तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छित्ता तं चेव जाव मज्ज-णघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोडंडिमं अध-रिमं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियं सपुरजण-जाणवयं दसदिवसे ठिइवडियं करोति। तए णं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साह-स्सिए य सयसाहस्सिए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य सए य सयसाहस्सिए य लंभे पडिच्छे-माणे पडिच्छावेमाणे एवं विहरइ। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ तइए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेइ छट्ठे दिवसे जागरियं करेइ एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहदिवसे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडाविंति उ० २ जहा सिवो जाव खत्तिए य आमंतेति आ० २ तओ पच्छा ण्हाया कय० तं चेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति २ तस्सेव मित्तणातिजाव राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जयपज्जयपिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुवद्धणकरं अयमेयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति-जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स रन्नो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति महब्बलेत्ति।

त्यार बाद ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रिय! तमे शीघ्र हस्तिनापुर नगरमां केदीओने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुक्त करो, मुक्त करीने मान (माप) अने उन्मानने (तोलाने) वधारो; त्यार बाद हस्तिनागपुर नगरनी बहार अने अंदरना भागमां छंटकाव करो, साफ करो, संमार्जित करो, अने लींपो; तेम करी अने करावीने सहस्र यूपोनो अने सहस्र चक्रोनो पूजा, महामहिमा अने सत्कार करो, ए प्रमाणे करी मारी आ आज्ञा पाछी आपो. त्यार बाद ते बल राजाना कहेवा प्रमाणे करी ते कौटुंबिक पुरुषो तेनी आज्ञा पाछी आपे छे. त्यार पछी ते बल राजा ज्यां व्यायामशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने-इत्यादि पूर्ववत् कहेवुं. यावद् स्नानगृहथी बहार नीकळी जकात रहित, कररहित, प्रधान, (विक्रयनो निषेध करेलो होवाथी) आपवा योग्य वस्तु रहित, मापवा योग्य वस्तुरहित, मेयरहित, सुभटना प्रवेशरहित, दंड तथा कुदंडरहित, (ऋण मुक्त करेलुं होवाथी) अधरिमयुक्त-देवारहित, उत्तम गणिकाओ अने नाटकीयाओथी युक्त, अनेक तालानुचरो वडे युक्त, निरंतर वागतां मृदंगोसहित, ताजा पुष्पोनी माला युक्त, प्रमोद सहित, अने क्रीडा युक्त एवी स्थितिपतिता-पुत्रजन्ममहोत्सव पुर अने देशना लोको साथे मळीने दस दिवस सुधी करे छे. त्यार बाद दस दिवस सुधी स्थितिपतिता-उत्सव चालु हतो त्यारे ते बल राजा सो रूपियाना, हजार रूपियाना अने लाख रूपियाना खर्च-वाळा भागो, दानो अने द्रव्यना अमुक भागोने देतो अने देवरावतो तथा सो रूपियाना, हजार रूपियाना तथा लाख रूपियाना लाभने मेळवतो, मेळवावतो ए प्रमाणे रहे छे. त्यार बाद ते छोकराना मातापिता प्रथम दिवसे स्थितिपतिता-कुलनी मर्यादा प्रमाणे क्रिया करे छे; त्रीजे दिवसे चंद्र अने सूर्यनुं दर्शन करावे छे, छट्ठे दिवसे धर्मजागरण करे छे अने अग्यारमो दिवस वीत्या बाद अशुचि जातकर्म करवानुं निवृत्त थया पछी बारमे दिवसे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम पदार्थोने तैयार करावे छे, अने जेम शिव राजा संबन्धे कह्युं तेम क्षत्रियोने आमंत्रे छे. त्यार पछी स्नान तथा बलिकर्म करी इत्यादि पूर्वोक्त यावत् सत्कार अने सन्मान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करी तेज मित्र, ज्ञाति यावत् राजन्य अने क्षत्रियोनी समक्ष अर्या-पिता, पर्या-पितामह अने पिताना पण पितामहथी, घणा पुरुषोनी परंपराथी वधेलुं, कुलने योग्य, कुलने उचित अने कुलरूपसंतानतंतुने वधारनार आ आवा प्रकारनुं, गुणयुक्त अने गुणनिष्पन्न नाम पाडे छे. जेथी अमारो आ छोकरो बल राजानो पुत्र अने प्रभावति देवीनो आत्मज छे, माटे ते अमारा आ पुत्रनुं नाम 'महाबल' हो. त्यार बाद ते छोकराना माता पिता तेनुं 'महाबल' एवुं नाम करे छे.

तए णं से महब्बले दारए पंचधाईपरिग्गहिए, तंजहा-खीरधाईए एवं जहा दढपइन्ने जाव निवाय० निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढति। तए णं तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठितिवडियं वा चंडसूरदंसावणिंय वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पयचंकामणं वा जेमाणं वा पिंडवद्धणं वा पज्जपावणं वा कण्णवेहणं वा संवच्छरपडिलेहणं वा चोलोयणगं च उवणयणं च अन्नाणि य बहूणि गब्भाधाणजम्मणमादियाइं कोउयाइं करेंति। तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि एवं जहा दढप्पइन्नो जाव अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था। तए णं तं महब्बलं कुमार उम्मुक्कबालभावं जाव अलं भोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेंसए करेंति २ अब्भुग्गयमूसियपहसिए इव वन्नओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पडिरूवे, तेसि णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेगं भवणं करेंति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं वन्नओ जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवंसि जाव पडिरूवे (सूत्रं ४२९॥)

त्यार पछी ते महाबल नामे पुत्रनुं पांच धावो वडे पालन करावुं. ते पांच धावो आ प्रमाणे छे-क्षीरधात्री, ए प्रमाणे बधुं दढ-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिज्ञानी पेठे जाणवुं. यावत् ते कुमार वायुरहित अने निर्व्याघात-अडचणरहित स्थानमां अत्यंत सुखपूर्वक वृद्धि पामे छे, पछी ते महाबलना मातापिताए जन्मना दिवसथी मांडी अनुक्रमे स्थितिपतिता, सूर्यचंद्रनुं दर्शन, धर्मजागरण, नामकरण, भांखोडीया चालवुं, पगे चालवुं, जमाडवुं, कोळीआ वधारवा, बोलाववुं, कान विंधाववा, वर्षगांठ करवी, चूडा-शिखा रखाववी, उपनयन-शीखववुं ए बधां अने ए शिवाय बीजा घणा गर्भाधान, जन्म वगेरे कौतुको करे छे. त्यार पछी ते महाबल कुमारने तेना मातापिता आठ वरसथी अधिक उमरनो जाणी प्रशस्त तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्तमां (कलाचार्य पासे भणवा मोकले छे)-इत्यादि ए प्रमाणे बधुं दृढप्रतिज्ञनी पेठे कहेवुं, यावत् ते महाबल कुमार विषयोपभोगने समर्थ थयो. त्यार बाद ते महाबल कुमारनो बालभाव व्यतीत थयो जाणी, यावद् तेने विषयोपभोगने योग्य जाणी तेना माता पिता तेने माटे आठ श्रेष्ठ प्रासादो तैयार करावे छे, ते प्रासादो अतिशय उंचा अने (श्वेत वर्णना होवाथी) जाणे हसता होयनी-इत्यादि वर्णन राजप्रश्नीयसूत्रमां कह्या प्रमाणे जाणवुं. यावत् ते प्रासादो अत्यंत सुंदर छे, ते प्रासादोना बराबर मध्यभागमां एक मोटुं भवन तैयार करावे छे, ते भवन सेंकडो थांभला उपर रहेलुं छे-इत्यादि वर्णन राजप्रश्नीय सूत्रमां कह्या प्रमाणे प्रेक्षागृह अने मंडपना वर्णननी पेठे जणावुं, यावत् ते सुन्दर हतुं ॥ ४२९ ॥

तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो अन्नया कयावि सोभणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपाय० सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणगण्हाणगीयवाइयपसाहणट्ठंगतिलगकंकण-अविहववहुउवणीयं मंगलसुजंपिएहि य वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्मं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाणं विणीयाणं कयकोउयमंगलपायच्छित्ताणं सरिसएहिं रायकुलेहिंतो आणि-

For Private and Personal Use Only

ल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु।

त्यार पछी बीजा कोइ एक दिवसे शुभ तिथि, करण, दिवस नक्षत्र अने मुहूर्तमां जेणे स्नान, बलिकर्म-पूजा, रक्षा आदि कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित कर्युं छे एवा महाबल कुमारने सर्व अलंकारथी विभूषित करी अने सधवा स्त्रीओए करेला अभ्यंजन-विलेपन, स्नान, गीत, वादित्र, मंडन, आठ अंगमां तिलक अने कंकण पहेरावी मंगल अने अशीर्वादपूर्वक उत्तम रक्षा वगेरे कौतुकरूप अने सरसव वगेरे मंगलरूप उपचार वडे शांतिकर्म करी, योग्य, समानत्वचावाळी, समान उमरवाळी, समान लावण्य, रूप, यौवन अने गुणथी युक्त, विनीत, जेणे कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित करेलुं छे एवी समान राजकुलथी आणेली एवी, उत्तम, राजानी आठ श्रेष्ठ कन्याओनुं एक दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं.

तए णं तस्स महाबलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीइदाणं दलयंति तं०-अट्ठ हिरन्नकोडीओ अट्ठ सुवन्नकोडीओ अट्ठ मउडे मउडप्पवरे अट्ठ कुंडल० जुए कुंडलजुयप्पवरे अट्ठ हारे हारप्पवरे अट्ठ अद्धहारे अद्ध-हारप्पवरे अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ एवं मुत्तावलीओ एवं कणगावलीओ एवं रयणावलीओ अट्ठ कड-गजोए कडगजोयप्पवरे एवं तुडियजोए अट्ठ खोमजुयलाइं खोमजुयलप्पवराइं एवं वडगजुयलाइं एवं पट्टजुयलाइं एवं दुगुल्लजुयलाइं अट्ठ सिरीओ अट्ठ हिरीओ एवं धिईओ कित्तीओ बुद्धीओ लच्छीओ अट्ठ नंदाइं अट्ठ भद्दाइं अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए णियगवरभवणकेऊ अट्ठ झए झयप्पवरे अट्ठ वये वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएणं वएणं अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइं बत्तीसबद्धेणं नाडएणं अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए अट्ठ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं अट्ठ जुगाइं जुगप्पवराइं एवं सिवियाओ एवं संदमाणीओ एवं गिल्लीओ थिल्लीओ अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं अट्ठ रहे पारिजाणिए अट्ठ रहे संगामिए अट्ठ आसे आसप्पवरे अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएणं गामेणं ॥

त्यार पछी ते महाबल कुमारना माता पिता एवा प्रकारनुं आ प्रीतिदान आपे छे, ते आ प्रमाणे–आठ कोटि हिरण्य, आठ क्रोड सोनैया, मुकुटोमां उत्तम एवा आठ मुकुट, कुंडलयुगलमां उत्तम एवी आठ कुंडलनी जोडी, हारोमां उत्तम एवा आठ हार, अर्धहारमां श्रेष्ठ एवा आठ अर्धहार, एकसरा हारमां उत्तम एवा आठ एकसरा हार, एज प्रमाणे मुक्तावलीओ, कनकावलीओ अने रत्नावलीओ जाणवी; कडा युगलमां उत्तम एवा आठ कडानी जोडी, ए प्रमाणे तुडिय–बाजुबंधनी जोडी, रेशमी वस्त्र युगलमां उत्तम एवा आठ रेशमी वस्त्रनी जोडी, ए प्रमाणे सुतराउ वस्त्रनी जोडीओमां उत्तम एवी आठ सुतराउ वस्त्रनी जोडीओ, ए प्रमाणे टसरनी जोडीओ, पट्टयुगलो, दुकूलयुगलो, आठ श्री, आठ ह्री, ए प्रमाणे धी, कीर्ति, बुद्धि, अने लक्ष्मी देवीओनी प्रतिमा जाणवी. आठ नंदो, आठ भद्रो, ताडमां उत्तम एवा आठ तालवृक्ष–ए सर्वरत्नमय जाणवा. पोताना भवनना केतु–चिह्नरूप ध्वजमां उत्तम एवा आठ ध्वजो. दस हजार गायोनुं एक व्रज–गोकुल थाय छे, तेवा गोकुलमां उत्तम एवा आठ गोकुलो, नाटकोमां उत्तम अने बत्रीश माणसोथी भजवी शकाय एवा आठ नाटको, घोडाओमां उत्तम एवा आठ घोडा, आ बधुं रत्नमय जाणवुं. भांडागार समान हाथीओमां उत्तम एवा आठ रत्नमय हाथीओ, भांडागार समान सर्वरत्नमय यानोमां श्रेष्ठ एवा आठ यानो, युग्यमां उत्तम आठ युग्यो (अमुक जातना वाहनो) ए प्रमाणे शिबिका, स्यदंमानिका ए प्रमाणे गिल्ली, (हाथीनी उपरनी अंबाडी), थिल्लिओ (घोडाना आडा पलाणो),

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकट यानोमां (उघाडा वाहनोमां) प्रधान एवा आठ विकट यानो, आठ पारियानिक (क्रीडाना) रथो, संग्रामने योग्य एवा आठ रथो, अश्वोमां उत्तम एवा आठ अश्व, हाथीओमां उत्तम एवा आठ हाथीओ, ग्रामोमां उत्तम एवा आठ गामो जेमां दस हजार कुलो रहे ते एक गाम कहेवाय छे.

अट्ठ दासे दासप्पवरे एवं चेव दासीओ एवं किंकरे एवं कंचुइज्जे एवं वरिसधरे एवं महत्तरए अट्ठ सोवन्निए ओलंबणदीवे अट्ठ रुप्पामए ओलंबणदीवे अट्ठ सुवन्नरुप्पामए ओलंबणदीवे अट्ठ सोवन्निए उक्कंचणदीवे एवं चेव तिन्निवि अट्ठ सोवन्निए थाले अट्ठ रुप्पमए थाले अट्ठ सुवन्नरुप्पमए थाले अट्ठ सोवन्नियाओ पत्तीओ ३ अट्ठ सोवन्नियाइं थासयाइं ३ अट्ठ सोवन्नियाइं मंगलाइं ३ अट्ठ सोवन्नियाओ तलियाओ अट्ठ सोवन्नियाओ कावइआओ अट्ठ सोवन्निए अवएडए अट्ठ सोवन्नियाओ अवयक्काओ अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए ३ अट्ठ सोवन्नियाओ भिसियाओ अट्ठ सोवन्नियाओ करोडियाओ अट्ठ सोवन्निए पल्लंके अट्ठ सोवन्नियाओ पडिसेज्जाओ अट्ठ हंसासणाइं अट्ठ कोंचासणाइं एवं गरुलासणाइं उन्नयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं अट्ठ पउमासणाइं अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं अट्ठ तेल्लसमुग्गे जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठ सरिसवसमुग्गे अट्ठ खुज्जाओ जहा उववाइए जाव अट्ठ पारिसीओ अट्ठ छत्ते अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ अट्ठ चामराओ अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ अट्ठ तालियंटे अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ अट्ठ खीरधातीओ जाव अट्ठ अंकधातीओ अट्ठ अंगमद्दियाओ अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हावियाओ अट्ठ पसाहियाओ अट्ठ वन्नगपेसीओ अट्ठ चुन्नग-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पेसीओ अट्ठ कोट्ठागारीओ अट्ठ दव्वकारीओ अट्ठ उवत्थाणियाओ अट्ठ नाइडज्जाओ अट्ठ कोडुंबिणीओ अट्ठ महाणसिणीओ अट्ठ भंडागारिणीओ अट्ठ अज्झाधारिणीओ अट्ठ पुप्फाधारणीओ अट्ठ पाणिधारणीओ अट्ठ वलिकारीओ अट्ठसेज्जाकारीओ अट्ठ अब्भिं तरियाओ पडिहारीओ अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ अट्ठ मालाकारीओ अट्ठ पेसरीओ अन्नं वा सुबहुं हि- रन्नं वा सुवन्नं वा कंसं वा दूसं वा विउलधणकणगजावसंतसारसावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं। तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरन्नकोडिं दलयति एगमेगं सुवन्नकोडिं दलयति एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयति एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसण कारिं दलयति अन्नं वा सुबहुं हिरन्नं वा जाव परिभाएउं, तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली जाव विहरति ॥ (सूत्रं ४३०) ॥

दासोमां उत्तम एवा आठ दासो, एज प्रमाणे दासीओ ए प्रमाणे किंकरो, ए प्रमाणे कंचुकिओ, ए प्रमाणे वर्षधरो, (अंतःपुरना रक्षक खोजाओ) ए प्रमाणे महत्तरको (वडाओ), आठ सोनाना, आठ रुपाना तथा आठ सोना-रुपाना अवलंबन दीपो [हांडीओ] आठ सोनाना, आठ रुपाना अने आठ सोना-रुपाना उत्कंचनदीपो [दंडयुक्त दीवाओ], ए प्रमाणे त्रणे जातना पंजरदीपो-फानसो, आठ सोनाना, आठ रुपाना अने आठ सोना-रुपाना थाळो, आठ सोनानी आठ रुपानी अने आठ सोना-रुपानी पात्रीओ, (नाना पात्रो), ए प्रमाणे त्रणे जातना आठ स्थासको तासको, आठ मल्लको-चपणीया, आठ तलिका-रकेबीओ, आठ कलाचिका-चमचा, आठ तावेथाओ, आठ तवीओ, आठ पादपीठ-(पग मूकवाना बाजोठ), आठ भिसिका-(अमुक प्रकारना आसनो), आठ करोटिका

For Private and Personal Use Only

(अमुक जातना पात्रो, लोटा अथवा कचोला), आठ पलंग, आठ प्रतिशय्या (ढोयणी प्रमुख नानी बीजी शय्याओ), आठ हंसासनो, आठ क्रौंचासनो,ए प्रमाणे गरुडासनो,उंचा आसनो,नीचा आसनोदीर्घासनो,भद्रासनो,पक्षासनो,मकरासनो,आठ पद्मासनो,आठ दिक्स्वस्तिकासनो,आठ तेलना डाबडा–इत्यादि बधुं राजप्रश्नीय सूत्रमां कह्या प्रमाणे कहेवुं,यावद् आठ सरसवना डाबडा,आठ कुब्ज दासीओ–इत्यादि बधुं औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे कहेवुं, यावत् आठ पारसिक देशनी दासीओ; आठ छत्रो, आठ छत्र धरनारी दासीओ. आठ चामरो, आठ चामर धरनारी दासीओ, आठ पंखा, आठ पंखा वींजनारी दासीओ, आठ करोटिका–तांबूलना करंडिया–ने धारण करनारी दासीओ, आठ क्षीरधात्रीओ (दूध पानारी धावो), यावद् आठ अंकधात्रीओ (खोळामां रमाडनारी धावो) आठ अंगमर्मिकाओ,–शरीरनुं अल्प मर्दन करनारी दासीओ आठ उन्मर्दिकाओ (अधिक मर्दन करनारी दासीओ), आठ स्नान करावनारी दासीओ, आठ अलंकार पहेरावनारीओ, आठ चंदन घसनारीओ, आठ तांबूल चूर्ण पीसनारीओ, आठ कोष्ठागारनुं रक्षण करनारी, आठ परिहास करनारी, आठ सभामां पासे रहेनारी, आठ नाटक करनारीओ, आठ कौटुंबिकीओ–साथे जनारी दासीओ ,आठ रसोइ करनारी, आठ भांडागारनुं रक्षण करनारी, आठ मालणो, आठ पुष्प धारण करनारी, आठ पाणी लावनारी आठ बलि करनारी, आठ पथारी तैयार करनारी, आठ अंदरनी अने आठ बहारनी बहारनी प्रतिहारीओ, आठ माला करनारीओ, आठ पेषण करनारी, अने ए शिवाय बीजुं घणुं हिरण्य, सुवर्ण, कांसुं, वस्त्र तथा विपुल धन, कनक, यावत् विद्यमान सारभूत धन आप्युं. जे सात पेढी सुधी इच्छापूर्वक आपवा अने भोगववाने परिपूर्ण हतुं. त्यार बाद ते महाबल कुमार दरेक स्त्रीने एक एक हिरण्यकोटि, एक एक सुवर्णकोटि अने मुकुटोमां उत्तम एक एक मुकुट आपे छे. ए प्रमाणे पूर्वोक्त सर्व वस्तुओ एक एक आपे छे, यावत् एक एक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोषण करनारी दासी तथा बीजुं पण घणुं हिरण्य यावद् वहेंची आपे छे. त्यार पछी ते महाबल कुमार उत्तम प्रासादमां उपर बेसी जमालिनी पेठे यावद् विहरे छे. ॥ ४३० ॥

तेणं कालेणं २ विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने वन्नओ जहा केसिसामिस्स जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूतिज्जमाणे जेणेव हत्थिणागपुरे नगरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हति २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडगतिय जाव परिसा पज्जुवासइ। तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जणवूहं वा एवं जहा जमाली तहेव चिंता तहेव कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेति, कंचुइज्जपुरिसोवि तहेव अक्खाति, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयलजाव निग्गच्छइ, एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे सेसं तं चेव जाव सोऽवि तहेव रहवरेणं निग्गच्छति, धम्मकहा जहा केसिसामिस्स, सोवि तहेव अम्मापियरो आपुच्छइ, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए तहेव वुत्तपडिवुत्तया नवरं इमाओ य ते जाया विउलरायकुलबालियाओ कला० सेसं तं चेव जाव ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी—

ते काले ते समये विमलनाथ तीर्थंकरना प्रपौत्र–प्रशिष्य धर्मघोष नामे अनगार हता, ते जातिसंपन्न हता–इत्यादि वर्णन केशी स्वामीनी पेठे जाणवुं, यावत् तेओ पांचसो साधुना परिवारनी साथे अनुक्रमे एक गामथी बीजे गाम विहार करता ज्यां हस्तिनागपुर

नामे नगर छे, अने ज्यां सहस्राम्रवन नामे उद्यान छे, त्यां आवे छे, आवीने यथा योग्य अवग्रहने ग्रहण करी संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता यावद् विहरे छे, ते समये हस्तिनागपुर नगरमां शृंगाटक, त्रिक-[वगेरे मार्गोमां घणा माणसो परस्पर एम कहे छे इत्यादि] यावत् परिषद् उपासना करे छे. त्यार बाद ते महाबल कुमार घणा माणसोना शब्दने, जनना कोलाहलने सांभळी ए प्रमाणे यावत् जमालिनी पेठे जाणवुं, यावत् ते महाबल कुमार कंचुकी पुरुषने बोलावे छे, अने कंचुकी पुरुष पण तेज प्रमाणे कहे छे, परन्तु एटलो विशेष छे के ते कंचुकी धर्मघोष मुनिना आगमननो निश्चय जाणीने हाथ जोडीने यावद् नीकळे छे. ए प्रमाणे हे देवानुप्रिय ! विमलनाथ अरिहंतना प्रशिष्य धर्मघोष नामे अनगार अहीं आव्या छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् ते महाबल कुमार पण उत्तम रथमां बेसीने वांदवा नीकळे छे. धर्मकथा केशिस्वामिनी पेठे जाणवी. महाबल कुमार पण ते प्रमाणे मातापितानी रजा मागे छे, परन्तु ते 'धर्मघोष अनगारनी पासे दीक्षा लइ अगारथी-गृहवासथकी अनगारिकपणुं लेवाने इच्छुं छुं' एम कहे छे-इत्यादि उक्त अने प्रत्युक्ति ते प्रमाणे (जमालिना चरितमां वर्णव्या प्रमाणे) जाणवी. परन्तु हे पुत्र ! [आ तारी स्त्रीओ] विपुल एवा राजकुलमां उत्पन्न थयेली बालाओ छे, वळी ते कलाओमां कुशल छे-इत्यादि बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. यावत् मातापिताए इच्छा विना ते महाबल कुमारने आ प्रमाणे कह्युं-

तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए, तए णं से महब्बले कुमारे अम्मापियराण वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति । तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव अभिसिंचति करयलपरिग्गहियं महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति जएणं विजएणं

वद्धावित्ता जाव एवं वयासी–भण जाया! किं देमो किं पयच्छामो सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति अ० २ बहूहिं चउत्थजाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुन्नाइं दुवालस वासाइं सामन्नपरियागं पाउणति बहु० मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए० आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय- जहा अम्मडो जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता, तत्थ णं महब्बलस्सवि दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता ताओ चेव देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियगामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए ॥ (सूत्रं ४३१) ॥

'हे पुत्र! एक दिवस पण तारी राज्यलक्ष्मीने जोवा अमे इच्छीए छीए,' त्यारे ते महाबल कुमार मातापिताना वचनने अनुसरीने चूप रह्यो. पछी ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या –इत्यादि शिवभद्रनी पेठे राज्याभिषेक जाणवो, यावत् राज्याभिषेक कर्यो, अने हाथ जोडीने महाबल कुमारने जय अने विजयवडे वधावी यावद् आ प्रमाणे कह्युं–हे पुत्र! कहे के तने शुं दइए, तने शुं आपीए,' इत्यादि बाकीनुं बधुं जमालिनी पेठे जाणवुं; यावत् त्यार पछी ते महाबल अनगार धर्मघोष अनगारनी पासे सामायिकादि चउद पूर्वोने भणे छे, भणीने घणा चतुर्थ भक्त, यावद् विचित्र तपकर्मवडे आत्माने भावित करीने संपूर्ण बार वर्ष श्रमण पर्यायने पाळे छे, पाळीने मासिक संलेखनावडे निराहारपणे साठ भक्तोने वीतावी, आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राप्त थइ मरण समये काल करी ऊर्ध्व लोकमां चंद्र अने सूर्यनी उपर बहु दूर अंबडनी पेठे यावत् ब्रह्मलोक कल्पमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटलाक देवोनी स्थिति दस सागरोपमनी कहेली छे. तेमां महाबल देवनी पण दस सागरोपमनी स्थिति कहेली छे. हे सुदर्शन ! तुं ते ब्रह्मलोक कल्पमां दस सागरोपम सुधी दिव्य अने भोग्य एवा भोगोने भोगवी ते देवलोकथी आयुषनो, भवनो अने स्थितिनो क्षय थया पछी तुरतज च्यवी अहींज वाणिज्यग्राम नामना नगरमां श्रेष्ठिना कुलमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो छे. ॥ ४३१ ॥

तए णं तुमे सुदंसणा! उम्मुक्कबालभावेणं विन्नायपरिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपन्नत्ते धम्मे निसंते, सेऽविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा! इदाणिं पकरेसि। से तेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चइ-अत्थि णं एतेसिं पलिओवमसागरोवमाणं खयेति वा अवचयेति वा, तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोचा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्नीपुव्वे समुप्पन्ने एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति, तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढासंवेगे आणंदंसुपुन्ननयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आ० २ वं० नमं २ त्ता एवं वयासी-एवमेयं भंते! जाव से जहेयं तुज्झे वदहत्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ बहुपडिपुन्नाइं दुवालस वासाइं सामन्नपरियागं पाउणइ, सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते ॥ (सूत्र ४३२) ॥ महब्बलो समत्तो ॥ ११-११ ॥

त्यार बाद हे सुदर्शन ! बालपणाने वीतावी विज्ञ अने मोटो थइ, यौवनने प्राप्त थइ ते तेवा प्रकारना स्थविरोनी पासे केवलिए कहेलो धर्म सांभळ्यो, अने ते धर्म पण तने इच्छित अने स्वीकृत थयो, तथा तेना उपर तने अभिरुचि थइ. हे सुदर्शन! हाल तुं जे करे छे ते सारुं करे छे. तेमाटे हे सुदर्शन ! एम कहेवाय छे के ए पल्योपम अने सागरोपमनो क्षय अने अपचय थाय छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी ते सुदर्शन शेठने शुभ अध्यवसायवडे, शुभ परिणामवडे अने विशुद्ध लेश्याओथी तदावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम थवाथी ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषणा करतां संज्ञिरूप पूर्व जन्मनुं स्मरण उत्पन्न थयुं अने तेथी भगवंते कहेला आ अर्थने सारी रीते जाणे छे. त्यार बाद ते सुदर्शन शेठने श्रमण भगवंत महावीरे पूर्वभव संभारेलो होवाथी बेवडी श्रद्धा अने संवेग उत्पन्न थयो, तेनां लोचन आनंदाश्रुथी परिपूर्ण थया, अने तेणे श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार आदक्षिण प्रदक्षिणा करी, वांदी अने नमीने आ प्रमाणे कह्युं-'हे भगवन् ! तमे जे कहो छो ते एज प्रमाणे छे-यावत् एम कही ते सुदर्शन शेठ उत्तरपूर्व (ईशान) दिशा तरफ गया. बाकी बधुं ऋषभदत्तनी पेठे जाणवुं, यावत् ते सुदर्शन शेठ सर्व दुःखथी रहित थया. परन्तु विशेष ए छे के ते पूरां चौद पूर्वो भणे छे, अने संपूर्ण बार वरस सुधी श्रमणपर्यायने पाळे छे. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे -एम कही यावद् विहरे छे. ॥ ४३२ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां अगीयारमा उद्देशानो मूळार्थ संपूर्ण थयो.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्देशक १२.

तेणं कालेणं२ आलभिया नामं नगरी होत्था, वन्नओ, संखवणे चेइए, वन्नओ, तत्थ णं आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति। तएणं तेसिं समणोवासयाणं अन्नया कयावि एगयओ सहियाणं समुवागयाणं संनिविट्ठाणं सन्निसन्नाणं अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–देवलोगेसु णं अज्जो! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता?, तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठितीगहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी–देवलोएसु णं अज्जो! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव दससमयाहिया संखेज्जसमयाहिय असंखेज्जसमयाहिया उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। तए णं ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया (सूत्रं ४३३)।

ते काले–ते समये आलभिका नामे नगरी हती. वर्णन. शंखवन नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते आलभिका नगरीमां ऋषिभद्रपुत्र प्रमुख घणा श्रमणोपासको–श्रावको रहेता हता. तेओ धनिक यावद् कोइथी पराभव न पामे तेवा अने जीवा–जीव तत्त्वने जाणनारा हता. त्यार बाद बीजा कोइ एक दिवसे एकत्र मळेला, आवेला, एकठा थयेला अने बेठेला ते श्रमणोपासकोनो आ आवा प्रकारनो

For Private and Personal Use Only

वार्तालाप थयो-'हेआर्य! देवलोकमां देवोनी केटला काल सुधी स्थिति कही' छे? त्यार बाद देवस्थिति संबन्धे सत्य हकीकत जाणनार ऋषिभद्रपुत्रे ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं-'हे आर्य! देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी कही छे, त्यार पछी एकसमय अधिक, बे समय अधिक यावद् दश समय अधिक, संख्यात समयाधिक, अने असंख्य समयाधिक करतां उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे (अर्थात् तेनाथी उपरनी स्थितिना देवो अने देवलोको नथी.) त्यार पछी ए प्रमाणे कहेतां, यावत् एम प्ररूपणा करता ते श्रमणोपासको ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासकना आ अर्थनी श्रद्धा करता नथी, प्रतीति करता नथी अने रुचि करता नथी. ए अर्थनी श्रद्धा, प्रतीति अने रुचि नहि करता तेओ जे दिशाथी आव्या हता तेज दिशा तरफ पाछा गया. ॥ ४३३ ॥

तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ। तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा एवं जहा तुंगिउद्देसए जाव पज्जुवासंति। तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति० धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ। तए णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उ० २ समणं भगवं महावीरं वंदन्ति नमंसन्ति २ एवं वदासी-एवं खलु भंते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवं आइक्खइ जाव परूवेइ-देवलोएसु णं अज्जो! देवाणं दस वाससहस्साइं जहन्नेणं ठिती पन्नत्ता तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य, से कहमेयं भंते! एवं?, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं

वयासी-जन्नं अज्जो! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुज्झं एवं आइक्खइ जाव परूवेइ-देवलोगेसु णं अज्जो! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य, सच्चे णं एसमट्ठे। तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदन्ति नमंसन्ति २ जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छन्ति २ इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति नमंसंति २ एयमट्ठं संमं विणएणं भुज्जो २ खामेंति। तए णं समणोवासया पसिणाइं पुच्छंति पु० २ अट्ठाइं परियादेयंति अ० २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति वं० २ जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया (सूत्रं ४३४)॥

ते काले-ते समये श्रमण भगवंत महावीर यावत् समवसर्या, यावत् परिषद् तेमनी उपासना करे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको [श्री महावीरस्वामी आव्यानी] आ वात सांभळी, हर्षित अने संतुष्ट थया-इत्यादि तुंगिक उद्देशकनी पेठे जाणवुं, यावत् तेओ पर्युपासना करे छे. त्यार पछी श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा अत्यन्त मोटी ते पर्षदने धर्मकथा कही. यावत् तेओ आज्ञाना आराधक थया. त्यार पछी ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी, हर्षित अने संतुष्ट थया, अने प्रयत्नथी उभा थइ श्रमण भगवंत महावीरने वांदी अने नमीने आ प्रमाणे कह्युं-'हे भगवन्! ए प्रमाणे खरेखर ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक अमने ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, हे आर्य! देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी कही छे, अने ते पछी समयाधिक यावद् उत्कृष्टस्थिति [तेत्रीश सागरोपमनी कही छे], अने पछी देवो अने देवलोक व्युच्छिन्न थाय छे, तो हे भगवन्! ते ए प्रमाणे केवीरीते होय? [उ०] 'हे आर्यो'! एम कही श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ प्रमाणे कहुं-'हे आर्यो! ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक जे तमने आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, देवलोकोमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी छे, अने ते पछी समयाधिक करता-इत्यादि कहेवुं यावत् त्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे. ए वात साची छे. हे आर्यो! हुं पण एज प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं के देवलोकमां देवोनी स्थिति जघन्य दस हजार वर्षनी छे-इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, यावत् त्यार बाद देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे, ए अर्थ सत्य छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीनी पासेथी ए वात सांभळी अने अवधारी श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी ज्यां ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे, आवीने ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासकने वांदी तथा नमी ए अर्थने (सत्य वातने न मानवारूप अपराधने) सारी रीते विनयपूर्वक वारंवार खमावे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको तेने प्रश्नो पूछे छे, अने पूछी अर्थने ग्रहण करे छे, ग्रहण करी श्रमण भगवंत महावीरने वांदी नमी जे दिशाथकी आव्या हता, पाछा तेज दिशा तरफ गया. ॥ ४३४ ॥

भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वं० २ एवं वयासी-पभू णं भंते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए?, गोयमा! णो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउहिति ब० २ मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति मा० २ सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदेहिति २ आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती

For Private and Personal Use Only

पण्णत्ता, तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्संति। से णं भंते! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भव० ठिइक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहेति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ (सूत्रं ४३५)।

[प्र०] 'हे भगवन्' ! ए प्रमाणे कही भगवान् गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने वांदी अने नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं-'हे भगवन्! श्रमणोपासक ऋषिभद्रपुत्र आप देवानुप्रियनी पासे दीक्षा लइ गृहवासनो त्याग करी अनगारिकपणाने लेवाने समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम! आ अर्थ यथार्थ नथी; पण हे गौतम ! श्रमणोपासक ऋषिभद्रपुत्र घणा शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत प्रत्याख्यान अने पौषधोपवासो वडे तथा यथायोग्य स्वीकारेल तपकर्म वडे आत्माने भावित करतो घणां वरसो सुधी श्रमणोपासकपर्यायने पाळी, मासिक संलेखनावडे आत्माने सेवी, साठ भक्तो निराहारपणे वीतावी आलोचन अने प्रतिक्रमण करी, समाधिने प्राप्त थइ मरण समये काल करी सौधर्मकल्पमां अरुणाभम नामे विमानमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यां केटलाक देवोनी चार पल्योपमनी स्थिति कही छे; तेमां ऋषिभद्रपुत्र देवनी पण चार पल्योपमनी स्थिति हशे [प्र०] हे भगवन्! पछी ते ऋषिभद्रपुत्र देव ते देवलोकथी आयुषनो क्षय थया पछी, भवनो क्षय थया पछी, अने स्थितिनो क्षय थया बाद यावत् क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपद पामशे, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त-नाश करशे. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे-एम कही भगवान् गौतम यावत् आत्माने भावित करता विहरे छे. ॥ ४३५ ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयावि आलभियाओ नगरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्ख-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मइ पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था, वन्नओ, तत्थ णं संखवणे णामं चेइए होत्था, वन्नओ, तस्स णं संखवणस्स अदूरसामंते पोग्गले नामं परिव्वायए परिवसति रिउव्वेदजजुरवेदजावनएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ जाव आयावेमाणे विहरति। तए णं तस्स पोग्गलस्स छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स पगतिभद्दयाए जहा सिवस्स जाव विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पन्ने, से णं तेणं विब्भंगेणं अनाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठितिं जाणति पासति। तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—अत्थि णं ममं अइसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव [उक्कोसेणं] असंखेज्जसमयाहिया उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य, एवं संपेहेति एवं २ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ आ० २ तिदंडकुंडिया जाव धाउरत्ताओ य गेण्हइ गे० २ जेणेव आलभिया णगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ उव० २ भंडनिक्खेवं करेति भं० २ आलभियाए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं तहेव जाव वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। तए णं आलभियाए नगरीए एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स तं चेव से कहमेयं मन्ने एवं ?, सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया, भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेइ तहेव बहुजण-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सद्दं निसामेत्ता तहेव सव्वं भाणियव्वं जाव अहं पुण गोयमा! एवं आइक्खामि एवं भासामि जाव परूवेमि-देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठित्ती पन्नत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य।

त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोइ दिवसे आलभिका नगरीथी अने शंखवन नामे चैत्यथी नीकळी बहारना देशोमां विचरे छे. [प्र०] ते काले-ते समये आलभिका नामे नगरी हती. वर्णन. त्यां शंखवन नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते शंखवन चैत्यनी थोडे दूर पुद्गल नामे परिव्राजक रहेतो हतो. ते ऋग्वेद, यजुर्वेद अने यावत् बीजा ब्राह्मण संबन्धी नयोमां कुशल हतो. ते निरंतर छट्ठ छट्ठनो तप करवापूर्वक उंचा हाथ राखीने यावत् आतापना लेतो हतो. त्यार बाद ते पुद्गल परिव्राजकने निरन्तर छट्ठ छट्ठना तप करवापूर्वक यावद् आतापना लेता प्रकृतिनी सरलताथी शिव परिव्राजकनी पेठे यावद् विभंग नामे ज्ञान उत्पन्न थयुं, अने ते उत्पन्न थयेला विभंगज्ञानवडे ब्रह्मलोककल्पमां रहेला देवोनी स्थिति जाणे छे अने जुए छे. पछी ते पुद्गल परिव्राजकने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावद् उत्पन्न थयो-'मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी छे, अने पछी एक समय अधिक, बे समय अधिक, यावद् असंख्य समय अधिक करतां उत्कृष्टथी दस सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे'-एम विचार करे छे, विचारीनें आतापनाभूमिथी नीचे उतरी त्रिदंड, कुंडिका, यावद् भगवां वस्त्रोने ग्रहण करी ज्यां आलभिका नगरी छे, अने ज्यां तापसोना आश्रमो छे त्यां आवे छे, आवीने पोताना उपकरणो मूकी आलभिका नगरीमां शृंगाटक, त्रिक, यावद् बीजा मार्गोमां एक बीजाने ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपेत् छे-'हे देवानुप्रिय!

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे'–इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, त्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे.' त्यार बाद 'आलभिका नगरीमां'–ए अभिलापथी जेम शिव राजर्षि माटे पूर्वे कह्युं [श० ११ उ० ९ सू० ८] तेम अहीं कहेवुं, यावद् ए प्रमाणे केवी रीते होय? हवे महावीरस्वामी समवसर्या अने यावत् परिषद् वांदीने विसर्जित थइ. भगवान् गौतम तेज प्रमाणे भिक्षाचर्या माटे नीकळ्या अने तेओ घणा माणसोनो शब्द सांभळे छे–इत्यादि बधुं पूर्ववत् कहेवुं, यावद् हे गौतम! हुं पण ए प्रमाणे कहुं छुं, बोलुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं के देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी कही छे, अने त्यार पछी एक समयाधिक, द्विसमयाधिक यावत् उत्कृष्टथी तेत्रीश सागरोपम स्थिति कही छे, अने त्यार बाद देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे.

अत्थि णं भंते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि तहेव जाव हंता अत्थि, एवं ईसाणेवि, एवं जाव अच्चुए, एवं गेवेज्जविमाणेसु अणुत्तरविमाणेसुवि, ईसिपब्भाराएवि जाव हंता अत्थि, तए णं सा महतिमहालिया जाव पडिगया, तए णं आलंभियाए नगरीए सिंघाडगतिय० अवसेसं जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे नवरं तिदंडकुंडियं जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भंगे आलंभियं नगरं मज्झं० निग्गच्छति जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति अ० २ तिदंडकुंडियं च जहा खंदओ जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स जाव अव्वाबाहं सोक्खं अणुभवंति सासयं सिद्धा। सेवं भंते! २ त्ति ॥ (सूत्रं ४३६) ॥ ११–१२ ॥ एकारसमं सयं समत्तं ॥ ११–१२ ॥

For Private and Personal Use Only

[प्र०] हे भगवन् ! सौधर्मकल्पमां वर्णसहित अने वर्णरहित द्रव्यो छे ?-इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! हा, छे. ए प्रमाणे यावद् ईशान देवलोकमां पण जाणवुं. ते प्रमाणे यावद् अच्युतमां, ग्रैवेयकविमानमां, अनुत्तरविमानमां अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीमां (सिद्धशिलामां) पण वर्णसहित अने वर्णरहित द्रव्यो छे. त्यार बाद ते अत्यन्त मोटी परिषद् यावद् विसर्जित थई. पछी आलभिका नगरीमां शृंगाटक, त्रिक-विगेरे मार्गोमां घणा माणसोने एम कहे छे इत्यादि शिव राजर्षिनी पेठे कहेवुं, यावत् ते सर्व दुःखथी रहित थया. परन्तु विशेष ए छे के, त्रिदंड, कुंडिका यावद् गेरुथी रंगेला वस्त्रने पहेरी विभंगज्ञान रहित थयेलो ते पुद्गल परिव्राजक आलभिका नगरीनी वच्चे थईने नीकळे छे. नीकळीने यावद् उत्तरपूर्व (ईशान) दिशा तरफ जइ स्कंदकनी पेठे ते पुद्गल परिव्राजक त्रिदंड, कुंडिका यावद् मूकी प्रव्रजित थाय छे. बाकी बधुं शिवराजर्षिनी पेठे यावद् 'सिद्धो अव्याबाध अने शाश्वत सुखने अनुभवे छे' त्यांसुधी जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही यावद् भगवान् गौतम विहरे छे. ॥ ४३६ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना ११ मा शतकमां बारमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

॥ इति एकादश सयं समत्तं ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शतक १२. (उद्देशक १ लो.)

संखे १ जयंति २ पुढवि ३ पोग्गल ४ अइवाय ५ राहु ६ लोगे य ७। नागे य ८ देव ९ आया १० बारसमसए दसुद्देसा ॥ १ ॥

[उद्देशक संग्रह-] १ शंख, २ जयंती, ३ पृथिवी, ४ पुद्गल, ५ अतिपात ६ राहु, ७ लोक, ८ नाग, ९ देव अने १० आत्मा-ए विषयो संबन्धे दश उद्देशको बारमा शतकमां कहेवामां आवशे.

तेणं कालेणं २ सावत्थीनामं नगरी होत्था वन्नओ, कोट्ठए चेइए वन्नओ, तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे संखप्पामोक्खा समणोवासगा परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति, तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था सुकुमाल जाव सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवा २ जाव विहरइ, तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोक्खलीनामं समणोवासए परिवसइ अड्ढे अभिगय-जाव विहरइ, तेणं कालेणं २ सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवा०, तए णं ते समणोवासगा इमीसे जहा आलभियाए जाव पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति० धम्मकहा जाव परिसा पडिगया, तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० समणं भ० म० वं० न० वं० न० पसिणाइं पुच्छंति प० अट्ठाइं परियादियंति अ०२ उट्ठाए उट्ठेति

For Private and Personal Use Only

उ० २ समणस्स भ० महा० अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनि० प० २ जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ (सूत्रं ४३७) ॥

ते काले, ते समये श्रावस्ती नामनी नगरी हती. वर्णन. कोष्टक नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीमां शंखप्रमुख घणा श्रमणोपासको रहेता हता.तेओ धनिक यावद् अपरि भूत–कोइथी पराभव न पामे तेवा अने जीवाजीव तत्त्वने जाणनाराहता.ते शंख नामना श्रमणोपासकने उत्पला नामे स्त्री हती, ते सुकुमाल हाथपगवाळी, यावत् सुरूपा अने जीवाजीव तत्त्वने जाणनारी श्रमणोपासिका यावद् विहरती हती. ते श्रावस्ती नगरीमां पुष्कली नामे श्रमणोपासक रहेतो हतो, ते धनिक अने जीवाजीव तत्त्वनो ज्ञाता हतो. ते काले, ते समये त्यां महावीरस्वामी समवसर्या, परिषद् वांदवाने नीकळी, यावत् ते पर्युपासना करे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको भगवंत आव्यानी आ वात सांभळी आलभिका नगरीना श्रावकोनी पेठे यावत् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा ते अत्यंत मोटी सभाने धर्मकथा कही, यावत् सभा पाछी गई. पछी ते श्रमणोपासकोए श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्म सांभळी, अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थई श्रमण भगवंत महावीरने वांद्या अने नमन कर्युं; वांदीने, नमीने प्रश्नो पूछया, प्रश्नो पूछीने तेना अर्थो ग्रहण कर्या, अर्थो ग्रहण करी अने उभा थई श्रमण भगवंत महावीर पासेथी अने कोष्टक नामे चैत्यथी नीकळीने तेओए श्रावस्ती नगरी तरफ जवानो विचार कर्यो. ॥ ४३७ ॥

तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी– तुज्झे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा

परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो, तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति, तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–नो खलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणस्स ४ पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणिसुवन्नस्स ववगयमालावन्नगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति२ जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव सए गिहे जेणेव उप्पला समणोवासिया तेणेव उवा० २ उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ २ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ पोसह सालं अणुपविसइ २ पोसहसालं पमज्जइ पो० २ उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ उ० २ दब्भसंथारगं संथरति दब्भ० २ दब्भसंथारगं दुरूहइ दु० २ पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरति,

पछी ते शंख नामे श्रमणोपासके ए बधा श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं के हे देवानुप्रियो! तमे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने तैयर करावो. पछी आपणे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता, विशेष स्वाद लेता, परस्पर देता अने खाता पाक्षिक पोषधनुं अनुपालन करता विहरीशुं. त्यार पछी ते श्रमणोपासकोए शंख नामना श्रमणोपासकनुं वचन विनयपूर्वक स्वीकार्यु. त्यार बाद ते शंख नामे श्रमणोपासकने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत् उत्पन्न थयो–'अशन, यावत् स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता, विस्वाद लेता, परस्पर आपता अने खाता पाक्षिक पोषधने ग्रहण करीने रहेवुं मने श्रेयस्कर

नथी, पण मारी पोषधशालामां ब्रह्मचर्यपूर्वक, मणि अने सुवर्णनो त्याग करी माला, उद्वर्तन अने विलेपनने छोडी शस्त्र अने मुसल विगेरेने मूकीने तथा डाभना संथारा सहित मारे एकलाने-बीजानी सहाय शिवाय-पोषधनो स्वीकार करी विहरवुं श्रेय छे.' एम विचार करी, श्रावस्ती नगरीमां ज्यां पोतानुं घर छे, अने ज्यां उत्पला श्रमणोपासिका रहे छे, त्यां आवी उत्पला श्रमणोपासिकाने पूछी, ज्यां पौषधशाला छे त्यां जइ, पोषधशालामां प्रवेश करी, पोषधशालाने प्रमार्जी निहार अने पेशाब करवानी जग्याने प्रतिलेही-तपासीने डाभनो संथारो पाथरी तेना उपर बेठो, बेसीने पोषधशालामां पोषधग्रहण करी ब्रह्मचर्यपूर्वक यावत् पाक्षिक पोषधनुं पालन करे छे.

तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं गिहाइं तेणेव उवाग०२ विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति उ० २ अन्नमन्ने सद्दावेंति अ० २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं से विउले असणपाणखाइमसाइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं संखं समणोवासगं सद्दावेत्तए। तए णं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—अच्छन्तु णं तुज्झे देवाणुप्पिया! सुनिव्वुया वीसत्था अहन्नं संखं समणोवासगं सद्दावेमित्तिकट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमति प० २ सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे तेणेव उवाग० २ संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे। तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ पा० २ हट्ठतुट्ठ आसणाओ अब्भुट्ठेइ अ० २ त्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ २ पोक्खलिं समणो-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वासगं वंदति नमंसति वं० न० आसणेणं उवनिमंतेइ आ० २ एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! किमागमणप्पयोयणं?, तए णं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी-कहिन्नं देवाणुप्पिए! संखे समणोवासए?, तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलं समणोवासयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव विहरइ।

त्यार बाद ते श्रमणोपासकोए श्रावस्ती नगरीमां पोतपोताने घेर जइ, पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने तैयार करावी परस्पर एक बीजानेबोलावी आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रियो! आपणे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने तैयार करावेलो छे, पण ते शंख श्रमणोपासक जलदी आव्या नहि, माटे हे देवानुप्रियो! आपणे शंख श्रमणोपासकने बोलाववा श्रेयस्कर छे. त्यारबाद ते पुष्कली नामना श्रमणोपासके ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रियो! तमे शांतिपूर्वक विसामो ल्यो, अने हुं शंख श्रमणोपासकने बोलावुं छुं' एम कही श्रमणोपासकोनी पासेथी नीकळी श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमां ज्यां शंख श्रमणोपासकनुं घर छे, त्यां जइ तेणे शंख श्रमणोपासकना घरमां प्रवेश कर्यो. पछी ते [शंख श्रावकनी पत्नी] उत्पला श्रमणोपासिका ते पुष्कलि श्रमणोपासकने आवतो जोइ, हर्षित अने संतुष्ट थई पोताना आसनथी उठी सात आठ पगलां तेनी सामे जइ पुष्कलि श्रमणोपासकने वांदी अने नमी आसनवडे उपनिमंत्रण कर्या बाद आ प्रमाणे बोली-'हे देवानुप्रिय! कहो, के तमारा आगमननुं शुं प्रयोजन छे? त्यारे ते पुष्कलि श्रमणोपासिकाने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रिये! शंख श्रमणोपासक क्यां छे'? त्यार बाद ते उत्पला श्रमणोपासिकाए ते पुष्कलि श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रिय! खरेखर शंख श्रमणोपासक पोषधशालामां पोषध ग्रहण करी ब्रह्मचारी थइने यावद् विहरे छे.'

For Private and Personal Use Only

तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ गमणागमणाए पडिक्कमइ ग० २ संखं समणोवासगं वंदति नमंसति वं० न० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं से विउले असणजाव साइमे उवक्खडाविए तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो, तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी-णो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए, तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा जाव विहरह।

त्यार बाद ते पुष्कलि श्रमणोपासके ज्यां पोषधशाला छे, अने ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां आवी, गमनागमनने (जतां आवतां कोइ जीवनी हिंसा करी होय तेने) प्रतिक्रमी शंख श्रमणोपासकने वांदी अने नमीने तेने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर अमे घणो अशन, यावत्-स्वादिम आहार तैयार कराव्यो छे, तो हे देवानुप्रिय! आपणे जइए, अने पुष्कळअशन, यावत्-स्वादिम आहारनो आस्वाद लेतायावत्-पोषधनुं पालन करता विहरीए.त्यार बाद ते शंख श्रमणोपासके ते पुष्कलि श्रपणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं—'हे देवानुप्रिय! पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावत् पोषधनुं पालन करी विहरवुं मने योग्य नथी, मने तो पोषधशालामां पोषधयुक्त थइने यावत् -विहरवुं योग्य छे. माटे हे देवानुप्रिय! तमे इच्छा प्रमाणे घणा अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावद् विहरो.'

तए णं से पोक्खली समणोवासगे संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ २त्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ २ ते समणोवासए एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव विहरइ, तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुज्झे विउले असणपाणखाइमसाइमे जाव विहरह, संखे णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ। तए णं ते समणोवासगा ते विउले असणपाणखाइमसाइमे आसाएमाणा जाव विहरंति। तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-सेयं खलु मे कल्लं जाव जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति एवं २ कल्लं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्खमति प० २ सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमित्ता पादविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जाव पज्जुवासति, अभिगमो नत्थि।

त्यारबाद ते पुष्कलि श्रमणोपासक शंख श्रमणोपासकनी पासेथी पोषधशालामांथी बहार नीकळी श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमां ज्यां ते श्रमणोपासको छे त्यां आव्यो, अने त्यां आवी ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रियो! ए प्रमाणे खरेखर शंख श्रमणोपासक पोषधशालामां पोषध ग्रहण करीने यावद् विहरे छे. [तेणे कह्युं के-] 'हे देवानुप्रियो! तमे इच्छा मुजब घणा अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावत् विहरो, शंख श्रमणोपासक तो शीघ्र नहि आवे.' त्यारबाद ते

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रमणोपासको ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने आस्वादता यावत्-विहरे छे. त्यारबाद मध्य रात्रिना समये धर्म जागरण करता ते शंख श्रमणोपासकने आवा प्रकारनो आ विचार यावत् उत्पन्न थयो-'आवती काले यावत् सूर्य उगवाना समयें श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी यावत् पर्युपासना करी त्यांथी पाछा आवीने पाक्षिक पोषध पारवो श्रेयस्कर छे,-एम विचार करे छे, एम विचारी आवती काले यावत् सूर्योदय समये पोषधशालाथी बहार नीकळी शुद्ध, बहार जवा योग्य तथा मंगलरूप वस्त्रो उत्तम रीते पहेरी पोताना घरथी बहार नीकळी पगे चाली श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमां थइने जाय छे, यावत् पर्युपासना करे छे, अहिं [पोषधयुक्त होवाथी] तेने अभिगमो नथी.

तए णं ते समणोवासगा कल्लं पादु० जाव जलंते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति सएहिं २ एगयओ मिलायंति एगयओ २ सेसं जहा पढमं जाव पज्जुवासंति। तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य० धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवति। तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति उ० २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति वं० २ त्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छन्ति २ संखं समणोवासयं एवं वयासी-तुमं देवाणुप्पिया! हिज्जा अम्हेहिं अप्पणा चेव एवं वयासी-तुम्हे णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं जाव विहरिस्सामो, तए णं तुमं पोसहसालाए जाव विहरिए, तं सुट्ठु णं तुमं देवाणुप्पिया! अम्हं हीलसि, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी-माणं! अज्जो तुज्झे संखं समणोवासगं हीलह निंदह खिंसह

For Private and Personal Use Only

गरहह अवमन्नह, संखे णं समणोवासए पियधम्मे चेव दढधम्मे चेव सुदक्खुजागरियं जागरिए (सू० ४३८) ॥

त्यार बाद [पूर्वे कहेला] ते श्रमणोपासको आवती काले यावत् सूर्योदय समये स्नान करी, बलिकर्म करी यावत् शरीरने अलंकृत करी पोत पोताना घरथी नीकळी एक स्थळे भेगा थाय छे, एक स्थळे भेगा थइने–इत्यादि बधुं प्रथम निर्गमवत् जाणवुं यावत् (भगवंत महावीरनी पासे जइ) तेमनी पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा ते सभाने धर्मकथा कही. यावत् 'ते आज्ञाना आराधक थाय छे' त्यां सुधी जाणवुं त्यार बाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी, हृष्ट अने तुष्ट थया, अने उभा थइ श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी, ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां आव्या; आवीने शंख श्रमणोपासकने तेओए एम कह्युं के–'हे देवानुप्रिय! तमे गइ काले अमने एम कह्युं हतुं के, 'हे देवानुप्रियो! तमे पुष्कळ अशनादि आहारने तैयार करावो, यावद्–आपणे विहरीशुं, त्यार बाद तमे पोषधशालामां यावद् विहर्या, तो हे देवानुप्रिय! तमे अमारी ठीक हीलना (हांसी) करी.' पछी 'हे आर्यो!' एम कही श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं–'हे आर्यो!' तमे शंख श्रमणोपासकनी हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा अने अवमानना न करो, कारण के ते शंख श्रमणोपासक धर्मने विषे प्रीतिवाळो अने दृढतावाळो छे, तथा तेणे [प्रमाद अने निद्राना त्यागथी] सुदृष्टि-ज्ञानीनुं जागरण करेल छे. ॥ ४३८ ॥

भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भ० महा० वं० न० २ एवं वयासी–कइविहा णं भंते! जागरिया पण्णत्ता?, गोयमा! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तंजहा—बुद्धजागरिया अबुद्धजागरिया सुदक्खुजागरिया, से केण० एवं वु० तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तंजहा—बुद्धजा० १ अबुद्धजा० २ सुदक्खु० ३?, गोयमा! जे इमे अरिहंता

भगवंता उप्पन्ननाणदंसणधरा जहा खंदए जाव सवन्नू सव्वदरिसी एए णं बुद्धा बुद्धजागरियं जागरंति, जे इमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया भासासमिया जाव गुत्तबंभचारी एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति, जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव विहरन्ति एते णं सुदक्खुजागरियं जागरिंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिविहा जागरिया जाव सुदक्खुजागरिया (सूत्रं ४३९) ॥

[प्र०] 'भगवन्'! ए प्रमाणे कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे, वांदी अने नमी तेणे आ प्रमाणे कह्युं-'हे भगवन्! जागरिका केटला प्रकारनी कही छे? [उ०] हे गौतम! जागरिका त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—१ बुद्धजागरिका, २ अबुद्धजागरिका अने ३ सुदर्शनजागरिका. [प्र०] हे भगवन्! तमे ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के 'जागरिका त्रण प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-बुद्धजागरिका, अबुद्धजागरिका अने सुदर्शनजागरिका'? [उ०] हे गौतम! जे उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनना धारण करनारा आ अरिहंत भगवंतो छे-इत्यादि स्कंदकना अधिकारमां कह्या प्रमाणे सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे-ए बुद्धो (केवलज्ञानवडे) बुद्धजागरिका जागे छे. जे आ भगवंत अनगारो ईर्यासमितियुक्त, भाषासमितियुक्त अने यावत् गुप्त ब्रह्मचारी छे, तेओ (केवलज्ञानी नहि होवाथी) अबुद्ध छे अने तेओ अबुद्धजागरिका जागे छे. तथा जे आ श्रमणोपासको जीवाजीवने जाणनारा छे, यावत् तेओ (सम्यग्दर्शनी होवाथी) सुदर्शनजागरिका जागे छे. माटे ते हेतुथी हे गौतम! ए प्रमाणे कह्युं छे के जागरिका त्रण प्रकारनी छे, यावत् सुदर्शनजागरिका छे. ॥ ४३९ ॥

तए णं से संखे समणोवासए समणं भ० महावीरं वंदइ नमं० २ एवं वयासी—कोहवसट्टे णं भंते! जीवे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किं बंधइ किं पकरेति किं चिणाति किं उवचिणाति ?, संखा ! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ एवं जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ। माणवसट्टे णं भंते ! जीवे एवं चेव, एवं मायावसट्टेवि, एवं लोभवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ। तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा समणं भगवं महावीरं वं० नमं० २ जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवा० २ संखं समणोवासगं वं० न० २ त्ता एयमट्ठं संमं विणएणं भुज्जो २ खामेंति। तए णं ते समणोवासगा सेसं जहा आलंभियाए जाव पडिगया, भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ एवं वयासी-पभू णं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं सेसं जहा इसिभद्दपुत्तस्स जाव अंतं काहेति। सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति जाव विहरइ (सूत्रं ४४०) ॥ १२-१ ॥

[प्र०] त्यार बाद ते शंख श्रमणोपासके श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे कह्युं–हे भगवन् ! 'क्रोधने वश होवाथी पीडित थयेलो जीव शुं बांधे, शुं करे, शेनो चय करे अने शेनो उपचय करे ? [उ०] हे शंख ! क्रोधने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव आयुष सिवायनी सात कर्मप्रकृतिओ शिथिल बन्धनथी बांधेली होय तो कठिन बन्धनवाळी करे–इत्यादि सर्व प्रथम शतकमां कहेला संवररहित अनगारनी पेठे जाणवुं, यावत् ते [संवररहित साधु] संसारमां भमे छे. [प्र०] हे भगवन् ! मानने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव शुं बांधे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं, अने एज प्रमाणे मायाने वश थवाथी पीडित थयेला अने लोभने वश थवाथी पीडित थयेला जीव संबन्धे पण जाणवुं; यावत् ते संसारमां भमे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीर पासेथी ए-

For Private and Personal Use Only

प्रमाणे वात सांभळी, अवधारी भय पाम्या, त्रास पाम्या, त्रसित थया अने संसारना भयथी उद्विग्न थया. तथा तेओ श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां जइ शंख श्रमणोपासकने वांदी, नमी ए (अविनयरूप) अर्थने सारी रीते विनयपूर्वक वारंवार खमावे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको यावत् पाछा गया. तेनो बाकी रहेलो वृत्तांत आलभिकाना श्रमणोपासकोनी पेठे जाणवो. [प्र०] 'भगवान्' ! एम कही भगवान् गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे कह्युं-हे भगवन् ! ते शंख श्रमणोपासक आप देवानुप्रियनी पासे प्रव्रज्या लेवाने समर्थ छे ? [उ०] बाकी बधुं ऋषिभद्रपुत्रनी पेठे जाणवुं. यावत्-ते सर्व दुःखोनो अन्त करशे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, एम कही विहरे छे. ॥ ४४० ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना १२ मा शतकमां प्रथम उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक २.

तेणं कालेणं २ कोसंबी नामं नगरी होत्था वन्नओ, चंदोवतरणे चेइए वन्नओ, तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रन्नो पोत्ते सयाणीयस्स रन्नो पुत्ते चेडगस्स रन्नो नत्तुए मिगावतीए देवीए अत्तए जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जइ उदायणे नामं राया होत्था वन्नओ, तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रन्नो सुण्हा सयाणीयस्स रन्नो भज्जा चेडगस्स रन्नो धूया उदायणस्स रन्नो माया जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्था वन्नओ सुकुमालजावसुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ, तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रन्नो धूया सयाणीयस्स रन्नो भगिणी उदायणस्स रन्नो पिउच्छा मिगावतीए देवीए नणंदा वेसालीसावयाणं अरहंताणं पुव्वसिज्जायरी जयंती नामं समणोवासिया होत्था सुकुमाल जाव सुरूवा अभिगय जाव वि० (सूत्रं ४४१)।

ते काले, ते समये कौशांबी नामे नगरी हती. वर्णन. चन्द्रावतरण चैत्य हतुं. वर्णन. ते कौशांबी नगरीमां सहस्रानीक राजानो पौत्र, शतानीक राजानो पुत्र, चेटक राजानी पुत्रीनो पुत्र, मृगावती देवीनो पुत्र, अने जयंती श्रमणोपासिकानो भत्रीजो उदायन नामे राजा हतो. वर्णन. ते कौशांबी नगरीमां सहस्रानीक राजाना पुत्रनी पत्नी, शतानीक राजानी पत्नी, चेटक राजानी पुत्री, उदायन राजानी माता अने जयंती श्रमणोपासिकानी भोजाइ मृगावती नामे देवी हती. सुकुमाल हाथपगवाळी—इत्यादि वर्णन जाणवुं, यावत् सुरूपवाळी अने श्रमणोपासिका हती. वळी ते कौशांबी नगरीमां जयंती नामे श्रमणोपासिका हती, जे सहस्रानीक राजानी पुत्री, शतानीक राजानी भगिनी, उदायन राजानी फोइ, मृगावती देवीनी नणंद अने श्रमण भगवंत महावीरना साधुओनी प्रथम शय्यातर (वसति आपनार) हती. ते सुकुमाल, यावत् सुरूपा अने जीवाजीवने जाणनारी यावद् विहरती हती. ॥ ४४१ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ। तए णं से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ को०२ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नगरिं सब्भिंतरबाहिरियं एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव पज्जुवासए। तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मियावती देवी तेणेव उवा०२ मियावतीं देविं एवं वयासी—एवं जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ। तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेति। तए णं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सा मियावती देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ को० २ एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्तजोइयजाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति। तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव अंतेउराओ निग्गच्छति अं० २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उ० २ जाव रूढा। तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा समाणी नियगपरियालगा जहा उसभदत्तो जाव धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ। तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा जाव वं० नमं० उदायणं रायं पुरओ कट्टु ठितिया चेव जाव पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महा० उदायणस्स रन्नो मियावईए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहा० जाव धम्मं० परिसा पडिगया उदायणे पडिगए मियावती देवीवि पडिगया (सूत्रं ४४२)।

ते काले, ते समये महावीर स्वामी समवसर्या, यावत् पर्षत् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद ते उदायन राजा आ (श्रमण भगवंत महावीर पधार्यानी) वात सांभळी हृष्ट तुष्ट थयो, अने तेणे कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रियो! शीघ्रज कौशांबी नगरीने बहार अने अंदर साफ करावो'-इत्यादि बधुं कूणिक राजानी पेठे कहेवुं, यावत्-ते पर्युपासना करे छे, त्यार बाद (श्रमण भगवंत महावीर पधार्यानी) आ वात सांभळी ते जयंती श्रमणोपासिका हृष्ट अने तुष्ट थइ, अने ज्यां मृगावती देवी छे त्यां आवी तेणे मृगावती देवीने आ प्रमाणे कह्युं-ए प्रमाणे नवम शतकमां ऋषभदत्तना प्रकरणमां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् [श्रमण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भगवंत महावीरनुं दर्शन आपणा कल्याण माटे] थशे. त्यार बाद जेम देवानंदाए ऋषभदत्तना वचननो स्वीकार कर्यो तेम मृगावती देवीए ते जयंती श्रमणोपासिकाना वचननो स्वीकार कर्यो, त्यार पछी ते मृगावती देवीए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो! वेगवाळुं, जोतरसहित यावत् धार्मिक श्रेष्ठ यान जोडीने जलदी हाजर करो,' यावत्–ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् हाजर करे छे, अने तेनी आज्ञा पाछी आपे छे. त्यार बाद ते मृगावती देवी ते जयंती श्रमणोपासिकानी साथे स्नान करी, बलिकर्म-पूजा करी. यावत्–शरीरने शणगारी घणी कुब्ज दासीओ साथे यावत् अंतःपुरथी बहार नीकळे छे, नीकळी ज्यां बहारनी उपस्थान-शाला छे, अने ज्यां धार्मिक श्रेष्ठ वाहन तैयार उभुं छे. त्यां आवी यावत् ते वाहन उपर चढी. त्यार बाद जयंती श्रमणोपासिकानी साथे धार्मिक श्रेष्ठ यान उपर चडेली ते मृगावती देवी पोताना परिवारयुक्त ऋषभदत्त ब्राह्मणनी पेठे यावत्–ते धार्मिक श्रेष्ठ वाहनथी नीचे उतरे छे. पछी जयंती श्रमणोपासिकानी साथे ते मृगावती देवी घणी कुब्ज दासीओना परिवार सहित देवानंदानी पेठे यावद् वांदी, नमी उदायन राजाने आगळ करी त्यांज रहीनेज यावद् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे उदायन राजाने, मृगावती देवीने, जयंती श्रमणोपासिकाने अने ते अत्यन्त मोटी परिषदने यावद् धर्मोपदेश कर्यो, यावत् परिषद् पाछी गइ, उदायन राजा अने मृगावती देवी पण पाछा गया. ॥ ४४२ ॥

तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भ० महावीरं वं० न० २ एवं वयासी–कहिन्नं भंते! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छन्ति?, जयंती! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु जीवा गरुयत्तं हव्वं० एवं जहा पढमसए जाव वीयीवयंति। भवसिद्धियत्तणं भंते!

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवाणं किं सभावओ परिणामओ ?, जयंती ! सभावओ, नो परिणामओ । सव्वेऽवि णं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ?, हंता ! जयंती ! सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति । जइ भंते ! सव्वे भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणं खाइएणं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?, जयंती ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समये २ अवहीरमाणी२ अणंताहिं ओसप्पिणीअवसप्पिणीहिं अवहीरंति नो चेव णं अवहिया सिया, से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति नो चेव णं भवसिद्धिअविरहिए लोए भविस्सइ ॥

त्यार बाद ते जयंती श्रमणोपासिका श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी हृष्ट अने तुष्ट थइ, श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे बोली के-[प्र०] हे भगवन् ! जीवो शाथी गुरुत्व-भारेपणुं पामे ? [उ०] हे जयंती ! जीवो प्राणातिपातथी-जीवहिंसाथी यवद् मिथ्यादर्शनशल्यथी, ए प्रमाणे खरेखर जीवो भारेकर्मीपणुं प्राप्त करे छे. ए प्रमाणे जेम प्रथम शतकमां कह्यु छे तेम जाणवुं, यावत् तेओ मोक्षे जाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोनुं भवसिद्धिकपणुं स्वभावथी छे के परिणामथी छे ? [उ०] हे जयंती ! भवसिद्धिक जीवो स्वभावथी छे, पण परिणामथी नथी. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वे भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे ? [उ०] हे जयंती ! हा, सर्वे भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे. [प्र०] हे भगवन् ! जो सर्वे भवसिद्धिको सिद्ध थशे तो आ लोक भवसिद्धिक जीवो रहित थशे ? [उ०] ते अर्थ यथार्थ नथी, अर्थात् बधा भवसिद्धिको सिद्ध थाय तोपण भवसिद्धिक विनानो लोक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहिं थाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे तमे शा हेतुथी कहो छो के 'बधाय पण भवसिद्धिको सिद्ध थशे, अने लोक भवसिद्धिक जीवोथी रहित नहीं थाय' ? [उ०] हे जयंती! जेमके सर्वाकाशनी श्रेणी होय, ते अनादि, अनंत, बन्ने बाजुए परिमित अने बीजी श्रेणीओथी परिवृत होय, तेमांथी समये समये एक परमाणु पुद्गलमात्रखंडो काढतां काढतां अनन्त उत्सर्पिणी अने अनन्त अवसर्पिणी सुधी काढीए तोपण ते श्रेणि खाली थाय नहीं; ते प्रमाणे हे जयंती ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के, बधाय भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे, तो पण लोक भवसिद्धिक जीवो विनानो थशे नहि.

सुत्तत्तं भंते! साहू जागरियत्तं साहू?, जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जाव साहू ?, जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जमाणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, एए णं जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणभूयजीवसत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति, एए णं जीवासुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति, एएसिं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू, एए णं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणियाए वट्टंति, ते णं जीवा जागरमाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति, एए णं जीवा जागरमाणा

For Private and Personal Use Only

धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू, से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥

[प्र०] हे भगवन्! सुतेलापणुं सारुं के जागरितत्त्व–जागेलापणुं सारुं? [उ०] हे जयंती! केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं, अने केटलाक जीवोनुं जागेलापणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी तमे एम कहो छो के 'केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं जागेलापणुं सारुं? [उ०] हे जयंती! जे आ जीवो अधार्मिक, अधर्मने अनुसरनारा जेने अधर्म प्रिय छे एवा, अधर्म कहेनारा, अधर्मने ज जोनारा, अधर्ममां आसक्त, अधर्माचरण करनारा अने अधर्मथीज आजीविकाने करता विहरे छे, ए जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं छे. जो ए जीवो सूतेला होय तो बहु प्राणोना, भूतोना, जीवोना तथा सत्त्वोना दुःख माटे, शोक माटे, यावत्–परिताप माटे थता नथी, वळी जो ए जीवो सूतेला होय तो पोताने, बीजाने के बन्नेने घणी अधार्मिक संयोजना वडे जोडनारा होता नथी, माटे ए जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं छे. तथा हे जयंती! जे आ जीवो धार्मिक अने धर्मानुसारी छे, यावत्–धर्मवडे आजीविका करता विहरे छे, ए जीवोनुं जागेलापणुं सारुं छे; जो ए जीवो जागता होय तो ते घणा प्राणीओना यावत्–सत्त्वोना अदुःख (सुख) माटे यावत्–अपरिताप (शान्ति) माटे वर्ते छे, वळी ते जीवो जागता होय तो पोताने, परने अने बन्नेने घणी धार्मिक संयोजना (क्रिया) साथे जोडनारा थाय छे, तथा ए जीवो जागता होय तो धर्मजागरिकावडे पोताने जाग्रत राखे छे, माटे ए जीवोनुं जागेलापणुं सारुं छे, ते हेतुथी हे जयंती! एम कहेवाय छे के, केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं जागेलापणुं सारुं छे'.

बलियत्तं भंते! साहू दुब्बलियत्तं साहू ?, जयंती! अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जाव साहू?, जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू, एए णं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियस्स वत्तव्वया भाणियव्वा, बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू, से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ तं चेव जाव साहू ॥

[प्र०] हे भगवन्! सबलपणुं सारुं के दुर्बलपणुं सारुं? [उ०] हे जयंती! केटलाक जीवोनुं सबलपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन्! तमे ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, 'केटलाक जीवोनुं सबलपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं'? [उ०] हे जयंती! जे आ जीवो अधार्मिक छे, अने यावत् अधर्मवडे आजीविका करता विहरे छे, ए जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं, जो ए जीवो दुबला होय तो कोइ जीवना दुःख माटे थता नथी-इत्यादि 'सूतेला'नी पेठे दुर्बलपणानी वक्तव्यता कहेवी, अने 'जागता'नी पेठे सबलपणानी वक्तव्यता कहेवी; यावत्-धार्मिक क्रिया-संयोजनावडे जोडनारा थाय छे, माटे ए जीवोनुं बलवानपणुं सारुं छे, ते हेतुथी हे जयंती! एम कहेवाय छे के-इत्यादि केटलाक जीवोनुं बलवानपणुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं छे.

दक्खत्तं भंते! साहू आलसियत्तं साहू ?, जयंती! अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ तं चेव जाव साहू ?, जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाव विहरंति एएसि णं जीवाणं अलसियत्तं साहू, एए णं जीवा अलसा समाणा नो बहूणं जहा सुत्ता तहा अलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा जाव संजोएत्तारो भवंति, एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं जाव उवज्झाय० थेर० तवस्सि० गिलाणवेया० सेहवे० कुलवेया० गणवेया० संघवेयाव० साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव साहू ॥ सोइंदियवसट्टे णं भंते! जीवे किं बंधइ?, एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ। एवं चक्खिंदियवसट्टेऽवि, एवं जाव फासिंदियवसट्टे जाव अणुपरियट्टइ। तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेसं जहा देवाणंदाए तहेव पव्वइया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा। सेवं भंते! २ त्ति ॥ (सूत्रं ४४३) ॥ १२-२ ॥

[प्र०] हे भगवन्! दक्षपणुं-उद्यमीपणुं सारुं के आलसुपणुं सारुं? [उ०] हे जयंती! केटलाक जीवोनुं दक्षपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं आलसुपणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो-इत्यादि तेज प्रमाणे कहेवुं. [उ०] हे जयंती! जे आ जीवो अधार्मिक (अधर्मानुसारी) यावद् विहरे छे, ए जीवोनुं आळसुपणुं सारुं छे. ए जीवो जो आळसु होय तो घणा जीवोना दुःख माटे थता नथी-इत्यादि बधुं 'सुतेला'नी पेठे कहेवुं, तथा 'जागेला'नी पेठे दक्ष-उद्यमी जाणवा, यावत्-[धार्मिक प्रवृत्तिओ साथे] जोडनारा थाय छे. वळी ए जीवो दक्ष होय तो आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, शैक्ष (नव दीक्षित)' कुल, गण, संघ, अने साधर्मिकना घणा वैयावच्च-सेवा-साथे आत्माने जोडनारा थाय छे. तेथी ए जीवोनुं दक्षपणुं सारुं छे. माटे हे जयंती!

For Private and Personal Use Only

ते हेतुथी एम कहुं छुं-इत्यादि तेज प्रमाणे कहेवुं, यावत् केटलाक जीवोनुं दक्षपणुं सारुं छे. [प्र०] हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव शुं बांधे ? [उ०] हे जयंती ! जेम क्रोधने वश थयेला जीव संबन्धे कह्युं तेम अहीं पण जाणवुं, यावत् ते संसारमां भमे छे. ए प्रमाणे चक्षुइन्द्रियने वश थयेला अने यावत् स्पर्शेन्द्रियवश थयेला जीव संबन्धे पण जाणवुं, यावत् ते संसारमां भमे छे. त्यारबाद ते जयंती श्रमणोपासिका श्रमण भगवंत महावीर पासेथी ए वात सांभळी, हृदयमां अवधारी, हर्षवाळी अने संतुष्ट थई—इत्यादि (बाकी) बधुं देवानंदानी पेठे जाणवुं. यावत् तेणे प्रव्रज्या ग्रहण करी अने सर्व दुःखथी मुक्त थई. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. ॥ ४४३ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणी श्रीमद्‌ुत भगवतीसूत्रना १२ मा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ३.

रायगिहे जाव एवं वयासी-कइ णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ?, गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-पढमा दोच्चा जाव सत्तमा। पढमा णं भंते ! पुढवी किंनामा किंगोत्ता पण्णत्ता ?, गोयमा ! घम्मा नामेणं रयणप्पभा गोत्तेणं एवं जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पाबहुगंति। सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्रं ४४४) ॥

[प्र०] राजगृह नगरमां (भगवान् गौतमे) यावत् आ प्रमाणे पूछ्युं-हे भगवन् ! केटली पृथिवीओ कही छे ? [उ०] हे

गौतम ! सात पृथिवीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-प्रथमा, द्वितीया यावत्-सप्तमी. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम पृथिवी कया नामवाळी अने कया गोत्रवाळी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रथम पृथिवीनुं नाम 'घम्मा' छे अने गोत्र रत्नप्रभा छे-ए प्रमाणे 'जीवाभिगम' सूत्रमां प्रथम नैरयिक उद्देशक कह्यो छे ते बधो यावद्-अल्पबहुत्व सुधी अहिं कहेवो. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. ॥ ४४४ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना १२ मा शतकमां त्रीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

उद्देशक ४.

रायगिहे जाव एवं वयासी-दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति एगयओ साहणित्ता किं भवति ?, गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ । तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति २ किं भवति ?, गोयमा ! तिपएसिए खंधे भवति, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति । चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति जाव पुच्छा, गोयमा ! चउपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि चउहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ।

[प्र०] राजगृह नगरमां यावत्-आ प्रमाणे पूछ्युं-हे भगवन् ! बे परमाणुओ एकरूपे एकठा थाय, अने एकरूपे एकठा थइने पछी तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो द्विप्रदेशिक स्कंध थाय, अने जो तेनो भेद थाय तो तेना बे विभाग थाय-एक तरफ एक परमाणुपुद्गल रहे, अने बीजी तरफ एक (बीजो) परमाणुपुद्गल रहे. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण परमाणुपुद्गलो एकरूपे एकठा थाय ? अने एकठा थईने तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेनो भेद-वियोग थाय तो तेना बे के त्रण विभाग थाय, जो बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, अने बीजी तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. तथा जो तेना त्रण विभाग थाय तो त्रण परमाणुपुद्गल रहे. [प्र०] हे भगवन् ! चार परमाणुपुद्गलो एकरूपे एकठा थाय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय, अने जो ते स्कंधनो भेद थाय तो तेना बे, त्रण अने चार भाग थाय. जो बे भाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध रहे. अथवा बे द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. जो त्रण भाग थाय तो एक तरफ बे छूटा परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. जो चार भाग थाय तो जूदा चार परमाणुपुद्गल रहे.

पंच भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा! पंचपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि चउहावि पंचहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे भवति एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवति, पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति । छब्भंते !

परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! छप्पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव छव्विहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा दो तिपएसिया खंधा भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा तिन्नि दुपएसिया खंधा भवन्ति चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवति, छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति।

[प्र०] हे भगवन् ! पांच परमाणुओ एकरूपे एकठा थाय ? [अने पछी शुं थाय ?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. जो ते भेदाय तो तेना बे, त्रण, चार अने पांच विभाग थाय. जो तेना बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणु पुद्गल अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेना त्रण विभाग थाय तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ जुदा जुदा बे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. जो तेना चार विभाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेना पांच विभाग थाय तो जुदा पांच परमाणुओ थाय [प्र०] हे भगवन् ! छ परमाणुपुद्गलो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! षट्प्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेनो भेद थाय तो तेना बे, त्रण, चार पांच के छ विभाग थाय. जो तेना बे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय. जो तेना त्रण भाग थाय तो एक तरफ जुदा जुदा बे परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. जो तेना चार भाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ द्विप्रदेशिक बे स्कंधो थाय. जो तेना पांच भाग थाय तो एक तरफ चार परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेना छ भाग थाय तो जुदा जुदा छ परमाणुपुद्गलो थाय.

सत्त भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा! सत्तपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्तहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिप्पएसिए एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति एगयओ तिपएसिए खंधे भवति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए

For Private and Personal Use Only

खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति ।

[प्र०] हे भगवन्! सात परमाणुपुद्गलो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सप्तप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेना विभाग थाय तो बे, त्रण, यावत् सात विभाग थाय छे. जो बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेना त्रण भाग थाय तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक अने चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेना चार भाग थाय तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. जो तेना पांच विभाग थाय तो जुदा चार परमणुपुद्गलो, अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. जो तेना छ भाग थाय तो एक तरफ जुदा पांच

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. तथा जो तेना सात भाग थाय तो जुदा जुदा सात परमाणुपुद्गलो थाय.

अट्ठ भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे भवइ जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु० एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओदुपएसिए खंधे एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिपएसिए० एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओदो परमाणु० एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ रमाणु० एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दोन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ तिपएसिए खंधे भवति अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु एगयओ दुपएसिए एगयओ तिपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति, छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणु० एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु० एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवइ, सत्तहा कज्जमाणे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ अहहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति ॥

[प्र०] हे भगवन्! आठ परमाणुपुद्गलो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! आठ प्रदेशनो एक स्कंध थाय. (जो तेना विभाग थाय तो बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात के आठ विभाग थाय.) यावत् तेना बे विभाग थया तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ सात प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ बे प्रदेशोनो एक स्कंध अने एक तरफ छ प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ त्रण प्रदेशनो एक स्कंध अने एक तरफ पांच प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. अथवा चार चार प्रदेशना बे स्कंध थाय छे. जो तेना त्रण विभाग थाय तो एक तरफ जुदा बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ छ प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. जो तेना चार विभग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ पांच प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ जुदा बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक चार प्रदेशनो स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक त्रिप्रदेशिक एक स्कंध थाय छे अथवा चार द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. तेना पांच विभाग थाय तो एक तरफ जुदा चार परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. जो तेना छ विभाग थाय तो एक तरफ जुदा पांच परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. छे. जो तेना सात विभाग थाय तो तो एक तरफ जुदा छ परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय छे. जो तेना आठ विभाग थाय तो जुदाजुदा आठ परमाणुपुद्गलो थाय छे.

गोयमा ! जाव नवविहा कज्जंति. दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु० एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवति, एवं एक्केक्कं संचारेंतेहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति. तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दुपएसिए एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया

For Private and Personal Use Only

खंधा एगयओ तिपएसिए खंधे भवति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु० एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ दुपएसिए० एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति, छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु० एगयओ दुप्पएसिए० एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति, सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणु० एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ पंच परमाणु० एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणु० एगयओ दुपएसिए खंधे भवति, नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवंति ॥

[प्र०] हे भगवन् ! नव परमाणुपुद्गलो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नवप्रदेशनो एक स्कंध थाय छे; अने जो तेना विभाग करवामां आवे तो (बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ के) यावत् नव विभाग थाय छे. तेना जो बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक अष्टप्रदेशिक स्कंध थाय छे. ए प्रमाणे एक एकनो संचार करवो; यावत्-अथवा एक तरफ एक चार प्रदेशनो स्कंध अने एक तरफ पांचप्रदेशनो स्कंध थाय छे. जो तेना त्रण भाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ एक सप्तप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, अने एक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरफ छप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणु, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ बे चतुष्प्रदेशिक स्कंधो थाय छे. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा त्रण त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. तेना चार भाग थाय तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ छप्रदेशनो एक स्कंधथाय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो एक तरफ एक द्विप्रदेशिक अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ चारप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणु पुद्गल, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो, अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. अथवा एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध थाय छे. पांच भाग थाय तो एक तरफ जुदा चार परमाणुओ अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ चार द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. जो तेना छ भाग करवामां आवे तो एक तरफ पांच परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गलो, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो होय छे. जो तेना सात

For Private and Personal Use Only

भाग करवामां आवे तो एक तरफ छ परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ पांच परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो होय छे. आठ भाग करवामां आवे तो एक तरफ सात परमाणुओ अने एक तरफ द्विप्रदेशिक एक स्कंध, होय छे जो तेना नव भग करवामां आवे तो जुदा नव परमाणुओ होय छे.

दस भंते परमाणुपोग्गला ! जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवइ एवं एक्केक्कं संचारेयव्वंति जाव अहवा दो पंच पएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु० एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दुपएसिए० एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ चउप्पएसिए एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे० एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा० एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ. चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ दुपएसि० एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दुपएसिए एगयओ तिपएसिए एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ तिन्नि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुपएसिया खंधा एगयओ चउपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ दुपएसिए खंधे० एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ दुपएसिए खंधे० एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ तिन्नि दुपएसिया० एगयओ तिपएसिए खंधे भवति अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवंति, छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणु० एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु० एगयओ दुपएसिए० एगयओ चउपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु० एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु एगयओ दो दुपएसिया खंधा० एगयओ तिपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति, सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणु० एगयओ चउपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ पंच परमाणु० एगयओ दुपएसिए एगयओ तिपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु० एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति, अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणु० एगयओ तिपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ छ परमाणु० एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणु० एगयओ दुपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ छ परमाणु० एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, दसहा कज्जमाणे

For Private and Personal Use Only

दस परमाणुपोग्गला भवंति ।

[प्र०] हे भगवान् ! दस परमाणुओ संबन्धे प्रश्न. [उ०] (तेनो एक दसप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अने जो तेना विभाग करवामां आवे तो बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव अने दश विभाग थाय छे.) यावत् बे भाग करवामां आवे तो एक तरफ एक परमाणु अने एक तरफ नव प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ अष्टप्रदेशिक एक स्कंध होय छे. एप्रमाणे एक एकनो संचार करवो; यावत्–अथवा बे पंचप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. जो तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक आठ प्रदेशनो स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ सप्तप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक छ प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे चतुष्प्रदेशिक स्कंधो होय छे. अथवा एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. तेना चार विभाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ सप्तप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कध अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक पंचप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे चतुष्प्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक

स्कंध, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध, अने एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ त्रण त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ त्रण त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना पांच विभाग करवामां आवे तो एक तरफ चार परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक छप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुओ, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा पांच द्विप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना छ विभाग करवामां आवे तो एक तरफ जूदा पांच परमाणुओ अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ चारपरमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध तथा एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ चार द्विप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना सात विभाग करवामां आवे तो एक तरफ छ परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक चतुःप्रदेशिक स्कन्ध होय छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथवा एक तरफ पांच परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध तथा एक त्रिःप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ चार परमाणुओ, अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना आठ विभाग करवामां आवे तो एक तरफ सात (जूदा) परमाणुओ अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ छ परमाणुओ, अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना नव विभाग करवामां आवे तो एक तरफ आठ परमाणु अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अने जो तेना दश विभाग करवामां आवे तो जुदा दश परमाणुओ थाय छे.

संखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति एगयओ साहणित्ता किं भवति ?, गोयमा! संखेज्जपएसिए खंधे भवति, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि संखेज्जहावि कज्जंति, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति एवं अहवा एगयओ तिपएसिए एगयओ सं० खंधे भवति एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति. तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु० एगयओ संखेज्जपएसिएखंधे भवति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दुपएसिए खंधे० एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ तिपएसिए खंधे० एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दसपएसिए खंधे० एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दुपएसिए० एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति एवं

For Private and Personal Use Only

जाव अहवा एगयओ दसपएसिए० एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु० एगयओ संखेज्जपएसिए भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ दुपएसिए० एगयओ संखेज्जपएसिए भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ तिपएसिए० एगयओ संखेज्जपएसिए भवति एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ दसपएसिए एगयओ संखेज्जपएसिए भवति अहवा एगयओ दो परमाणु० एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दुपएसिए एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति जाव अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दसपएसिए एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दुपएसिए एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया भवंति जाव अहवा एगयओ दसपएसिए एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया भवंति अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया भवंति एवं एएणं कमेणं पंचगसंजोगोवि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो, दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणु० एगयओ संखेज्जपएसिए भवति अहवा एगयओ अट्ठ परमाणु० एगयओ दुपएसिए एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति, एएणं कमेणं एक्केक्को पू० जाव अहवा एगयओ दसपएसिए एगयओ नव संखेज्जपएसिया भवंति अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति।

[प्र०] हे भगवन् ! संख्याता परमाणुओ एक साथे मळे अने एक साथे मळीने तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो

संख्याता प्रदेशनो स्कन्ध थाय. जो तेनो भेद–विभाग थाय तो तेना बे, यावत् दस के संख्याता विभाग थाय. जो तेना बे भाग करवामां आवे तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध थाय छे अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध थाय छे. ए प्रमाणे यावत् एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुओ अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणु, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ए प्रमाणे यावत्–अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ दश प्रदेशिक स्कन्ध अने एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, अने एक तरफ बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. ए प्रमाणे यावत्-अथवा एक तरफ एक दशप्रदेशिक स्कन्ध अने बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा त्रण संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना चार भाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुओ, एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अने एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ बे परमाणुओ, एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुओ अने एक तरफ बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक दशप्रदेशिक स्कन्ध अने बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक परमाणुपुद्गल अने त्रण संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने त्रण संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ एक दश प्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ त्रण संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा चार संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. ए प्रमाणे ए क्रमथी पंचसंयोग पण कहेवो; यावत् नव संयोग सुधी कहेवुं. तेना दश विभाग करवामां आवे तो एक तरफ नव परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ आठ परमाणु पुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ आठ परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ए क्रमवडे एक एकनी संख्या वधारवी, यावत्-अथवा एक दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ नव संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा दश संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना संख्यात भागो करवामां आवे तो संख्याता परमाणुपुद्गलो, थाय छे.

असंखेज्जा भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहंणंति एगयओ साहणिज्जत्ता किं भवति ?, गोयमा ! असंखेज्जपएसिए खंधे भवति, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि संखेज्जहावि असंखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे

For Private and Personal Use Only

एगयओ परमाणु० एगयओ असंखेज्जपएसिए भवति जाव अहवा एगयओ दसपएसिए एगयओ असंखिज्जपए-
सिए भवति अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति अहवा दो असंखेज्जपए-
सिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु० एगयओ असंखेज्जपएसिए भवति अहवा एगयओ
परमाणु० एगयओ दुपएसिए एगयओ असंखेज्जपएसिए भवति जाव अहवा एगयओ परमाणु० एगयओ दसप-
एसिए एगयओ असंखेज्जपएसिए भवति अहवा एगे परमाणु० एगे संखेज्जपएसिए एगे असंखेज्जपएसिए भवति
अहवा एगे परमाणु० यएगओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगे दुपएसिए एगयओ दो असंखेज्जप-
एसिया भवंति एवं जाव अहवा एगे संखेज्जपएसिए भवति एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा
तिन्नि असंखिज्जपएसिया भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु० एग० असंखेज्जपएसिए भवति एवं
चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो एए जहेव संखेज्जपएसियस्स नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव
अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति, संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयओ
असंखेज्जपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति
एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति अहवा एगयओ
संखिज्जा संखिज्जपएसिया खंधा एगयओ असंखिज्जपएएसि खंधे भवति अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा
भवंति, असंखिज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ।

[प्र०] हे भगवन्! असंख्याता परमाणुपुद्गलो एकठा मळे, अने पछी तेनुं शुं थाय? [उ०] हे गौतम! तेनो असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध थाय. जो तेना विभाग करीए तो बे, यावत् दस, संख्याता के असंख्याता विभाग थाय. जो बे विभाग करवामां आवे तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कंध होय छे. यावद्-अथवा एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. यावद्-अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ ए परमाणु, अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा त्रण असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्धो होय छे. जो तेना चार भाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्ध होय छे. ए प्रमाणे चतुष्कसंयोग, यावद् दशकसंयोग जाणवो. अने ए सर्व संख्यातप्रदेशिकनी पेठे जाणवुं, परन्तु एक 'असंख्यात' शब्द अधिक कहेवो. यावद्-अथवा दश असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो संख्याता विभाग करवामां आवे तो एक तरफ संख्याता परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्याता द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ असंख्यात-

प्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ संख्याता दशप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्याता संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक असंख्यप्रदेशात्मक स्कन्ध होय छे. अथवा संख्याता असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना असंख्य विभाग करवामां आवे तो असंख्य परमाणुपुद्गलो थाय छे.

अणंता णं भंते! परमाणुपोग्गला जाव किं भवंति?, गोयमा! अणंतपएसिए खंधे भवति, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव दसहावि संखिज्जहा असंखिज्जहा अणंतहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपएसिए खंधे जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु० एगयओ अणंतपएसिए भवति अहवा एग० परमाणु० एग० दुपएसिए एग० अणंतपएसिए भवति जाव अहवा एग० परमाणु० एग० असंखेज्जपएसिए एग० अणंतपएसिए भवति अहवा एग० परमाणु० एग० दो अणंतपएसिया भवंति अहवा एग० दुपएसिए एग० दो अणंतपएसिया भवंति एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति अहवा एग० संखेज्जपदे० एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति अहवा एग० असंखेज्जपएसिए खंधे एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति अहवा तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एग० तिन्नि परमाणु० एगयओ अणंतपएसिए भवति एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जगसंजोगो, एते सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताणवि भाणियव्वा नवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखिज्जपएसिया खंधा एग० अणंपएसिया भवंति अहवा

एग० संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा एग० अणंतपएसिए खंधे भवति अहवा संखिज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणु० एग० अणंतपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ असंखिज्जा दुपएसिया खंधा एग० अणंतपएसिए भवति जाव अहवा एग० असंखेज्जा संखिज्जपएसिया एग० अणंतपएसिए भवंति अहवा एग० असंखिज्जा असंखिज्जपएसिया खंधा एग० अणंतपएसिए भवति अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति ॥ (सूत्रं ४४९) ॥

[प्र०] हे भगवन् ! अनन्त परमाणुपुद्गलो एकठा थाय अने एकठा थया पछी तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो अनन्तप्रदेशात्मक स्कन्ध थाय. जो तेना विभाग थाय तो बे, त्रण, यावत् दश, संख्यात, असंख्यात अने अनन्त विभाग थाय. बे विभाग करवामां आवे तो एक तरफ परमाणुपुद्गल अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. यावद्-अथवा बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एकतरफ एक परमाणु, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. यावत्-अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणु, अने एक तरफ बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. ए प्रमाणे यावत्-अथवा एक तरफ एक दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे अनन्त प्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक तरफ एक असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना चार भाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ए प्रमाणे चतुष्कसंयोग, यावद्–संख्यातसंयोग कहेवो. ए बधा संयोगो असंख्यातनी पेठे अनन्तने पण कहेवा; परन्तु एक 'अनन्त' शब्द अधिक कहेवो; यावद्–अथवा एक तरफ संख्याता संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्याता असंख्येयप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा संख्याता अनंतप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना असंख्याता विभाग करीए तो एक तरफ असंख्यात परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ असंख्यात द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक अनन्त प्रदेशिक स्कंध होय छे, यावद्–अथवा एक तरफ असंख्याता संख्यात-प्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ असंख्याता असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा असंख्याता अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना अनन्त विभाग करवामां आवे तो अनन्त परमाणुपुद्गलो थाय छे. ॥ ४४५ ॥

एएसि णं भंते! परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेदाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया?, हंता गोयमा! एएसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा जाव मक्खाया॥ कइविहे णं भंते! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते?, गोयमा! सत्तविहा पो० परि० पण्णत्ता, तंजहा––ओरालियपो० परि० वेउव्विय० तेयापो० कम्मापो० मणपो० परियट्टे वइपोग्गलपरियट्टे आणापाणुपोग्गलपरिअट्टे। नेरइयाणं भंते! कतिविहे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?, गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तंजहा—ओरालियपो० वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे एवं जाव वेमाणियाणं । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया ?, अणंता, केवइया पुरेक्खडा ?, कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्सत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवतिया ओरालियपोग्गला० ?, एवं चेव, एवं जाव वेमाणियस्स। एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीया ?, अणंता, एवं जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि भाणियव्वा, एवं जाव वेमाणियस्स आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, एते एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति । नेरइयाणं भंते ! केवतिया ओ० पोग्गलपरियट्टा अतीता ?, गोयमा ! अनंता, केवइया पुरेक्खडा ?, अणंता, एवं जाव वेमाणियाणं, एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं, एवं एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसतिदंडगा ॥

हे भगवन् ! ए परमाणुपुद्गलोना संयोग अने भेदना संबंधथी अनन्तानत पुद्गलपरिवर्तो जाणवा योग्य छे माटे कह्या छे ? [उ०] हा, गौतम ! संयोग अने भेदना योगथी ए परमाणुपुद्गलोना अनंतानंत पुद्गलपरिवर्तो जाणवा योग्य छे माटे कह्या छे. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलपरिवर्तो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गलपरिवर्तो सात प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ औदारिकपुद्गलपरिवर्त, २ वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, ३ तैजसपुद्गलपरिवर्त, ४ कार्मणपुद्गलपरिवर्त, ५ मनपुद्गलपरिवर्त, ६ वचनपुद्गलपरिवर्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अने ७ आनप्राणपुद्गलपरावर्त. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिकोने केटला प्रकारना पुद्गलपरिवर्तो कह्या छे? [उ०] हे गौतम! तेओने सात पुद्गलपरिवर्तो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ औदारिकपुद्गलपरिवर्त, २ वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, यावद् ७ आनप्राणपुद्गलपरिवर्त. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिको सुधी जाणवुं [प्र०] हे भगवन्! एक एक नैरयिकने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत-थया छे? [उ०] हे गौतम! अनन्त थया छे. [प्र०] केटला थनारा छे? [उ०] कोइने थवाना होय छे अने कोइने नथी; जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण थवाना छे; अने उत्कृष्टथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे [प्र०] हे भगवन्! एक एक असुरकुमारने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे? [उ०] ए प्रमाणे-उपर कह्या प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे यावद् वैमानिक सुधी जाणवुं [प्र०] हे भगवन्! एक एक नैरयिकने केटला वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो थया छे? [उ०] अनन्ता थया छे. ए प्रमाणे जेम औदारिकपुद्गलपरिवर्त संबन्धे कह्युं तेम वैक्रियपुद्गलपरावर्त संबन्धे पण जाणवुं यावद् वैमानिक सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त संबन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे एक एकने आश्रयी सात दंडको थाय छे. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिकोने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे? [उ०] हे गौतम! अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थवाना छे? [उ०] अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. ए रीते वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो, यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो संबन्धे पण यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं एम (सात पुद्गलपरिवर्त संबन्धे) बहुवचनने आश्रयी सात दंडको (नैरयिकादि) चोवीश दंडके कहेवा.

एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेर० केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता?, नत्थि एक्कोवि,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवतिया पुरेक्खडा ?, नत्थि एक्कोवि, एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा० एवं चेव एवं जाव थणियकुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते। एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविक्काइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?, अणंता, केवतिया पुरेक्खडा ?, कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्सत्थि तस्स जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा एवं जाव मणुस्सत्ते, वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते। एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवतिया अतीया ओरालियपोग्गलपरियट्टा एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्सवि भाणियव्वा जाव वेमाणि०, एवं जाव थणियकुमारस्स, एवं पुढविकाइस्सवि, एवं जाव वेमाणियस्स, सव्वेसिं एक्को गमो। एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेर० केव० वेउ० पोग्गलपरियट्टा अतीया ?, अणंता, केवतिया पुरेक्खडा ?, एकोत्तरिया जाव अणंता, एवं जाव थणियकुमारत्ते, पुढवीकाइयत्ते पुच्छा, नत्थि एक्कोवि, केवतिया पुरेक्खडा ?, नत्थि एक्कोवि, एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरिओ जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं, जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। तेयापोग्गलपरियट्टा कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एक्कोत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगोत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि, वइपोग्गलपरियट्टा एवं चेव, नवरं एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा। आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एकोत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते।

[प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत–थया छे ? [उ०] तेओने

For Private and Personal Use Only

एक पण औदारिकपुद्गलपरिवर्त थयो नथी. [प्र०] केटला औदारिक पुद्गलपरिवर्तो थवाना छे ? [उ०] तेओने एक पण थवानो नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] उपर कह्या प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे जेम असुरकुमारपणामां कह्युं तेम यावत् स्तनितकुमारपणामां पण जाणवुं [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने पृथिवीकायपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी, जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण थवाना छे, अने उत्कृष्टथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्यपणामां पण जाणवुं. तथा वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां जेम असुर-कुमारपणामां कह्युं तेम जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत-थया छे ? [उ०] जेम नैरयिकनी वक्तव्यता कही तेम असुरकुमारनी पण वक्तव्यता कहेवी. ए प्रमणे यावद्-वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमार सुधी कहेवुं ए प्रमाणे पृथिवीथी आरंभी यावद् वैमानिकसुधी बधाओने एक गम-पाठ कहेवो. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] हे गौतम ! एकथी मांडीने यावद् अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं. (प्र०) पृथिवीकायिकपणामां प्रश्न.-एक एक नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो केटला थया छे ? (उ०) एक पण नथी. (प्र०) केटला थवाना छे ? (उ०) एक पण नथी. ए प्रमाणे जे जीवोने वैक्रियशरीर छे तेओने एकादि पुद्गलपरावर्तो जाणवा, अने जेओने वैक्रियशरीर नथी तेओने पृथिवीकायिकपणामां कह्युं छे तेम कहेवुं, यावद् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. तैजसपुद्गल-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिवर्तो अने कार्मणपुद्गलपरिवर्तो सर्वत्र एकथी मांडीने अनन्तसुधी कहेवा. मनःपुद्गलपरिवर्तो बधा पंचेन्द्रियोमां एकथी आरंभी (अनन्त सुधी) कहेवा. ते (मनःपुद्गलपरिवर्तो विकलेन्द्रियोमां नथी. वचनपुद्गलपरिवर्तो पण ए प्रमाणे जाणवा; परन्तु विशेष ए छे के ते एकेन्द्रिय जीवोमां नथी. श्वासोच्छ्वासपुद्गलपरिवर्तो बधा जीवोमां एकथी मांडीने वधारे जाणवा; यावद्-वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं.

नेरइयाणं भंते! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया?, नत्थि एक्कोवि, केवइया पुरेक्खडा?, नत्थि एक्कोवि, एवं जाव थणियकुमारत्ते, पुढविकाइयत्ते पुच्छा, गोयमा! अणंता, केवइया पुरेक्खडा?, अणंता, एवं जाव मणुस्सत्ते, वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते एवं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते, एवं सत्तवि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा, जत्थ अत्थि तत्थ अतीयावि पुरेक्खडावि अणंता भाणियव्वा, जत्थ नत्थि तत्थ दोवि नत्थि भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीया?, अणंता, केवतिया पुरेक्खडा?, अणंता (सूत्रं ६४६)॥

(प्र०) हे भगवन्! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत थया छे? (उ०) एक पण व्यतीत थयेल नथी. (प्र०) केटला थवाना छे? (उ०) एक पण थवानो नथी. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं. (प्र०) पृथिवीकायिकपणामां प्रश्न. (नैरयिकोने पृथिवीकायिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत थया छे?) (उ०) अनन्ता व्यतीत थया छे. (प्र०) केटला थवाना छे? (उ०) अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत्-मनुष्यपणामां जाणवुं. तथा जेम नैरयिक-

For Private and Personal Use Only

पणामां कह्यु छे तेम वानव्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए रीते साते पुद्गलपरिवर्तों कहेवा; ज्यां होय छे त्यां अतीत-थयेला अने पुरस्कृत-भावी पण अनन्ता कहेवा, अने 'ज्यां नथी त्यां अतीत अने भावी बन्ने पण नथी-' एम कहेवुं. यावद्-[प्र०] वैमानिकोने वैमानिकपणामां केटला आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो थयेला छे? [उ०] अनन्ता थयेला छे. [प्र०] केटला थवाना छे? [उ०] अनन्ता थवाना छे. ॥ ४४६ ॥

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-ओरालियपोग्गलपरियट्टा ओ०?, गोयमा! जण्णं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरपयोगाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमन्नागयाइं परियाइयाइं परिणामियाइं निज्जिन्नाइं निसिरियाइं निसिट्ठाइं भवंति से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ ओरालियपोग्गलपरियट्टे ओरा० १, एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि, नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरपयोगाइं सेसं तं चेव सव्वं एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं आणापाणुपयोगाइं सव्वदव्वाइं आणापाणत्ताए सेसं तं चेव ॥ ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ?, गोयमा! अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ, एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टेवि ॥ एयस्स णं भंते! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स वेउव्वियपोग्गला जाव आणुपाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा?, गोयमा! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ओरालियपोग्गल-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परियट्टे अणंतगुणे आणापाणुपोग्गल० अणंतगुणे मणपोग्गल० अणंतगुणे वइपो० अणंतगुणे वेउव्वियपो० परियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे (सूत्रं ४४७)॥

[प्र०] हे भगवन् ! 'औदारिकपुद्गलपरिवर्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त'–एम शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! औदारिकशरीरमां वर्तता जीवे औदारिकशरीरने योग्य द्रव्यो औदारिकशरीरपणे ग्रहण करेलां छे, स्पर्शेलां छे, करेलां छे, स्थिर करेलां छे, स्थापन करेलां छे, अभिनिविष्ट–सर्वथा लागेलां छे, सर्वथा प्राप्त थयेलां छे, सर्व अवयववडे ग्रहण करायेलां छे, परिणाम पामेलां छे, निर्जरायेलां छे, जीवप्रदेशथी नीकळेलां छे, अने जीवप्रदेशथी जूदा थयेलां छे, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम 'औदारिकपुद्गलपरिवर्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त' कहेवाय छे. ए प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो. परन्तु विशेष ए छे के, वैक्रियशरीरमां वर्तता जीवे वैक्रियशरीरने योग्य पुद्गलो कहेवां, बाकी बधुं तेज प्रमाणे कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त सुधी जाणवुं; विशेष ए छे के, त्यां 'आनप्राणयोग्य सर्व द्रव्यो आनप्राणपणे ग्रह्यां छे' इत्यादि कहेवुं, बाकी बधुं पूर्वनी पेठेज जाणवुं [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकपुद्गलपरिवर्त केटला काळे नीपजे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीवडे–एटला काळे–औदारिकपुद्गलपरिवर्त नीपजे. ए प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो. ए प्रमाणे यावत् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! ए औदारिकपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकाळमां, वैक्रियपुद्गलपरिवर्त निष्पत्तिकाळमां, यावद्–आनप्राणपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकाळमां कयो काळ कोनाथी (अल्प), यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडो कार्मणपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ छे, तेनाथी अनन्तगुण तैजसपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ छे, तेनाथी अनन्तगुण औदारिकपुद्गलपरिवर्तनो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निष्पत्तिकाळ छे, तेनाथी आनप्राणपुद्गलनो निष्पत्तिकाळ अनन्तगुण छे, तेनाथी मनःपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ अनन्तगुण छे, तेनाथी वचनपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ अनन्तगुण छे, अने तेनाथी वैक्रियपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ अनन्तगुण छे. ॥४४७॥

एएसि णं भंते! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा?, गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्वियपो० वइपो० परि० अणंतगुणा मणपोग्गलप० अणंत० आणापाणुपोग्गल० अनंतगुणा ओरालियपो० अणंतगुणा तेयापो० अणंत० कम्मपोग्गल० अणंतगुणा। सेवं भंते! सेवं भंतेत्ति भगवं जाव विहरइ (सूत्रं ४४८) ॥ १२-४ ॥

[प्र०] हे भगवन्! ए औदारिकपुद्गलपरिवर्त, यावद्-आनप्राणपुद्गलपरिवर्त-एओमां परस्पर क्या पुद्गलपरिवर्त कोनाथी यावद्-विशेषाधिक छे? [उ०] हे गौतम! सौथी थोडा वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुणा वचनपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुणा मनःपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुणा आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुण औदारिकपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुणा तैजसपुद्गलपरिवर्तो छे, अने तेनाथी अनन्तगुण कार्मणपुद्गलपरिवर्तो छे. 'हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे'-एम कही यावद्-भगवान् गौतम विहरे छे. ॥ ४४८ ॥

भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना १२ मां शतकमां चोथा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ धर्मदासगणीप्रणीता ॥

श्रीउपदेशमाला

टीका–सिद्धर्षिगणि

पत्राकारे, लेजर कागळ

किंमत रु. ३–०–०

लखो—पंडित हीरालाल हंसराज जामनगर.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति श्रीमद्भगवतीसूत्रे चतुर्थो भागः समाप्तः ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only